म्हारो लक्ष्य - राष्ट्र री प्रगति

स्थापित 1935

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• सितम्बर २०२४ • वर्ष ७५ • अंक ०९

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

स्वर्गीय नंदकिशोर जालान

जन्म - शतवार्षिकी समारोह विशेषांक

२१ सितम्बर २०२४, हिन्दुस्तान क्लब, कोलकाता

CENTURYPLY®

CENTURYPLY®
CENTURYLAMINATES®
CENTURYVENEERS®
CENTURYDOORS®
CENTURYEXTERIA®
Decorative Exterior Laminates
CENTURYPVC®
CENTURYPARTICLEBOARD®
The Eco-friendly and Economical Board
CENTURYPROWUD®
MDF-The wood of the future
zykron
FIBRE CEMENT BOARDS & PLANKS
SAINIK 710
WATERPROOF PLY
SAINIK LAMINATES™
BOLD & BEAUTIFUL

CENTURY PLYBOARDS (INDIA) LTD.
Century House, P-15/1, Taratala Road, Kolkata - 700 088
For any queries, SMS 'CPIL' to 56070 or call us on 1800 5722 122

समाज विकास

◆ सितम्बर २०२४ ◆ वर्ष ७५ ◆ अंक ९
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

स्वर्गीय नंद किशोर जालान का जन्म-शतवार्षिकी समारोह

संस्मरण

६८वें स्थापना दिवस २५ दिसंबर २००२ के समाज विकास के अंक में श्री नन्दकिशोर जालान अभिनंदन समारोह पर प्रकाशित संस्मरण

भूली-बिसरी यादें

प्रांतीय समाचार

कन्हैयालाल सेठिया की १५०वीं जयंती

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं संपर्क कार्यालय :
४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी,कोलकाता - ७०००१७

◆ **फोन : ०३३-४००४ ४०८९**
◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इंडिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिए **भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इंडिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ **प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा**
◆ **संपादक : शिव कुमार लोहिया**

प्रकाशित रचनाओं से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

पं. ताऊ शेखावाटी
सवाई माधोपुर, राजस्थान

–श्रद्धेय–

स्व० नन्दकिशोर जालाण, कोलकाता

री स्मृति माँय सादर समर्पित मनोभाव

'नन्दूबाबू'-इति ख्यातं, 'जालाण'-कुल-भूषणम्।
शेखावाटी-धरापुत्रं, वैश्य-वंश-सुसंस्कृतम्।।
अभामासेति संस्थावा, पूर्वाध्यक्षं गुणी-वरम्।
तमामि त्वां नरश्रेष्ठं, मालती-चित-राजितम्।।

मित्र मण्डली में 'नन्दबाबू' के नाम से चर्चित रहे शेखावाटी धरा के स्वनामधव्य वैश्य समाज की श्रेष्ठ शाखा जालाण-घराने के लाडले पुत्र, सुसंस्कृत व्यक्तित्व के धनी, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कलकत्ता के सम्माननीय पूर्व अध्यक्ष, गुणवान, वरिष्ठ, श्रेष्ठपुरुष, आदरणीयाँ मालतीजी के प्राणधन, स्व. नन्दलालजी जालाण को मैं नमन करता हूँ।

(श्रद्धावनत– सकल सम्मेलन परिवार)

जन्म : १६ सितम्बर १९२४
गौलोक गमन : ८ जून २०११

इस विशेषांक के सम्पादक – श्री शिव कुमार लोहिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

4बी, डकबैक हाउस, 41, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता-700017
टेलीफोनः (033) 4004 4089, ईमेलः aimf1935@gmail.com
वेवसाइट: www.marwarisammelan.in

स्वर्गीय नंदकिशोर जी जालान
जन्म-शतवार्षिकी समारोह

दिनांक : शनिवार, 21 सितम्बर 2024 • संध्या 6.00 बजे

स्थान : हिन्दुस्तान क्लब, कोलकाता

उद्घाटनकर्ता

श्री संतोष कुमार बगड़ोदिया

पूर्व कोयला मंत्री, भारत सरकार

प्रधान अतिथि

श्री सजन भजनका

सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी

विशिष्ट अतिथि

श्री ओम प्रकाश जालान

सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी

प्रधान वक्ता

श्री सीताराम शर्मा

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

अध्यक्षता

श्री शिव कुमार लोहिया

राष्ट्रीय अध्यक्ष

स्वागताध्यक्ष

श्री आत्माराम सोंथालिया

परामर्शदाता

राष्ट्रीय पदाधिकारी गण

राष्ट्रीय महामंत्री

कैलाश पति तोदी

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

केदार नाथ गुप्ता

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

महेश जालान

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

दिनेश जैन, रंजीत जालान, राजकुमार केडिया, निर्मल झुनझुनवाला, मधुसुदन सिकरिया, सुभाष अग्रवाल

राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री

पवन जालान, संजय गोयनका

श्री नंदकिशोर जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

श्री नंदकिशोर जी जालान के पिता श्री जौहरमल जी जालान का जन्म राजस्थान के नवलगढ़, शेखावाटी क्षेत्र में हुआ था जो अपनी फ्रेस्को चित्रित हवेलियों के लिए प्रसिद्ध है। श्री नंदकिशोरजी के पूर्वज लगभग १७२ साल पहले कलकत्ता (अब कोलकाता) चले गए और जूट और जूट के सामान का व्यापार शुरू किया और भारी मुनाफा कमाया। उनके पिता जोहरमलजी ने चीनी मिलें स्थापित की। अपर गंगा शुगर मिल्स, न्यू इंडिया शुगर मिल्स और भारत शुगर मिल्स ने बिड़ला परिवार के साथ साझेदारी में निदेशकों में से एक और बाद में १९५६ में अपनी मृत्यु तक सीईओ के रूप में काम किया। श्री नंदकिशोरजी जालान का जन्म १६.०९.१९२४ को कलकत्ता में हुआ था। श्री नंदकिशोरजी अपनी स्कूली शिक्षा 'हेयर स्कूल', कोलकाता में की और दसवीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कोलकाता के विद्यासागर कॉलेज से उन्होंने बीकॉम से ग्रेजुएशन किया। वह स्कूल और कॉलेज में हमेशा अग्रणी रहते थे। स्कूल में वे प्रिंस क्लब के अध्यक्ष और कॉलेज में कॉलेज पत्रिका के संपादक थे। असम का जो अब अरुणाचल प्रदेश के नाम से जाना जाता है। उन्होंने विभिन्न वस्तुओं का व्यापार शुरु किया और नेफा सरकार से दाल, चीनी, वनस्पति आदि की आपूर्ति के लिए निविदाएं हासिल कीं। १९६२ में चीनी आक्रमण के दौरान उन्होंने हवा से गिराने वाले पैराशूट के लिए आर्डर हासिल किया और कच्चे माल के रूप में नेवार और तैयार उत्पाद बनाने के लिए कोलकाता में हमारी फैक्ट्री स्थापित की। उन्होंने सैन्य वर्दी बनाने का ऑर्डर भी हासिल किया और बाद में उसे पूर्वी क्षेत्र में आपूर्ति के लिए एक रेडीमेड कपड़ा कारखाने में बदल दिया। १९६७ में रिलायंस इंडस्ट्रीज, जिसने अहमदाबाद के कारखाने में चार करघे स्थापित करके विमल कपड़े बनाना शुरू किया, उन्होंने पूरे पूर्वी क्षेत्र में कपड़ों के वितरण को देखते हुए श्री नंदकिशोरजी से संपर्क किया और अपनी एजेंसी देने की पेशकश की, जिसे ले लिया गया और उनके सबसे बड़े बेटे श्री शरदजी ने इसे पूर्वी क्षेत्र में सबसे लोकप्रिय ब्रांड के रूप में विमल बनाने के लिए समर्पित रूप से काम किया। श्री नंदकिशोरजी ने अपने व्यवसायिक कैरियर की शुरुआत में असम में वनस्पति, साबुन आदि के निर्माता कुसुम प्रोडक्ट्स लिमिटेड की एजेंसी ली और इसे पूरे उत्तर पूर्वी राज्यों में स्थापित करने के लिए बहुत मेहनत की। अब उनके बेटे और पोते एफएमसीजी, कपड़ा हार्डवेयर, रसायन में सभी प्रतिष्ठित ब्रांडों का वितरण व्यवसाय कर रहे हैं और पूरी तरह से स्थापित हैं। श्री नंदकिशोर जी बहुत कम उम्र से ही सामाजिक गतिविधियों में रुचि रखते थे और शिक्षा को बढ़ावा देने, पर्दा विवाह, दहेज प्रथा को खत्म करने, शादियों में अतिशयोक्ति और धन का प्रदर्शन, गरीबों और वंचितों की मदद करने वाले कई सामाजिक संगठनों से जुड़े थे और राजस्थान में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके सामाजिक कार्यों को निम्नलिखित सामाजिक संगठनों के सहयोग से देखा जा सकता है:-

१. वह पश्चिम बंगाल में डॉ. बी.सी.रॉय सरकार के पहले और मंत्री स्वर्गीय श्री ईश्वरदासजी जालान के साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहे, जहां उन्होंने १९५४ से १९६१ तक महासचिव, १९७९ से १९८२ तक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष १९८२, १९९३ से २००१ तक राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में काम किया। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के समारोहों में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. शंकर दयाल शर्मा, भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह और कई अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। महिला कल्याण को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने अपनी महिला विंग द्वारा बनाए गए उत्पादों की प्रदर्शनी, लाटूर भूकंप, उड़ीसा चक्रवात और राजस्थान में सूखा राहत के दौरान राहत शिविरों का

आयोजन किया। उन्होंने राजस्थान में सती प्रथा को खत्म करने के लिए भी कड़ी मेहनत की।

२. वह मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन के ट्रस्टी भी थे और **"सम्मेलन भवन"** के निर्माण के लिए २५, एमहर्स्ट स्ट्रीट पर बिड़ला परिवार से एक इमारत खरीदने के पीछे उनका हाथ था।

३. १९४५ में उन्हें मारवाड़ी छात्र संघ का कार्यकारी सदस्य चुना गया। १९४६ के दंगों के दौरान उन्होंने छात्रों की सुरक्षा और पुस्तकों का वितरण सुनिश्चित किया। उन्होंने तत्कालीन राज्यपाल श्री राजगोपालचारी द्वारा संघ के वार्षिक समारोह की अध्यक्षता का आयोजन किया। बाद में १९५१ में उन्हें इस संघ के अध्यक्ष के रूप में चुना गया और उन्होंने छात्रों के लाभ के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए।

४. कलकत्ता चैंबर ऑफ कॉमर्स जिसकी स्थापना १८३० में हुई थी, बुरी हालत में थी। १९७० में उन्हें इसके अध्यक्ष के रूप में चुना गया और उन्होंने चैंबर को जीवंत बनाया। उन्होंने १९७०, १९७१, १९८० और १९८१ में वहां अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वे चैंबर के अन्य अध्यक्षों के कुशल संचालन में हमेशा एक मार्गदर्शक के रूप में रहे और लेडीज विंग खोलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

५. एस.वी.एस. मारवाड़ी अस्पताल की स्थापना १९२० में हुई थी। उन्होंने १९७३ से १९७५ तक महासचिव के रूप में कार्य किया और श्री राधाकिशनजी कानोड़िया, श्री सत्यनारायणजी टांटिया, श्री एम.पी. बिड़ला के सहयोग से अस्पताल को एक्स-रे, पैथोलॉजी और अन्य नवीनतम मशीनों के आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित किया। बाद में अस्पताल घाटे में जाने लगा। १९८७ में उन्हें महासचिव के रूप में नियुक्त किया गया और उन्होंने अपने समर्पित कार्य से वार्षिक घाटे को १५ से २० लाख प्रति वर्ष तक कम कर दिया और बिना किसी नुकसान के अस्पताल में मरीजों की संख्या बढ़ाकर और केबिन बनाकर अस्पताल में आने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि की। २००० में उन्हें अस्पताल की विकास समिति का उपाध्यक्ष और फिर अध्यक्ष बनाया गया।

६. उन्होंने कला, नृत्य और संगीत के विकास के लिए **टांटिया हाई स्कूल** में **'संगीत ज्योत्सना'** शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसके अध्यक्ष चुने गए।

७. नवलगढ़ में सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट के रूप में पहला स्कूल स्थापित करने के लिए १९०७ में नवलगढ़ में श्री नवलगढ़ विद्यालय समिति का गठन किया गया था। १९३२ में हायर सेकेंडरी स्कूल की स्थापना हुई, १९८५ में गर्ल्स कॉलेज और पी.जी. कॉलेज की स्थापना २००१ में बी.एड कॉलेज के साथ की गई थी। जालान के अलावा कोलकाता के कई अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति पदाधिकारी बने। हालाँकि समाज को खराब मौसम का सामना करना पड़ा। १९९८ में सोसायटी का प्रबंधन संभालने के लिए तत्कालीन पदाधिकारियों ने उनसे संपर्क किया और उन्होंने २००९ तक काम किया। उन्होंने सोसायटी के कामकाज में बदलाव लाया। आज तीनों संस्थान १४०० की छात्र संख्या के साथ काम कर रहे हैं और सर्वोत्तम १०० प्रतिशत परिणामों और छात्रों और खेलों के लिए सर्वोत्तम बुनियादी ढांचे के साथ आत्मनिर्भर हैं।

पोद्दार छात्र निवास।

१९३५ में मारवाड़ी छात्र निवास शुरु करने और पढ़ाई के लिए कोलकाता के बाहर से आने वाले छात्रों के आवास के लिए इसका नाम बदलकर पोद्दार छात्र निवास के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसे हलवासिया छात्र निवास के साथ जोड़ा गया था। कोलकाता के एक प्रमुख व्यक्ति श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंगका इसके आजीवन सदस्य थे। उनके आग्रह पर श्री नंदकिशोरजी इस छात्र निवास के सचिव बने और उस समय इस छात्रावास के २५ प्रतिशत निवासी इसका उपयोग व्यवसाय करने के लिए कर रहे थे, न कि पढ़ाई के लिए जिसके लिए इसका गठन किया गया था। बड़ी कठिनाइयों का सामना करने के बाद ऐसे छात्रों को छात्रावास से निकालने के लिए श्री हिम्मतसिंगकाजी के साथ समर्पित रूप से काम किया और सिफारिशों पर सभी प्रवेश समाप्त कर दिए गए और उनकी कड़ी मेहनत से परिदृश्य बदल गया। १९९२ में श्री प्रभुदयालजी की मृत्यु के बाद उन्हें इसका अध्यक्ष बनाया गया। यह गर्व की बात है कि उनके कार्यभार संभालने के बाद अस्सी प्रतिशत छात्र चार्टर्ड अकाउंट ेंसी की परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए और वहां पढ़ने वाले छात्र सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, विभिन्न प्रतिष्ठित कंपनियों के अध्यक्ष, विभिन्न संगठनों में सर्वोच्च पद और कार्यरत रहे।

श्री नंदकिशोरजी ने कोलकाता में श्री सीतारामजी सेक्सरिया, ईश्वरदासजी जालान, ईश्वरी प्रसादजी गोयनका, सत्यनारायणजी टांटिया, भवरमलजी सिंघी, श्री बिजय सिंह नाहर आदि जैसी मशहूर हस्तियों के साथ कई सामाजिक संगठनों में मिलकर काम किया। श्री नंदकिशोरजी ने समाज और लोगों के उत्थान के लिए एक खुशहाल और सक्रिय जीवन व्यतीत किया। २०११ में ८६ वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

स्व. नंद किशोर जालान - एक अप्रतिम व्यक्तित्व

स्वर्गीय नंदकिशोर जालान एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का परस्पर संबंध अद्वितीय रहा है। किसी भी संस्था के इतिहास में किसी एक समर्पित कार्यकर्ता द्वारा ५० वर्षों तक अहर्निश सेवा प्रदान करना अपने आप में एक मिसाल कायम करता है। स्वर्गीय जालान की प्रतिभा अल्पायु से ही विकसित हो गई थी, जिसके फलस्वरुप मात्र २५ वर्ष की आयु में सर्वप्रथम कोलकाता मारवाड़ी सम्मेलन का उन्हे मंत्री बनाया गया एवं एक वर्ष के उपरांत ही सीधे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का प्रधानमंत्री। उस समय सभापति थे बरार केसरी एवं मध्य प्रदेश के अर्थ मंत्री बृजलाल बियानी। चार वर्षों के बाद सेठ गोविंद दास जब सभापति बने तब फिर उन्हें प्रधानमंत्री का पदभार सौपा गया। यह ११ वर्षो का दौर था, जिसमें उन्हें सभापति के अलावा सम्मेलन के प्राण पुरुष स्व ईश्वर दास जालान, समाज सुधार के कट्टर समर्थक भंवरमल सिंघी के साथ उन्होंने अपने कार्यो और विचारों को पुष्ट किया। समाज सुधार, स्त्री शिक्षा, परिवार नियोजन के कार्यक्रमों के लिए किए गए आंदोलनो में आयोजक के रूप में भाग लिया। स्पष्ट है कि वह कार्यालय में लिए गए निर्णय को सड़क पर उतरकर क्रियान्वित करने का दौर था। उन्ही सबल एवं समर्पित प्रयासों के फलस्वरूप मिले सफलता से समाज का वास्तविक स्वरूप उभर कर आया, जिसका श्रेय सम्मेलन को जाता है।

किसी भी संस्था में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। पर उन विभिन्न परिस्थितियों के मध्य डांवाडोल होती नैया के लिए एक लंगर की आवश्यकता होती है। उस लंगर का रोल निभाया स्वर्गीय नंदकिशोर जालान ने। विभिन्न पदों पर उन्होंने काम किया। समाज विकास का दीर्घ वर्षो तक सम्पादन किया। वास्तव में उनकी सोच एवं कार्यशैली का वैशिष्ट्य ही उन्हें एक विशिष्ट प्रभामंडल प्रदान करता है, जो आज भी उनके प्रशंसकों के मार्ग को आलोकित करने की क्षमता रखता है। वे एक समाज विचारक, कुशल कार्यकर्ता, श्रेष्ठ आयोजक एवं उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता आदि वे के धनी व्यक्ति थे। निर्णय क्षमता, ईमानदारी, जिम्मेदारी लेने की प्रवृत्ति, संचार संवाद, परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता आदि गुण थे जिसका उन्होंने सम्मेलन में दीर्घ ५० वर्षो तक उपयोग किया। समाज को जोड़ने में उन्होंने विशेष जोर दिया। अलग-अलग प्रदेशो के सम्मेलन से स्थानीय समाज को जोड़ने के उद्देश्य से उन्होंने भ्रमण किया।

यही कारण है कि उन्हें आज भी हम श्रद्धापूर्वक स्मरण करते है। कहा गया है कि अगर आप अपने मृत्यु के बाद भी जीवित रहना चाहते है, तो ऐसा कुछ करे जो आपके जाने के बाद भी कायम रहे। स्व. जालान जी सम्मेलन के अलावा अनेक संस्था में गठनमूलक कार्य किया है। उन्होंने अनेक कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित किया। उनकी स्मृतियाँ, उनका योगदान सदैव अमिट रहेगा। नेतृत्व का मतलब लोगो को यह बताना नहीं कि उन्हें क्या करना है बल्कि उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ बनने एवं समाज के लिए सर्वश्रष्ठ प्रदान करने के लिए प्रेरित करना है। नेतृत्व का काम है समस्याओं में अवसर देखना। सभी परिस्थितियों में उनका एक ही लक्ष्य रहा - **सम्मेलन एवं समाज की अग्रगति**।

हालांकि व्यक्तिगत रूप से तो मेरा उनका परिचय नहीं रहा पर मैं उनकी प्रतिभा से परिचित था। मेरे पिता स्वर्गीय विश्वनाथ लोहिया से उनका सुमधुर संबंध था एवं मैंने कई बार दोनों को विक्टोरिया मेमोरियल में प्रातः भ्रमण के समय मिलने पर आपसी चर्चा करते हुए साथ-साथ देखा करता था। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि सदस्य ना होते हुए भी मैं सन २००३ में समाज विकास का वार्षिक ग्राहक बना था एवं ध्यान से सभी अंकों को पढ़ा करता था। उसी समय मैंने एक अपनी स्वरचित कविता समाज विकास में प्रकाशन के लिए भेजी थी, जिसे स्वर्गीय जालान ने **अगस्त २००३ समाज विकास** अंक के मुख्य पृष्ठ पर छापी थी।

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

अगस्त, २००३ • वर्ष ५३ • अंक ८ • एक प्रति १० रुपए • वार्षिक १०० रुपए

बादलों से टपक रही है चारों ओर अमृतमयी पानी की बूँदें

मानव एवं वृक्ष

शिव कुमार लोहिया

धरती न होती
बीज वृक्ष न बन सकते।
पहचानो अपनी जमीन को
पाँव तले से खिसकने न दो
कारण
तुम्हें भी फलदार पेड़ बनना है
जिसकी सुन्दरता होती है
वह जहाँ भी रहता है
वातावरण सुरभित कर देता है,
राहजनों को छाँव देता है,
प्रकृति को अस्तित्व प्रदान करता है
इसके फल हमेशा
लाभप्रद, सुरुचिपूर्ण होते हैं
पेड़ों की अपनी गरिमा होती है
जिसे उजागर करने के लिए
चाटूकार की आवश्यकता नहीं
पर लोभीदार से विद्रोह
करना सीखो
अपनी जमीन को पहचानो
अपनी पकड़ मजबूत करो
कारण
बीज से वृक्ष बनने की प्रक्रिया में
लम्बा अंतराल होता है
इस दौरान अपने

पक्के इरादों की धरती पर
लक्ष्य के बीज को
श्रम के धूप की तपन देकर
ज्ञान के जल से सींचो
झंझावतों में डटे रहो
पेड़ व इंसान बनने की प्रक्रिया में
कोई फर्क नहीं होता
पहचानों अपनी जमीन को
जमीन न होती तो
बीज वृक्ष न बन सकते।

क्यूँ न हम?
वृक्षों को, पत्तियों को, लताओं को
खूब बड़ा करें / घना करें
बिछा दें चारों ओर
सजा दें धरती के चारों छोर
क्यूँ न हम?

क्यूँ न हम?

श्यामसुन्दर बगड़िया, कलकत्ता

झूला दें फूलों के कर्ण फूल
लगा दें फूलों के लाकेट
परिवेश को भर दें कमनीयता से–
भर दें सुगंध, भर दे सुरंग, भर दे तरंग
ताकि, उन पर दुनिया भर के सभी पक्षी
पूरब के, पश्चिम के, उत्तर के, दक्षिण के,
नाचते-गाते एक साथ आनंद से
बैठ सकें, झूम सकें, फुदक सकें
जिससे उनको समवेत चहचहाहट-
दुनिया में एक साथ मिलन-स्वर भर सकें
दुनिया में एक साथ संगीत सरगम कर सकें
क्यूँ न हम...

निश्चय ही एक प्रकार से मेरी रचना में निहत भाव उन्हें पसंद आए होंगे तभी उन्होंने मेरी रचना को इतना महत्वपूर्ण स्थान दिया। उनके जन्म शताब्दी के अवसर पर सम्मेलन उनके अवदान का श्रद्धापूर्वक स्मरण कर स्वयं गौरवान्वित हो रहा है। समाज के लिए समर्पित समाज सेवियों का सम्मान-स्मरण कर हम आने वाली पीढ़ी को उनके समाज के प्रति समर्पण भावना से परिचित करवाते हैं। साथ ही हमें यह संदेश भी मिलता है कि अपने लिए जीने से कहीं श्रेष्ठ है दूसरों के लिए जीना। दूसरों के लिए जीने से ही हमारे व्यक्तित्व में विशालता आती है। इस विशेषांक का संपादक होना मेरे लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। स्वर्गीय नंदकिशोर जालान की स्मृति को शत-शत नमन।

IAC
SINCE 1959
ISO 9001:2015
ISO 14001:2015
ISO 45001:2018
NABL Accredited Lab
POWERING 35 NATIONS ACROSS THE WORLD
IAC Electricals Pvt Ltd is the one stop solution for providing innovative product and services to the electric power utility since 1959
PRODUCTS & SERVICES OFFERED:
• Transmission line and substation insulator fittings up to 1200 kV AC and 800 kV HVDC
• Conductor and groundwire accessories
• HTLS conductor accessories and Sub zero hardware fittings
• OPGW cable fittings
• Pole/Distribution line hardware
• AB Cable and ADSS cable accessories
• Substation clamps and connectors
• Conductor, Insulator and hardware testing facility
IAC ELECTRICALS PVT. LTD.
Transmission line and distribution line hardware fittings,
IEC/ISO 17025/2015 NABL accredited laboratory for conductor, insulator and hardware fittings type testing.
www.iacelectricals.com
info@iacelectricals.com
701, Central Plaza, 2/6, Sarat Bose Road, Kolkata - 700020

FESTIVE
READY
SCAN TO VIEW
Stile®
FOR THE FASHIONABLE MAN
Gariahat
172/1, Rashbehari Ave.
Kolkata 700029
New Market
1, Lindsay Street
Kolkata 700087
stilecalcutta
stilecalcutta
Scan for Whatsapp
+91 9831097555

Since 1980
Goldiee
SPICES HING
Jahā̃ Jaye Rishtey Banaye
Salman Khan
Brand Ambassador
Goldiee
CHHOLE MASALA
FRESH LOCK
Goldiee
COMPOUNDED HING TADAKA
जहाँ जाए रिश्ते बनाए
Goldiee
KITCHEN KING MASALA
FRESH LOCK
AVAILABLE ON
Flipkart
amazon.in
DMart
LOTS
elasticrun
CITYMALL
Jio Mart
DealShare
Flipkart Wholesale
blinkit
bigbasket
more MEGASTORE
Reliance SMART
SMART BAZAAR
LuLu
BOOKER WHOLESALE
zepto
Jumbotail
udaan
www.goldiee.com
/goldieegroup1980
/goldieegroup
/goldieegroup
/goldieegroup

सूरत का सकारात्मकता संदेश

राम राम!

इस माह के प्रारंभ में सूरत में आयोजित अखिल भारतीय समिति की बैठक सफलता के साथ संपन्न हुई। महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा एवं निर्णय करने के लिए आहूत बैठक में सदस्यों ने खुलकर विचार विमर्श करने के बाद सर्वसम्मति से निर्णय लिए। विचारों में भिन्नता को आपसी चर्चा के माध्यम से सकारात्मक निर्णय तक पहुंचाना एक स्वस्थ परंपरा है। बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों ने इसी परंपरा को निभाया है। इसके लिए सभी धन्यवाद के पात्र हैं। संविधान संशोधन के कार्य के लिए गुवाहाटी में आयोजित पिछले वर्ष २७वें राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्ताव पारित हुआ था। संविधान उप समिति के चैयरमेन एवं निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया एवं संयोजक एवं निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका के नेतृत्व में उप समिति के सभी सदस्यों के सम्मिलित प्रयास से यह दुरुह कार्य कई महीनों के अथक प्रयत्न के बाद सफलता के साथ संपन्न हुआ, यह एक संतोष की बात है। निश्चय ही इन निर्णयो से संगठन में और भी अधिक मजबूती आएगी। बैठक में अनेक सदस्यों ने १ लाख सदस्यों का लक्ष्य दोहराया, जिससे कोई भी असहमत नहीं हो सकता।

असम की स्थिति

बैठक में असम की वर्तमान स्थिति पर भी चर्चा हुई। सदस्यों ने अपने विचार खुलकर व्यक्त किये। इस संदर्भ में पूर्व एवं वर्तमान राष्ट्रीय पदाधिकारीगण प्रारंभ से ही निरंतर प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ संपर्क में हैं। २६ अगस्त को जूम पर आयोजित पूर्वोत्तर प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति की बैठक में भी मैंने प्रांतीय अध्यक्ष के अनुरोध पर भाग लिया था। स्थिति की गंभीरता पर सभी सदस्यों के साथ विचारों का आदान-प्रदान हुआ। स्थिति गंभीर होने के साथ-साथ नाजुक भी है। अत: प्रांतीय अधिकारियों के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय पदाधिकारी कदम उठा रहे हैं। स्थिति पर लगातार नजर बनी हुई है।

पंच सूत्रीय कार्यक्रम

इस बैठक में मैंने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभी प्रांतो से अनुरोध किया कि अपने कार्यक्रमों को निम्नलिखित बिंदुओं पर केंद्रित करें :-

१. समाज सुधार
२. संस्कार-संस्कृति-चेतना
३. राजनीतिक चेतना
४. आपणो समाज-एक समाज-श्रेष्ठ समाज।
५. उच्च शिक्षा-स्वास्थ्य।

ऐसा देखा गया है की प्रांतो को राष्ट्रीय कार्यालय द्वारा भेजे गए पत्रों एवं सुझाव पर प्रांतो से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलती है। अत: अवसर का लाभ उठाते हुए मैंने अपने पंच सूत्रीय कार्यक्रमों पर चर्चा की। प्रसन्नता की बात है कि इस विषय में सकारात्मक प्रतिक्रियाएं मिली। समाज सुधार के कार्यक्रम को शाखा स्तर पर अपनाया जाना अत्यंत आवश्यक है। इन विषयों पर सभी शाखाओं को गोष्ठी आयोजित करनी चाहिए। संस्कार संस्कृति चेतना का कार्यक्रम एक प्रभावशाली कार्यक्रम है, जिसके तहत हम नई पीढ़ी को अपने संस्कार संस्कृति के बारे में जानकारी देकर उन्हें अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। हमें यह सोचना होगा कि उन्हें किस तरह से यह बताया जाए एवं यह बात उनके गले उतारा जाए कि पैसा कमाना ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य नहीं है बल्कि चरित्र, सद्भावना और ईमानदारी भी उससे अधिक नहीं तो उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्हें यह समझना अति आवश्यक है कि हमारी अपनी सभ्यता विश्व के किसी अन्य सभ्यता से श्रेष्ठ है। इसके तहत राजस्थानी भाषा को घरेलू बोलचाल में शामिल करना आवश्यक है। हमारा इस सत्र का नारा है **आपणो समाज - एक समाज - श्रेष्ठ समाज**। समाज के विभिन्न घटकों के बीच जो भी सोच का या अन्य भेदभाव है उसको दूर करके एक सूत्र में संगठित होने की आवश्यकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति को पूरी निष्ठा एवं लगन के साथ प्रयासरत होना होगा। साथ ही जिस प्रदेश में हम रहते हैं वहां की भाषा-सभ्यता के बारे में साधारण जानकारी एवं वहां के स्थानीय लोगों के हित के लिए कार्य करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। स्थानीय समाज से अलग थलग रहने का खामियाजा हमारा समाज समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर झेलता आया है। अत: इसमें सुधार की आवश्यकता है। राजनीतिक चेतना के अंतर्गत समाज के बंधुओ, जो राजनीति में सक्रिय है, उन्हें परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सहयोग देना हमारे व्यापक हित में है। एक बात हमें हमेशा याद रखनी चाहिए कि हम राजनीति में स्थान तभी बना पाएंगे जब स्थानीय लोगों से एक आम नागरिक के तौर पर संपर्क में रहेंगे, न कि मारवाड़ी के रूप में। ऐसे बहुत से उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं। इन उदाहरणों की संख्या में वृद्धि की आवश्यकता है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सम्मेलन कई वर्षों से सक्रिय है। इस वर्ष स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी कई पहल किए गए हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकारी सेवाओं की जानकारी आम लोगों तक पहुंचाना एवं इसका लाभ वे किस प्रकार उठा सकें, उसके बारे में उनकी मदद करना हमारा कर्तव्य है।

इन विषयों पर आपके सुझाव आमंत्रित है। आइए हम सब मिलकर सम्मेलन को अपने कार्यक्रमों के द्वारा समाज के और अधिक निकट ले जाने में पहल करें।

शिव कुमार लोहिया

सूरत में अखिल भारतीय समिति की बैठक संपन्न

संविधान संशोधन सर्वसम्मति से पारित
राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा पंच सूत्रीय कार्यक्रम पर बल

८ सितंबर २०२४ को सूरत के महाराजा अग्रसेन भवन के द्वारका हॉल में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवकुमार लोहिया के अध्यक्षता में संपन्न हुई। राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवकुमार लोहिया के नेतृत्व में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष सराफ, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष गोवर्धन प्रसाद गाड़दिया, वर्तमान एवं पूर्व राष्ट्रीय पदाधिकारीगण, प्रांतीय पदाधिकारी एवं उपस्थित सदस्यों के मध्य दीप प्रज्ज्वलन कर बैठक का शुभारंभ किया गया।

गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से सभी उपस्थित महानुभावों का स्वागत सम्मान किया गया। गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से स्वागताध्यक्ष एवं प्रांतीय संस्थापक अध्यक्ष जय प्रकाश अग्रवाल ने आशा व्यक्त की कि हम सभी जिस उद्देश्य से एकत्रित हुए हैं उसकी पूर्ति में आपसी विचार विमर्श एवं निर्णय में शत प्रतिशत सफल होंगे। उन्होंने अग्रवाल विकास ट्रस्ट के सभी पदाधिकारी से प्राप्त सहयोग का उल्लेख करते हुए उनके प्रति आभार प्रकट किया। प्रांतीय सम्मेलन की ओर से प्रांतीय अध्यक्ष गोकुल चंद बजाज ने राष्ट्रीय पदाधिकारियो का आभार व्यक्त किया जिन्होंने प्रांत को बैठक के अतिथ्य का अवसर प्रदान किया। उन्होंने आश्वासन दिया कि प्रांत में संगठन के विस्तार के लिए प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं, जिसके प्रतिफल शीघ्र प्राप्त होने लगेंगे।

अखिल भारतीय समिति की बैठक को प्रारंभ करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया ने गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सुनियोजित उत्तम व्यवस्था एवं प्रेम पूर्ण आतिथ्य के लिए हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया, जिसका सभी उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि के साथ अनुमोदन किया।

उन्होंने सदस्यों से आग्रह किया कि आज की इस अति महत्वपूर्ण बैठक में विस्तृत चर्चा के उपरांत व्यापक संविधान

संशोधन पर निर्णय लेना है। असम मे समाज की पीड़ा पर भी विचार विमर्श करना है। **फेसबुक पेज को 'लाइक'** करने की अपील को उन्होंने दोहराया। उन्होंने पांच सूत्रीय कार्यक्रम का सुझाव दिया - **समाज सुधार, संस्कार संस्कृति चेतना, राजनीतिक चेतना, समरसता एवं संगठन विस्तार, आपणो समाज - एक समाज - श्रेष्ठ समाज** के नारे को मूर्त रूप देना एवं शिक्षा - स्वास्थ्य। इन बिंदुओ पर हम कार्य करें ताकि हमारे प्रयास का व्यापक प्रभाव हो। तत्पश्चात राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी ने दिनांक १७ मार्च २०२४ को हरिद्वार में आयोजित अखिल भारतीय समिति के कार्यवृत को सभा पटल पर प्रस्तुत किया, जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। राष्ट्रीय महामंत्री ने विगत कार्यक्रम की रपट सभा पटल पर प्रस्तुत किया जिसे स्वीकार किया गया।

संशोधित एवं प्रस्तावित संविधान एवं अन्य विषयों पर पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष सराफ ने अपने सारगर्भित विचार रखें। उन्होंने कहा कि संविधान संशोधन पर पिछले वर्ष से व्यापक चर्चा एवं बैंगलुरु की बैठक में हुए आम सहमति के अनुसार एक प्रारूप बनाया गया है जिस पर चर्चा के बाद हमें आज सकारात्मक निर्णय लेना है। साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा कि हमें सोचना चाहिए कि २५ वर्षों के उपरांत सम्मेलन के क्या उद्देश्य होंगे। निवर्तमान अध्यक्ष एवं संविधान संशोधन उप समिति के चैयरमेन गोवर्धन प्रसाद गाड़िया ने सम्मेलन के इतिहास के विषय में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इतने व्यापक संशोधन के पश्चात संविधान सम्मेलन के संगठन को मजबूती प्रदान करेगा। संविधान संशोधन उपसमिति के संयोजक एवं निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री संजय हरलालका ने संविधान संशोधन उप समिति के गठन के पश्चात विभिन्न समय पर हुए विचार विमर्श पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह संतोष का विषय है कि विगत बैंगलुरु की बैठक में लगभग आम सहमति से एक प्रारूप तैयार हुआ है, जिस पर आज चर्चा होनी है। उन्होंने अपने वक्तव्य में विभिन्न आंकड़े प्रस्तुत किये। इस विषय पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मधुसूदन सिकरिया, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री जुगल किशोर अग्रवाल, पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री कैलाश काबरा, छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पुरुषोत्तम सिंघानिया, पश्चिम बंग के मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष नंद किशोर अग्रवाल, उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल तुलस्यान, पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष ओमप्रकाश खंडेलवाल, विनोद लोहिया, विमल अग्रवाल, राजेंद्र हरलालका, सुषमा अग्रवाल, मनोज कुमार काला, सुशील कुमार गोयल, सुरेश कमानी, कमलेश नाहटा, दीपक पारीक, ओम प्रकाश रिंगसिया आदि ने चर्चा में भाग लिया एवं अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया ने बताया कि आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल एवं महाराष्ट्र के प्रांतीय अध्यक्षों ने पत्र द्वारा बेंगलुरु में आम सहमति से बने संविधान संशोधन के प्रारूप के प्रति पूर्ण समर्थन प्रकट किया है। विस्तृत चर्चा के उपरांत संविधान संशोधन पर आम सहमति बनी एवं कुछ तकनीकी एवं अन्य संशोधन के साथ संशोधित संविधान को सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई।

दोपहर के भोजन के उपरांत द्वितीय सत्र का प्रारंभ करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ने आग्रह किया कि उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए पांच सूत्री कार्यक्रम पर विचार विमर्श कर इन्हे प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक कदम पर चर्चा की जाए। युगल किशोर अग्रवाल, कैलाश काबरा एवं अन्य ने इन विषयों पर अपने विचार साझा किया एवं इन्हें आगे बढ़ाने का आश्वासन दिया। तत्पश्चात सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री केदार नाथ गुप्ता ने सत्र २०२३-२५ का अब तक का वित्तीय रपट प्रस्तुत किया। असम की समस्या पर श्री मधुसूदन सिकरिया, कैलाश काबरा, विनोद लोहिया, विमल अग्रवाल आदि ने विस्तृत रूप से सभा को वर्तमान स्थिति से अवगत करवाया। काबरा जी ने राष्ट्रीय पदाधिकारियों को निरंतर संपर्क में रहने पर आभार व्यक्त किया। विस्तृत चर्चा के उपरांत कुछ निर्णय लिए गए। बैठक के प्रारंभ में राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी ने सूचित किया कि मनमोहन

गाड़ोदिया द्वारा दायर कोलकाता हाई कोर्ट में मुकदमा खारिज हो गया है। उन्होंने सूचित किया कि अनावश्यक रूप से एक सदस्य के कारण सम्मेलन को लाखों रुपए का निरर्थक खर्च झेलना पड़ा है। सभा ने इस विषय में राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया को आवश्यक कदम उठाने के लिए अधिकृत किया। तत्पश्चात कैलाशपति तोदी ने राजकुमार केडिया द्वारा प्राप्त पत्र को सभा पटल पर रखा। क्योंकि इस पत्र में उल्लेख किए गए मुद्दे सम्मेलन से संबंधित नहीं थे, सदस्यों की राय पर इन पर किसी प्रकार की

कार्रवाई नही करने का निर्णय लिया गया। संगठन विस्तार के संबंध में अनेक सदस्यों ने अपने सुझाव में कहा कि हमें १ लाख तक अपनी सदस्यों की संख्या ले जाने का लक्ष्य रखना चाहिए। सभा में इस पर चर्चा हुई कि अब सदस्यों की उपस्थिति बढ़ रही है। इसलिए इस प्रकार की बैठकों को दो सत्र में विभाजित कर ज्यादा समय दिया जाए। आगामी बैठकों में इस बात का ध्यान रखा जाए। राष्ट्रीय महामंत्री ने संविधान संशोधन के कार्य में संविधान संशोधन उप समिति के चेयरमेन गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया एवं संयोजक संजय हरलालका के प्रति आभार व्यक्त करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। दीपक पारीक व अन्य सदस्यों ने इस प्रस्ताव में राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री को भी सम्मलित करने का संशोधन पेश किया, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कार्य में सभी उपस्थित सदस्यों की सकारात्मक भूमिका के लिए आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री संजय गोयनका ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

Best Wishes from:

Ashish Jhunjhunwala
Director

HINDUSTHAN ICE
&
COLD STORAGE CO. LTD.

8, HO CHI MINH SARANI, 2ND FLOOR
KOLKATA - 700071
PH NO: 9830041692

वह कौन आदि शक्ति या दैवी-शक्ति थी जिसने इसे निर्देशित किया?

– नन्दकिशोर जालान
अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सम्मेलन के साथ ५० वर्षों की यात्रा

समाज के जिस बौद्धिक-स्तर को छूने के प्रयास में, घिसी-पिटी लकीरों को मिटाने की चेष्टाओं में और निरन्तर नवीनतम आलोक-विलोक से उसे उद्वेलित करने के प्रयास किसी व्यक्ति विशेष के नहीं, सामूहिक स्तर पर एक प्रकार के चिन्तन के प्रस्फुटन में उनका साफल्य छिपा रहता है और उजागर होता है।

मैने अपने जीवन में अनुभव किया है कि समाज की प्रगति सापेक्ष मूल्यों पर ही आधारित है। प्रगति के लक्ष्य की राहें सीधी-सहज-सपाट नहीं होती हैं, टेढ़ी-मेढ़ी और घुमावदार होती है। सही सोच से व्यक्ति अपनी इकाई के आधार पर लक्ष्य को पूर्ति कर ले जा सकता है, यह मात्र एक भ्रमजाल है और मैं अपने जीवन में इस भ्रमजाल के चक्कर में नहीं फंसा, यही मेरे जीवन का एक सुखद अंश रहा है।

बात होती है उद्देश्यों से बंधी सबल प्रेरणा और हार्दिक लगन की चेतना और विकास के पथावरोहण के लिए। सैकड़ों नहीं, हजारों समर्पित कार्यकर्ताओं के स्नेह, सौहार्द व आन्तरिक सहयोग ने इसे सम्भव किया, उसका मेरे पास कोई प्रतिदान नहीं। कभी किसी पद की अभिलाषा न होते हुए उन्होंने मुझे जिस पद पर बैठाया, उससे वे मेरे स्तुत्य ही नहीं, बल्कि उनके पदों में झुक कर उनके आशीर्वाद के फलीभूत होने का संकल्प लेने की मेरी अभिलाषा सदैव रही। वास्तव में ये सब मेरे जीवन की ऐसी अस्मिता व सुनहरी लकीरें हैं, जो अन्त सांस तक मुझसे भुलाये न भूलेगी।

स्मृतियों के कगार में उभर कर आता है मेरे स्कूली जीवन की एक सार्वजनिक फुटबॉल प्रतियोगिता का एक कोट्टयाधीश के मकान के मैदान में "फाइनल मैच" कराना, विद्यासागर कॉलेज की "मैगजीन" का सह-सम्पादक बनना, तत्कालीन प्रभावशाली संस्था "मारवाड़ी छात्र संघ" (सदस्य संख्या 1800) के मंत्री पद से प. बंगाल के गवर्नर श्री राजगोपालाचारी के सान्निध्य में हिन्दुस्तान क्लब में वार्षिकोत्सव का अनुष्ठान, जो समाज में चर्चा का विषय रहा था, अंततः इसका भारी बहुमत से 'सभापति' चुना जाना, वर्ष में लगभग ४० कार्यक्रम और नया छात्र निवास का प्रारम्भ कराना।

सम्मेलन से जुड़े मुझे ५० वर्ष हुए जिसके अन्तराल में विशिष्ट विभूतियों के सान्निध्य व उनके साथ काम करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

सन् १९४९ में मुझे कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन का मंत्रित्व पद सौंपा गया और १९५० में मात्र २६ वर्ष को आयु में मुझे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रधानमंत्री पद पर बैठा दिया गया। इसकी सम्भावना को मैंने कभी सोचा भी नहीं था और न चाहा था। उस समय बरार-केशरी व मध्य प्रदेश के अर्थमंत्री बृजलालजी वियाणी सम्मेलन के सभापति थे और चाहते थे कि स्वतंत्रता के बाद अब सम्मेलन को 'सामाजिक-सुधार' के क्षेत्र में जोरों से उतरना चाहिए। शायद मेरे परिवार को विगत पच्चीस वर्षों में सामाजिक सुधार को प्रवृत्ति से जुड़ने रहने के कारण तथा उपर्युक्त दोनों संस्थाओं में क्रियात्मक भूमिका के परिदृश्य ने इस 'प्रधान मंत्रित्व' से मुझे जोड़ने में प्रमुख भूमिका निभायी।

'सन् १९५० और सन् २००१' – इन पचास वर्षों की स्मृतियों में मेरे मानस पर कभी-कभी ऐसे दृश्य उभरते हैं जो मुझे मेरे निजी अस्तित्व से पूर्णतः परे और अलग दिखते है और ऐसा अनुभव होता है कि किसी आदि-शक्ति या दैवी शक्ति ने इन्हें संजोया और संवारा है।

ईश्वरदासजी जालान, उस समय प. बंगाल एसेम्बली के स्पीकर और बाद में कानून मंत्री, सम्मेलन की प्राणवायु थे और उपसभापति। सभी प्रकार के अनुनय-विनय के बावजूद वे कभी सम्मेलन के सभापति नहीं बने और समाज के वरिष्ठ लोगों को अध्यक्ष बनाते रहे। उनके सान्निध्य ने मुझे सिखाया कि व्यक्ति स्वयं में बड़ा नहीं होता है, बड़ा होता है संस्था का उद्देश्य, उसकी वृहत्तरता, औरों द्वारा व्यक्ति का सर्वेक्षण और प्रगति। सन् १९५४ में निपुण राजनेता सेठ गोविन्ददासजी को सम्मेलन का सभापति बनाया गया, कलकत्ता के मोहम्मद अली पार्क में विशाल अधिवेशन हुआ तब भी मुझे छोड़ा नहीं गया और प्रधानमंत्रित्व का भार मेरे कन्धों पर चलता रहा। रामेश्वरजी टांटिया को भी मेरे साथ जोड़ा गया था लेकिन वे कुछ समय बाद ही त्यागपत्र देकर अलग हो गये थे। सेठ गोविन्ददासजी का अध्यक्षीय कार्यकाल सन् १९६१ तक रहा।

इन ग्यारह वर्षों के प्रधानमंत्रित्व के कार्यकाल में ईश्वरदासजी, बृजलालजी, सेठ गोविन्ददास जी के अलावा सच्चे और यथार्थ रूप में समाज-सुधार के कट्टर पक्षपाती भंवरमलजी सिंघी और उनके संरक्षण में चल रही युगान्तर क्लब के अनेकानेक पुरुष व महिला सदस्यों के निकट से निकटतम मार्ग-दर्शन एवं कन्धे से कन्धा मिलाकर सम्मेलन के तत्कालीन बृहत्तर कार्यक्रमों – समाज सुधार, स्त्री शिक्षा, परिवार नियोजन आदि के आन्दोलनों का सहभागी और आयोजक होने का मुझे सौभाग्य मिला था। इनके अलावा विभिन्न प्रदेशों में ऐसे सैकड़ों व्यक्तियों से सम्पर्क साधा जो सच्चे मायने में समाज के उत्कर्ष के लिए पूर्णतः समर्पित थे लेकिन जिनमें कभी किसी पद के लिए उत्पन्न होती लालसा नदारद थी।

भंवरमलजी सिंघी की अगुवाई में कलकत्ता की सड़कों पर पर्दा विरोध आन्दोलन में शरीक रहने की प्रक्रिया के साथ जुड़े रहने का स्मरण कुछ जगह हाथापाई व दो-चार बार लाठियों के प्रहार व विरोधियों के थूक को फूलों के स्पर्श की तरह ग्रहण करने, भरे हाल में पीछे से महिलाओं के मुख से पर्दा खींच कर पिट जाने तक की हिम्मत को भुलाये नहीं भुलाया जा सकता।

दहेज के विरुद्ध आवाज, स्त्री शिक्षा की तीव्र आवश्यकता, मात्र व्यापार से हटकर सभी क्षेत्रों में प्रवेश-इनकी दहाड़ हजारों गांवों व शहरों की सभाओं में गुंजाई गयी। 'परिवार नियोजन' की बात और वह भी सन् १९५४ में मात्र सम्मेलन के मंच से ही उठायी गयी थी और मुझे वे दृश्य याद हैं जब इसकी व्याख्या के लिए विभिन्न स्थानों पर युवक वर्ग भंवरमलजी सिंघी को घेर कर बैठ जाता था।

सन् १९६२ से सन् १९६६ तक गजाधरजी सोमानी और १९६७ से १९७३ तक रामेश्वरजी टांटिया के सभापतित्व काल की स्मृतियां धूमिल हैं इसके सिवा कि सन् १९६१ के अधिवेशन में 'राजस्थान छात्र निवास' की स्थापना के लिए मेरे हाथ से लिखे गये चन्दे के बदले सम्मेलन के तत्कालीन प्रधानमंत्री रघुनाथ प्रसाद जी खेतान ने बैंक से रुपये उधार लेकर जमीन खरीदी, लेकिन निर्माण के काम का श्रीगणेश तक नहीं किया और सन् १९७१ के भारत-पाकिस्तान के युद्ध के समय पूर्वी बंगाल के विस्थापितों को राहत-कार्य सरकार से प्राप्त रकम के आधार पर समुचित रूप में किया गया जिसका जिम्मा उस अवसर पर नियुक्त मंत्री श्री दीपचन्द नाहटा व श्री बजरंगलाल जाजू ने सम्भाला। बाद में राहत कार्य के कोर्ट के केस को मैंने सन् १९७५ में कृष्णनगर की अदालत से खारिज करवाया तथा कुछ मुआवजा भी स्वयं भरा।

सन् १९७४ के प्रारम्भ में सभी युवक साथियों के आग्रह पर भंवरलालजी सिंघी को सभापति चुना गया, रांची में अधिवेशन हुआ एवं अन्य पदाधिकारियों के चयन का भार सिंघी जी को ही दे दिया गया। इससे संबंधित घटना आज भी मेरे दिमाग में है जिसे "समाज विकास" में प्रकाशित किया गया था :-

सन् १९७४ के मार्च का पहला दिन। व्यस्तता के बीच मैंने भंवरमलजी सिंघी को मेरे कार्यालय के मेरे कक्ष में पाया। सम-सामयिक बातें भी हुई और मेरी सारी आपत्तियों के बावजूद सम्मेलन के पुनः प्रधानमंत्रित्व का भार ढोने की मेरी स्वीकृति तो वे ले ही गये और सन् १९७७ में हैदराबाद में हुए अधिवेशन में भी उन्होंने मुझे नहीं छोड़ा।

मुझे आश्चर्य भी हुआ कि ११ वर्षों के प्रधानमंत्रित्व काल के बाद भी सिंघीजी का चयन मेरी ओर क्यों गया। मुझे लगा कि संगी-साथी, अपनेपन के साथ कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करने की क्षमता, उद्देश्य की पूर्ति एवं आर्थिक सम्बल में सहयोगी होने के मेरे जीवन के छोटे से अंश ने शायद उन्हें प्रभावित किया हो, जिसके फलस्वरूप उन्होने मेरे प्रति अपनी आस्था दिखायी। सन् १९७४ से १९७८ के पांच वर्षों का कार्यकाल सम्मेलन के संगठन को पुनः उजागर करने के प्रयासों में कोई कमी नहीं रही, कमी रहती भी कैसे जब हैदराबाद के हृदय रोग से आक्रांत छगनलालजी विजयवर्गीय जैसे कर्मठ व्यक्ति अपने रोग की परवाह किये बगैर मेरे साथ दौरे पर गये और वापस हैदराबाद लौटते समय बीच में ही ईश्वर ने उन्हें अपने पास बुला लिया। विभिन्न प्रांतों में समर्पित कार्यकर्तायों में किन-किन का नाम गिनाऊं जिन्होंने मुझे सम्मेलन व समाज के काम में एक छोटे भाई का-सा स्नेह और प्यार दिया और सामाजिक प्रगति की गाड़ी को आगे बढ़ाने में हर समय अपनी प्रस्तुति दिखाई।

सन् १९७९ में पुनः अधिवेशन अनुष्ठित हुआ। सिंघीजी के इशारे पर मैंने अध्यक्ष पद के लिए मेरा नाम प्रस्तावित किया लेकिन कुछ अन्य मित्रों ने बम्बई स्थित रामप्रसादजी पोद्दार का नाम अपनी ओर से प्रस्तावित किया। अखिल भारतीय समिति की बैठक बुलायी गयी और सम्मेलन के गुरुजनों जिनमें ईश्वरदासजी जालान, बजरंगलालजी लाठ, भंवरमलजी सिंघी आदि थे, के साथ हुई बातचीत की समाज विकास के मार्च-अप्रैल १९७९ अंक में अपने लेख में बजरंगलालजी लाठ ने निम्नलिखित शब्दों में उस दिन की कहानी को उद्घोषित किया :-

"श्री सिंघीजी के घर पहुँचने पर देखा वहां श्री रामप्रसाद पोद्दार अपने तीन साथियों के साथ मौजूद हैं, इधर भाई नन्दकिशोर जी अपने दो-तीन मित्रों के साथ उपस्थित हैं। बातें करीब ढाई घंटे तक चली और रात के ११ बजते-बजते मामला तय हुआ। अत्यधिक बहुमत होते हुए भी मेरे और अन्य बुजुर्गों के अनुरोध पर भाई नन्दकिशोरजी ने बड़े सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में अपना नाम वापस लेकर हम सबको गद्‌गद् कर दिया और उनकी इस घोषणा के साथ ही श्री रामप्रसादजी पोद्दार ने अपने हृदय से लगाकर एक अपूर्व दृश्य उपस्थित कर दिया।"

बम्बई अधिवेशन में रामप्रसादजी ने अध्यक्ष पद ग्रहण किया और एक को छोड़कर बाकी सभी प्रान्तीय सम्मेलनों ने एक स्वर से मुझे उप-सभापति चुना। यद्यपि अध्यक्ष पद के चुनाव में हम दोनों प्रतिद्वंद्वी थे, लेकिन उस दिन से हम दोनों पूर्णरूप से एक-दूसरे के सहयोगी बन गये। सम्मेलन के अनेकानेक कार्यों में सन् १९८० में उड़ीसा में समाज पर बड़े रूप से हुए हमले की घटना, श्री बजरंगलाल जाजू का २४ सांसदों के साथ भारत के प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी से मुलाकात, दो दिनों में हमले बन्द व सम्बन्धित उड़ीसा के मंत्री का मंत्रिमंडल से निष्कासन एक प्रमुख वाकया रहा।

सन् १९८२ में पुनः अध्यक्षीय चुनाव का प्रश्न उठा। सर्वसम्मति से मुझे सभापति चुना गया और अधिवेशन हुआ जमशेदपुर में। स्वागताध्यक्ष थे रामेश्वरलालजी अग्रवाल, स्वागतमंत्री श्री मुरलीधर केडिया व उपस्वागताध्यक्ष श्री सत्यनारायण मित्तल। उस स्वर्णिम दिन को मेरी स्मरणशक्ति रहते मैं कैसे भूल सकता हूँ जब मुझे बग्घी में बैठाया गया, ८ से १० हजार लोगों के समूह के साथ अध्यक्षीय जुलूस निकाला गया और आधे से अधिक रास्ते ऊपर से फूलों की वर्षा होती रही। मेरी मान्यता के अनुसार इसमें मेरा कोई कृतित्व नहीं था वह उस आशीर्वाद का फल व परिदृश्य था जो १९७९ में बुजर्गों ने ऊपर लिखित वाकये के कारण अपने आशीर्वाद से मेरे भविष्य को संजोया था।

सन् १९८२ से सन् १९८६ का पूर्वार्द्ध का मेरे सभापतित्व का काल अपनी कुछ विशिष्टताओं के साथ सम्पन्न हुआ था-

(१) सन् १९८३ के शेष में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन का पटना श्रीकृष्ण मेमोरियल हाल में देश के कोने-कोने से आई हुई लगभग २००० महिलाओं की उपस्थिति में अधिवेशन व सुशीलाजी सिंघी की अध्यक्षता व श्रीमती सुशीला मोहनका के मंत्रीपद से सुशोभित गठन।

(२) जनवरी १९८५ में अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच का गौहाटी (असम) में अत्यधिक उत्साह व भव्यता के साथ अधिवेशन और श्री प्रमोद सराफ का अध्यक्षीय पद सम्भालना।

(३) सन् १९८६ के प्रारम्भ में भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह द्वारा सम्मेलन की स्वर्ण जयंती का अत्यधिक आकर्षक व रोमांचकारी उद्घाटन जिसमें भाग लेने के लिए सम्मेलन के विभिन्न प्रांतों के सभापति व मंत्रीगण पधारे थे और जिसने सम्मेलन की साख अधिक उजागर की थी।

इस अवधि में सम्मेलन के अन्य कार्यक्रम जैसे – सामाजिक सुधार, शिक्षा, समरसता, संरक्षण आदि क्षेत्रों में भी शिथिलता नहीं आने दी गयी थी, बल्कि अन्य दौरों के अलावा महिला सम्मेलन व युवा मंच के गठन के लिए मैंने उनके प्रतिनिधि मण्डलों के साथ देश के सभी भागों का दौरा किया था।

मार्च १९८६ में श्री हरिशंकर सिंघानिया अध्यक्ष निर्वाचित हुए और कानपुर में अधिवेशन अनुष्ठित हुआ, लेकिन अध्यक्षता के लिए श्री सिंघानिया जी की स्वीकृति निर्वाचन के बाद मुझे अपनी जिम्मेदारी व गारंटी पर लेनी पड़ी थी। श्री रतन शाह महामंत्री बनाये गये। लेकिन इस अवसर के बाद पुराने कार्यकर्ताओं को दर-किनार कर दिया गया। यद्यपि आर्थिक संकट प्रायः नहीं-सा रहा, लेकिन महामंत्री की रिपोर्ट के अनुसार सामाजिक सुधार कार्यक्रम पर रोक, राजस्थानी भाषा व मीरा जयंती आदि सम्बन्धी आयोजन, लड़खड़ाते हुए चल रहे कार्यों एवं आर्थिक समाधान के लिए आजीवन-सदस्य योजना की शुरुआत, कुछ शोध-ग्रन्थों को एकत्रित करना, सामूहिक विवाह योजना की निष्फलता आदि कार्य दर्शाये गये। यद्यपि श्री हरिशंकर सिंघानिया ने आवश्यकतानुसार सभी प्रकार के सहयोग देने में कोई कसर नहीं रखी।

सन् १९८९ में रामकृष्ण सरावगी ने रांची अधिवेशन में अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया। स्थानीय अव्यवस्था के बीच श्री रतन शाह उप-सभापति व दुलीचंदजी अग्रवाल महामंत्री निर्वाचित हुए। इसके बाद सम्मेलन की पहली अखिल भारतीय समिति की बैठक पटना में बुलाई गई। उस बैठक पर रोक का कलकत्ता हाईकदोर्ट का आदेश बाई कंसेंट (By Consent) से दिलवा दिया गया। कार्यकारिणी का गठन नहीं हो सका, लेकिन सम्मेलन की गतिविधियों पर कोई रोक नहीं लगायी गयी, फिर भी नये पदाधिकारियों की आपसी रंजिश के कारण नवंबर १९८९ में रामकृष्णजी का त्याग-पत्र एवं नवंबर १९९० में मृत्यु, महामंत्री को हटाने की कोशिशें, सभी कार्यवाहियां ठप्प। अत्यधिक अर्थाभाव के कारण सन् १९९२ के शेष तक सम्मेलन कार्यालय में प्रायः पूर्ण निष्क्रियता जबकि सम्मेलन के उपसभापति कलकत्ता स्थित थे और रामकृष्णजी की मृत्यु के बाद पूरे रूप से उत्तरदायी हो गये थे। सम्मेलन कार्यालय का रु. १२५/- प्रतिमास के भाड़े के रुपये का भी प्रबंध नहीं था और पुराने दरवान मथुरा सिंह को स्वयं विभिन्न लोगों से मांग कर चुकाने पड़े थे। मैंने सम्मेलन में ऐसी स्थिति कभी नहीं देखी थी और ईश्वर से यही प्रार्थना है कि भविष्य में इस उपयोगी संस्था में ऐसे पदाधिकारियों का समावेश व ऐसी स्थिति कभी उत्पन्न न होने दें।

दुमका के श्री ताराचंद जी दारुका के अथक प्रयास से और श्री राजेश खेतान की कोशिश से कोर्ट-आर्डर से कुछ अखिल भारतीय समिति सदस्यों की बुलाई गई सभा में रांची में सन् १९९३ में मुझे सर्वसम्मति से सभापति चुना गया। जब प्रदेशों से नाम मंगाये गये तो बिना मेरी किसी याचना के सबसे पहले गिरधारीलाल जी सराफ ने मेरे नाम की प्रस्तावित करने की सूचना मुझे दी एवं बाद में अन्य चार प्रातों से भी यही सूचना मिली। पिछले सत्र में सम्मेलन की दुर्दशा कराने के प्रधान व्यक्ति ने मुझसे आश्वासन चाहा था कि अगले सत्र में उन्हें सम्मेलन का सभापति बना दिया जाए जिसे मैंने संपूर्णतः नकार दिया था। फलतः दिल्ली के १९९३ के अधिवेशन के ३-४ दिन पहले कलकत्ता हाईकोर्ट से नया आर्डर निकलवा कर सम्मेलन की निष्क्रियता व मुझे नाकाम करने की कोशिश की गयी थी लेकिन मेरे सम्माननीय कानूनविदों ने तीन सप्ताह में ही इस केस को 'डिसमिस' करा दिया था।

सन् १९९७ में हैदराबाद में अगला अधिवेशन हुआ तब भी सभी प्रांतों ने सभापति पद के लिए मेरा नाम ही प्रस्तावित किया था। उसी व्यक्ति ने फिर कोशिश की कि उसे वरिष्ट उप-सभापति बना दिया जाए और अगले साल में सभापति, और जब उपस्थित समुदाय ने इसे अस्वीकृत कर दिया तो मुझे, महामंत्री श्री सीताराम शर्मा व अन्य कुछ पदाधिकारियों के साथ वहाँ अशोभनीय व्यवहार किया गया। लेकिन स्वागताध्यक्ष डॉ. आर. एम. साबू की सतर्कता के कारण स्थिति नियंत्रित की गयी। इस अधिवेशन के पहले मेरे व सम्मेलन पर तीन मुखौटों के मार्फत अनर्गल दोषारोपण करते हुए कागजात बांटे गये थे लेकिन तत्कालीन महामंत्री श्री दीपचंद नाहटा के जवाबी पत्र से उनकी सिट्टी-पिट्टी बंद हो गई। इन्हीं लोगों ने २४ मार्च २००१ की अखिल भारतीय समिति की बैठक में वही क्रिया पुनः दोहराई। ऐसी निकृष्ट हरकत कैसे व्यक्ति कर सकते हैं, यह सभी जानते हैं। इन हरकतों का सटीक जवाब और करारी चोट सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति श्री हरिशंकर सिंघानिया द्वारा जनवरी १९९८ में मुझे भेजा गया निम्न पत्र स्वयमेव देता है:–

पिछले चार वर्षों में आपके कुशल नेतृत्व में सम्मेलन ने अपने निहित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जो प्रयास किए हैं, जो निःसंदेह सामाजिक संप्रेषण के अंतर्गत सराहनीय हैं। आशा है विगत वर्षों की भांति आने वाले वर्षों में भी आपके नेतृत्व में सम्मेलन अपने उद्देश्यों को और भी परिष्कृत रूप प्रदान करन में समर्थ एवं सफल होगा।

पिछले आठ वर्ष के कार्यकाल पर दृष्टिपात करूं तो मुझे लगता है कि सम्मेलन को अपनी पुरानी आभा और अस्मिता से पुनः युक्त कराने में मेरी नहीं बल्कि किसी 'आदि या दैवी शक्ति' ने मेरे और महामंत्री श्री दीपचंद नाहटा एवं सन् १९९७ से श्री सीताराम शर्मा और अन्य समर्पित कार्यकर्ताओं एवं अनन्य सहयोगियों के हाथों इसे अंजाम दिलाया है, यथा:–

(१) प्रायः-प्रायः तहस-नहस किए गए संगठन में पुनः स्फूर्ति आई, समाज विकास का पुनः प्रकाशन प्रारंभ हुआ, उसका न्यूजपेपर व पोस्टल रजिस्ट्रेशन फिर से कराया गया और लगभग ६००० प्रतियां पोस्ट होने लगी।

(२) सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा सम्मेलन की हीरक जयंती का उद्घाटन और उनका स्वर्णाक्षरों में दर्ज किए जाने वाला अलौकिक अभिभाषण जिसमें देश के हर क्षेत्र में, विशेषकर स्वतंत्रता संग्राम में, हमारे समाज के अवर्णित योगदान और उनके जारी क्रम का उल्लेख।

श्रीमती अलका बांगड़ की अध्यक्षता व श्रीमती आशा माहेश्वरी के मंत्रित्व में सम्मेलन की महिला समिति द्वारा अभूतपूर्व कार्यों की शृंखला में जो इन दो सत्रों में सर्वाधिक समाजोपयोगी कार्य हुए जिनमें लाखों रुपये खर्च हुए, यथा :

(क) विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन व सामूहिक विवाह के कई आयोजन जिनकी उपयोगिता से प्रभावित होकर सम्मेलन की कई शाखाओं ने व अन्य संस्थाओं ने ऐसे आयोजन किए एवं अन्य समाजों ने इस विधा को अपनाया।

(ख) समाज की उद्यमी व व्यवसाय में युक्त महिलाओं के उत्पादों व वस्तुओं की प्रदर्शनी जिससे इस दिशा में प्रवेश के लिए समाज की महिलाएं अधिक प्रवाहित हों।

(ग) कारगिल युद्ध के ६५ शहीदों की विधवाओं या परिवार-जनों को जोधपुर में सेना के पूर्ण सहयोग से आयोजित समारोह में प्रत्येक को रु. २५,०००/- के चेक याने कुल रुपये १६,२५,०००/-। अन्य प्रदेशों ने भी शहीदों की सहायता के लिए काफी अनुदान भेजे।

(घ) राजस्थान अकाल में लगभग ८,००,०००/- खर्च कर विविध सहायता, विनष्ट हुए पशुधन वालों को गौ-दान, लगभग १० जगहों पर ट्यूबवेल रोपण आदि।

(च) विकलांग बच्चों का सान्निध्य व उनकी कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति।

(छ) जरूरतमंद छात्राओं को बिना सामाजिक भेदभाव के कम्प्यूटर-शिक्षा के लिए बारंबार छात्रवृत्तियां दी।

सच पूछा जाये तो मेरे इन सत्रों का सफलता का आधा श्रेय मैं श्रीमती अलका बांगड़ और उनके द्वारा लगग १५० से अधिक एकत्रित की गयी बहनों को देना चाहूंगा जो आवश्यकतानुसार किसी भी कार्य में पीछे नहीं रहीं। उनका मेरे प्रति स्नेह, प्यार, आदर जो भी कहूं वह भी मेरे जावन की एक नई अस्मिता के रूप में उभर कर आई, जो शायद ही कभी किसी को मिल पाती है। मेरे लिये इस ऋण से उऋण होना इस जीवन में संभव नहीं है। एक एक समय किसी विशेष समाजोपयोगी विधा को समाज द्वारा स्वीकृत कराना उस समय की प्रधान उपलब्धि होती है और इसे स्थापित किया सामूहिक विवाह व परिचय सम्मेलन की विधा ने।

(४) विभिन्न प्रदेशों के समयानुसार दौरे, प्रादेशिक सम्मेलनों के अधिवेशन में एवं जिला सम्मेलनों में उपस्थिति आदि। लेकिन सर्वाधिक महत्व का रहा महाराष्ट्र का नवंबर १९९८ का दौरा। मेरे द्वारा लगातार ८ दिन का लगभग ४००० किलोमीटर, श्री वीरेंद्र धोका व अन्य स्थानीय समर्पित कार्यकर्ताओं के साथ, लगभग २५ शहरों में सभाएं भी। इसके परिणामस्वरूप जनवरी १९९९ में लातूर में हुए अधिवेशन में लगभग २५००० स्त्री-पुरुषों की उपस्थिति भी दर्ज की गई।

(५) लातूर भूकंप में ३५,०००/- एवं उत्कल के चक्रवाती तूफान के लिए रु. १,४५,०००/- मात्र सांकेतिक रूप में 'रामकृष्ण मिशन' को निवास स्थान निर्माणार्थ दिए गए। गुजरात में भूकंप की विनाशलीला में अनेक प्रादेशिक सम्मेलन व शाखाओं ने लाखों रुपयों की राहत सामग्री भेजी तथा रुपये अनुदानित किये, जिसमें पश्चिम बंगाल प्रांतीय सम्मेलन द्वारा रु. एक लाख का अनुदान भी शामिल था।

(६) सम्मेलन का स्थापना दिवस समारोह प्रारंभ।

(७) बांग्ला भाषा साहित्य जिसमें बंगाल-राजस्थान की गौरवगाथा या राजस्थान संबंधी आलेख प्रमुख रूप से ऊभर कर आये, उनके चार साहित्यकारों को रामप्रसाद पोद्दार बांग्ला साहित्य पुरस्कार एवं अन्य अनुदानदाताओं द्वारा दिये गये पुरस्कारों से नवाजा गया।

(८) वनवासी क्षेत्र की उन्नति में रत 'फ्रेंड्स आफ ट्राइबल सोसायटी' को रु. ४१,०००/- का सांकेतिक अनुदान दिया गया।

(९) अनेक स्थानों पर वधू-दहन विरोधी आंदोलन व कार्यवाहियां केंद्रीय सम्मेलन के अलावा स्थानीय शाखाओं द्वारा की गयी और दो स्थानों पर दोषी परिवारों को समाज-बहिष्कृत घोषित किया गया।

(१०) नेपाल मारवाड़ी परिषद द्वारा काठमांडू में आयोजित अधिवेशनों व वहां के जिला कार्यक्रमों में मैंने स्वयं भाग लिया तथा नेपाल में बसे अनेक समाज बंधुओं को सम्मेलन से जोड़ा। इस अवसर पर वहाँ रु. एक करोड़ १० लाख के शिक्षा कोष की स्थापना की घोषणा भी हुई।

(११) असम एवं अन्य जगहों पर समाज पर हमले किए गए तथा समाज को लांछित करने की कोशिश की गयी। उनके विरुद्ध केंद्रीय सम्मेलन व प्रादेशिक सम्मेलनों ने अविलंब आवश्यक कार्यवाहियां की और 'दी टेलीग्राम' एवं एक प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री ने माफी भी मांगी।

(१२) कुछ प्रदेशों में शिक्षा समितियां पूर्ण कार्यरत रही और जरूरतमंद छात्रों की निरंतर सहायता की।

(१३) विविध क्षेत्रों में उच्चतम महारत प्राप्त करने वाली स्त्रियों को कुछ प्रदेशों ने सम्मानित व पुरस्कृत किया।

(१४) सम्मेलन की पारिवारिक समन्वय समिति विवादों को सुलझाने में निरंतर मदद करती रही।

(१५) राजस्थान प्रदेश के जयपुर में आयोजित स्वर्ण जयंती समारोह में भाग लिया गया तथा समुचित संपर्क स्थापित किया गया।

(१६) निरंतर चल रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला अलग से दी गयी है जो सम्मेलन की जीवंतता का प्रकाशमान उदाहरण है। उससे यह भी प्रदर्शित है कि सम्मेलन द्वारा स्थापित महिला सम्मेलन व युवा मंच का एक छोटे से तबके को छोड़कर बाकी सभी जगहों पर आपसी सहयोग में कहीं कमी नहीं है।

हर संस्था के अपने उद्देश्य होते हैं। सम्मेलन एक ऐसी संस्था है जो प्रायः सभी अन्य संस्थाओं से भिन्न है। देश के कोने-कोने में बसे राजस्थानी, हरियाणवी, मालवी आज भी मात्र 'मारवाड़ी' शब्द से परिचित होते हैं और लंबी दृष्टि से इन सबों की प्रायः एक प्रकार की समस्याएं उभर कर आती है जिनके समाधान का रास्ता सरल एवं समयबद्ध तो कतई ही नहीं बल्कि ऐसे व्यक्तियों द्वारा संभव होता है जिनके पास मानस व क्षेत्र की विशालता के साथ-साथ अन्य अनेक प्रकार के साधन हों।

मेरे चिंतन के अनुसार २१वीं सदी का पूर्वार्द्ध बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से आमूल-चूल परिवर्तित रूप लेकर उभरेगा, जिसकी लेशमात्र शुरुआत अब दृष्टिगत होने लगी है। विशाल संसार का पुरातन युग के एक गांव के अर्थशास्त्र समतुल्य उभरना, सामाजिक और सांस्कृतिक तौर पर नित नवीन संदर्भ उभरना, राजनैतिक, आर्थिक व जातिगत भेद-भावों के चढ़ते-उतरते परिदृश्य, औद्योगिक व व्यापारिक तरीकों में अविश्वसनीय नए तौर-तरीके आदि अनेक बातें हैं जो इस सम्मेलन व समाज की सुरक्षा से जुड़े हुए हैं। इनके दूरगामी समाधान के निर्देशन के लिए जैसे मानस के व्यक्तियों की आवश्यकता होती है उनका अनुसंधान व उनका समूह ही सम्मेलन जैसी संस्था को दिनों-दिन अधिक आवश्यक होगा। समाज के जीवन-मरण और उत्कर्ष के जिन पथों का निर्माण करते सम्मेलन ने अपने ६६ वर्षों की यात्रा की है, दैवी-शक्ति समदृश्य साधनों से इसे पूरित करें, यही इसकी आंतरिक शक्ति बनी रह सकती है।

मेरी इस पचास-वर्षों की यात्रा में सैकड़ों-हजारों भाई-बहनों के सहयोग व स्नेह के (नाम लिखूं तो कम से कम ५०० होंगे) परिप्रेक्ष्य में मैं उनके चरणों में शीश ही नवा सकता हूँ। साथ-साथ यह तमन्ना है कि आने वाले बचे कुछ वर्षों में आदि-शक्ति उनके स्नेह व सौहार्द में कमी न आने दें।

जालान जी सम्मेलन के पर्यायवाची बन गये थे

सीताराम शर्मा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

श्री नन्दकिशोर जालान अपने जीवनकाल में ही मारवाड़ी सम्मेलन के पर्यायवाची बन गये थे। वे सम्मेलन से अपने युवाकाल – १९५० में मात्र २६ वर्ष की आयु में ही राष्ट्रीय महामंत्री निर्वाचित हुए जिस पद पर वे १९६१ तक रहे, १९७४ में पुन: राष्ट्रीय महामंत्री बने और फिर १९८२ में जमशेदपुर में सर्वसम्मति से पहली बार राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। जब-जब सम्मेलन को विपरीत परिस्थितियों से गुजरना पड़ा, जालान जी संकट-मोचक के रूप में उभरे। १९८९ से चार वर्षों तक सम्मेलन एक गम्भीर संकटकालीन परिस्थितियों से गुजर रहा था। इन चार वर्षों में सम्मेलन की गतिविधियाँ प्राय: बंद हो गयी थी, हाई कोर्ट में मामला चल रहा था, सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय में ताला लटक रहा था, महीनों का भाड़ा बकाया था। ऐसी आपत्तिकालीन स्थिति में १९९३ में जालान जी को दिल्ली अधिवेशन में पुन: राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। जालान जी के साथ मेरी घनिष्ठता का जो सिलसिला इसी १९९३ में मेरे राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री नियुक्त होने से आरम्भ हुआ, जो उनके जीवन के अंतिम क्षणों तक बना रहा।

जालान जी के साथ १९९३-९७ तक राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री के रूप में तथा १९९७-२००१ तक राष्ट्रीय महामंत्री के पद पर काम करने और बहुत कुछ सीखने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ। तत्पश्चात उन्हीं के आग्रह एवं दबाव पर मैं २००१-२००४ तक पुन: राष्ट्रीय महामंत्री, २००४-२००६ में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं २००६-२००८ तक राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित हुआ। जालान जी का सम्मेलन के प्रति जो प्रतिबद्धता थी, उसका उनके पद से कोई सम्बंध नहीं था। वे २००१ से सम्मेलन के किसी भी पद पर नहीं थे, लेकिन वे हम सब के लिये सम्मेलन के महात्मा गांधी थे। उनकी सम्मेलन के प्रति प्रतिबद्धता, समर्पण एवं ईमानदारी में कभी कोई कभी नहीं आयी एवं उनके इन्हीं गुणों ने मुझे सम्मेलन से वर्षों तक जोड़कर रखा। जालान जी ने सम्मेलन को सदैव एक नयी उँचाई पर ले जाने का प्रयास किया। ये संयोग नहीं बल्कि उनकी कटिबद्धता थी कि सम्मेलन की स्वर्ण व हीरक जयंती पर भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह एवं डॉ. शंकर दयाल शर्मा पधारे।

बात १९९५ की है। संयुक्त राष्ट्रसंघ पर लिखित मेरी एक पुस्तक के राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा विमोचन का राष्ट्रपति भवन, दिल्ली में कार्यक्रम था। जालान जी मेरे कार्यक्रम के लिये दिल्ली पधारे। जब मैंने उन्हें मेरी पुस्तक के विमोचन के लिये दिल्ली आने के लिये धन्यवाद दिया तो उन्होंने स्पष्ट कहा, "मेरा अपना भी स्वार्थ था। आपके राष्ट्रपति जी से अच्छे सम्बंध हैं, आपको उन्हें सम्मेलन के हीरक जयंती समारोह में लाना है। इससे सम्मेलन की गरिमा बढ़ेगी।" सम्मेलन हर क्षण उनकी सोच में बसता था।

वर्तमान में अम्हर्स्ट स्ट्रीट मारवाड़ी सम्मेलन भवन के क्रय में भी जालान जी का ही हाथ था। उनका प्राय: प्रतिदिन फोन आता था, या यूँ कहें कि मैं उन दिनों रोज सुबह उनके फोन से ही उठता था। मेरी पत्नी तो जब भी सुबह फोन की घंटी बजती थी, वो फोन लाकर मुझे दे देती और कहती कि जालान जी का ही फोन होगा। एक दिन जालान जी ने मुझसे पूछा, "महामंत्री जी सम्मेलन के लिये मकान खरीदेंगे।" मैंने कहा "यह भी तो आपको ही तय करना है।" जालान जी ने कहा "मैं तो अब सम्मेलन में कुछ भी नहीं हूँ।" मैंने जिज्ञायावश पूछा "बात क्या है?" यह मकान एक समय जालान जी के परिवार का ही था जिसे बिड़ला परिवार को बेच दिया था। बिड़ला परिवार ने जब इस मकान को बेचने का निर्णय लिया तो उन्होंने प्रथम जालान जी की रुचि जाननी चाही। मुझे जब जालान जी ने यह सब बताया तो मैंने कहा कि वे पहले अपने पुत्रों से बात कर परिवार में निर्णय लें तो उचित रहेगा। यह जालान जी का सम्मेलन के प्रति प्रेम था कि प्रस्ताव प्राप्त होते ही पहले उनके मन में सम्मेलन की बात आयी, परिवार की नहीं। २-३ दिन बाद जालान जी ने पुन: मुझे फोन किया और कहा कि परिवार में अभी आवश्यकता नहीं है और मन भी नहीं है। अत: सम्मेलन इस पर विचार कर सकता है। मुझे बराबर यह लगा कि जालान जी ने भवन क्रय के विषय में परिवार से अधिक सम्मेलन को प्रथमिकता दी। यह थी उनकी सम्मेलन के प्रति प्रतिबद्धता। एक भव्य सम्मेलन भवन का निर्माण जालान जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी!

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के स्तम्भ पुरुष, भीष्म पितामह एवं प्रेरणा पुरुष श्री नन्दकिशोर जालान आज हमारे बीच में नहीं हैं। उनका स्वर्गवास सम्मेलन ही नहीं बल्कि समाज के लिये भी एक अपूरणीय क्षति रही है। वे आजीवन सम्मेलन से जुड़े रहे और आज जो सम्मेलन का स्वरूप है, उसे स्थापित एवं विकसित करने में श्री जालान जी का अतुलनीय योगदान रहा है। जब भी सम्मेलन में विघटन या बिखराव की स्थिति आयी, उन्होंने उसे सँभाला ही नहीं बल्कि नेतृत्व भी प्रदान किया। बढ़ती उम्र एवं अस्वस्थता के बावजूद अंतिम दिनों तक सम्मेलन से वे न केवल सक्रिय रूप से जुड़े रहे थे बल्कि कई जिम्मेदारियाँ भी सँभाले रखा। मारवाड़ी सम्मेलन उनकी सेवाओं के लिये सदैव ऋणी रहेगा।

JK PAPER'S COMMITMENT TO ENVIRONMENTAL STEWARDSHIP

WE PLANT 220 SAPLINGS EVERY MINUTE AND OVER 3,19,000 SAPLINGS EVERY DAY FOR NURTURING THE ENVIRONMENT

For long, the paper industry has been tainted as one of the causes of deforestation, but we are here to change the narrative. At JK Paper, we are committed to care for the environment. We do not destroy natural forest trees to make our paper, instead leverage on Agro/Social Farm Forestry.

Our Agro/Social Farm Forestry, started in year 1991, relies on growing and harvesting unique varieties of trees (Subabul, Casuarina & Eucalyptus). Through our diligent R&D efforts, these special varieties of trees helped farmers get 2-3 times higher yields compared to traditional seed route plantations.

In FY 24, JK Paper distributed over 11.64 Crores saplings to farmers, which are harvested to produce paper. Since inception, JK paper has planted 9.50 lakhs acres of land under its Agro Social Farm Forestry Program. This program has not only positively impacted the environment, but also yielded livelihood opportunities for over 1,00,000 + lakhs farmer families. You can help us turn things around by choosing sustainable paper solutions and pave a path for a better tomorrow.

We are a Carbon Positive Company

JK PAPER LTD.
Creating lasting impressions

Delhi: 011-68201547 • Kolkata: 033-22486183 • Mumbai: 022-22810154 • Chennai: 044-25611847
marketing@jkmail.com • www.jkpaper.com /jkpaperindia • /jkpaperindia

सम्मेलन के "प्रेरक पुरुष"

नन्दलाल रूँगटा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

स्व० नन्द किशोर जी जालान से सम्मेलन के मंच पर मेरी पहली मुलाकात पटना में १९९७ में हुई थी। जब वे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अधिवेशन में पधारे थे। जब मैं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष के रूप में २००० में निर्वाचित हुआ, उस समय फोन पर उनका आशिर्वाद प्राप्त हुआ।

२००१ में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का चुनाव होना था तथा उसके लिए अखिल भारतीय समिति की बैठक पटना में कराने की जिम्मेदारी, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में मुझे दी गई। वह बैठक काफी तनावपूर्ण थी, परन्तु सबके सहयोग से श्री मोहन लाल तुलस्यान निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये। इस दौरान स्व० जालान जी से सम्मेलन के बारे में काफी बातचीत हुई और उनके नजदीक आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

२००४ में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत होने के बाद स्व० जालान जी के निवास स्थान पर जाने का काफी मौका मिला और मैंने पाया कि उनमें सम्मेलन को सदा आगे बढ़ाने की इच्छा और चेष्टा रहती थी।

मेरें अध्यक्ष काल, २०१० में, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के स्थापना की कौस्तुभ जयन्ती समारोह में, भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल जी पधारी थी। इस सुवसर पर हमनें स्व० जालान जी का विशेष सम्मान करने का निर्णय लिया। हालांकि वे अस्वस्थता के कारण स्वयं नहीं आ सके और उनके सबसे छोटे सुपुत्र श्री पवन कुमार जी जालान (वर्तमान में राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री है) ने यह सम्मान स्वीकार किया।

स्व० जालान जी एक अच्छे इन्सान, सौम्य स्वभाव, मृदुभाषी, दुरदर्शी एवं सम्मेलन के लिए समर्पित व्यक्ति थे। वे सदा मारवाड़ी भाषा के प्रचार-प्रसार के हिमायती रहें। स्व० जालान जी हमेशा सम्मेलन के संगठन को मजबुत करने एवं समाज सुधार के लिए निरंतर प्रयास किये। उनके प्रथम अध्यक्षीय काल में सम्मेलन को अपना संविधान मिला। स्व० जालान जी सदा ही सम्मेलन के "प्रेरक पुरूष" रहेंगे। उनकी १००वीं जन्म जयंती पर मेरा श्रद्धापूर्वक नमन एवं हार्दिक बंदन।

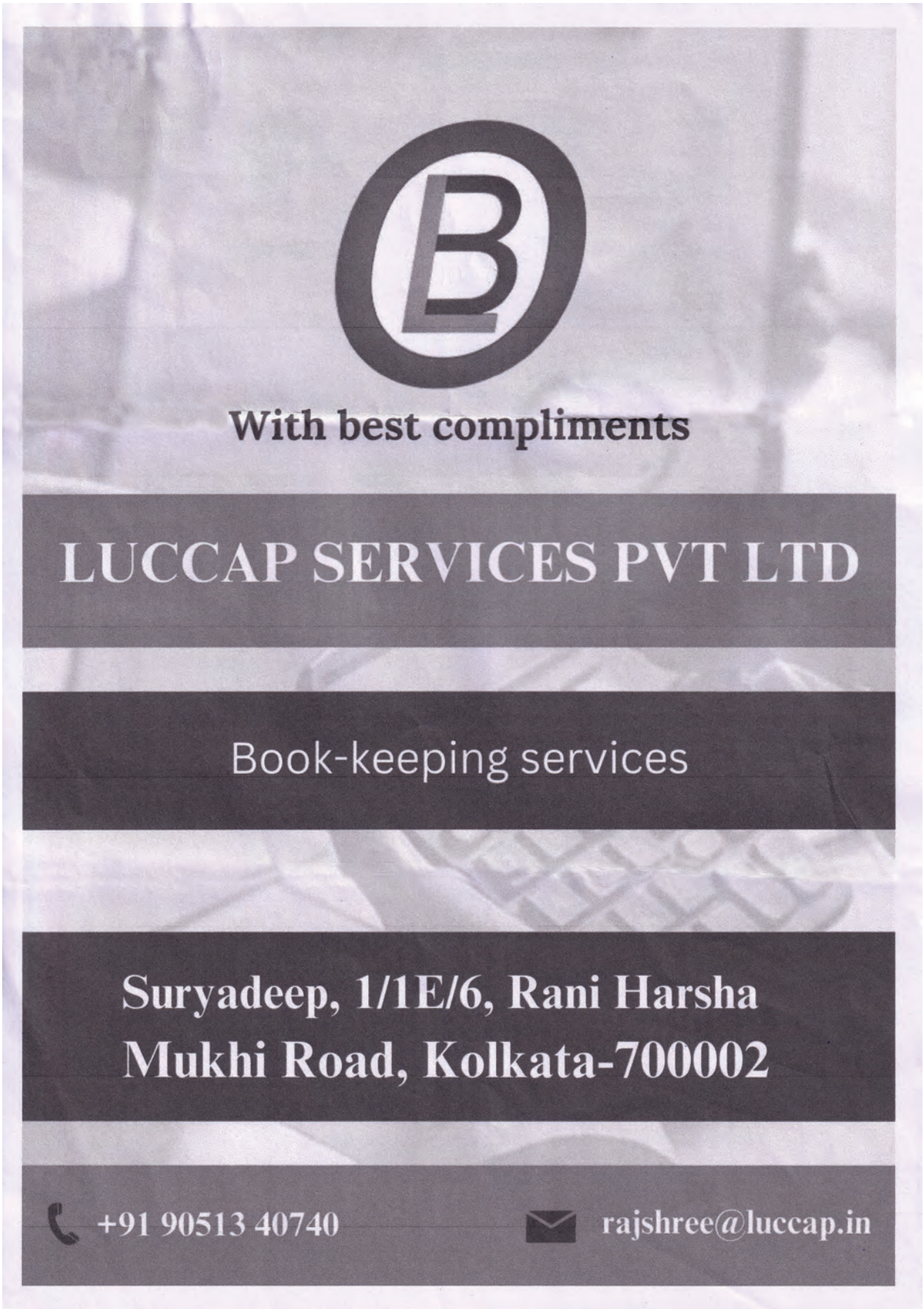
With best compliments
LUCCAP SERVICES PVT LTD
Book-keeping services
Suryadeep, 1/1E/6, Rani Harsha
Mukhi Road, Kolkata-700002
+91 90513 40740
rajshree@luccap.in

जालान जी एक असाधारण व्यक्तित्व थे

हरि प्रसाद कानोड़िया
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

श्री नन्दकिशोर जालान बहुमुखी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी प्रशंसा काफी सुनी थी। उनसे मेरा परिचय श्री इंद्र चंद संचेती जी ने १९७० में करवाया था। १९७१-७२ में कलकत्ता चैंबर ऑफ कॉमर्स में उनके साथ मुझे काम करने का अवसर मिला था।

जालान जी एक आसाधारण व्यक्तित्व थे। वे सदा समाज सेवा करने में लगे रहे साथ ही देश की प्रगति के लिए कोई भी कार्य करने के लिए अग्रसर रहते थे। वे हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते और किसी भी समस्या के समाधान में सामूहिक प्रयासों को प्राथमिकता देते थे। किसी के साथ अपने मित्रता को बखूबी निभाते थे। संकट की घड़ी में भी मित्र की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते। किसी ने भी आज तक उनकी आलोचना नहीं की है ना ही उनके दिशा-निर्देश को कभी किसी ने गलत कहा है। श्री जालान जी सकारात्मक आलोचना करने व सुनने के पक्षधर थे ताकि दूसरों को भी इस बात का एहसास हो सके कि वह कहाँ गलती कर रहे हैं।

उनकी समाज की सेवा करने की ललक और समाज के कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता अति सराहनीय है। जालान जी का ध्येय हमेशा यह रहा है कि किसी भी कार्य को बेहतरीन तरीके से करें एवं जहां तक संभव हो सके समय पर उसे पूरा अवश्य करें। उम्र के आठवें दशक में भी जालान जी में संस्था के लिए अनुदान जुटाने की अदभुत क्षमता थी। वे अपने हर प्रयासों में सफल होते रहे। मैं श्री जालान जी को याद करने से हमेशा प्रेरित होता हूँ।

कलकत्ता चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स से मुझे जोड़ने का वाक्या काफ़ी दिलचस्प है। मेरे स्व० जगजीवन राम से घनिष्ठ संबंध थे। वे उस समय उप प्रधानमंत्री हुआ करते थे। जालान जी ने मुझसे कहा कि मैं जगजीवन राम को चेम्बर के कार्यक्रम में आमंत्रित करूं। तब चेम्बर का नाम कोलकाता ट्रेड एसोसिएशन हुआ करता था। मैंने उन्हें आमंत्रित किया। जब वे आए कोलकाता ट्रेड एसोसिएशन बदलकर कलकत्ता चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स हो गया। इसके बाद मेरी घनिष्टता जालान जी के साथ बढ़ी।

जालान जी १९५० में मात्र २६ वर्ष की आयु में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री पद पर आसीन हुए थे। जालान जी ने मुझे विशुद्धानंद सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल कमिटी में लिया और अस्पताल के प्रांगण में एक विशाल बिल्डिंग खाली कराई गयी, मरम्मत कराकर नया बनाया गया। उसमें डाक्टर चेम्बर भी बनाया गया।

इस संस्था के द्वारा समाज के हर क्षेत्र का सर्वांगीण विकास, पर्दा प्रथा, दहेज, दिखावा, एवं अन्य बेकार की प्रतिबन्धता से निष्कासन, व्यापार के अलावा अन्य सभी क्षेत्रों में समाज का पूरजोर पदार्पण करना आदि जैसे उद्देश्यों को लेकर उन्होंने काम किया और सफलता पायी।

समाज में पर्दा प्रथा के विरुद्ध आवाज़ उठाने, स्त्री शिक्षा को समर्थन देने में हमेशा आगे रहे हैं और सबको प्रेरित करते रहे हैं।

४ प्रांतो में शिक्षा कोष द्वारा हर वर्ष जरुरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति, कम्प्यूटर शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति जयपुर में आयोजित राजस्थानी कन्क्लेव में योगदान आदि अनेकानेक कार्यों में नंदकिशोर जी का मार्गदर्शन और सहभागिता बड़ी महान रही है। सामाजिक सहायता के लिए मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन की स्थापना की। उनके प्रयास से मारवाड़ी सम्मेलन का भवन एमहर्स्ट स्ट्रीट में खरीदा गया। फाउंडेशन द्वारा छात्रवृत्ति और सुकन्या के विवाह का सुझाव दिया।

नंदकिशोर जी के ही प्रयास से सन १९५० में चेम्बर के अंतर्गत 'लेडीज बिजनेस फोरम' की स्थापना की गई थी। जो आज नई वर्ग की व्यावसायिक जागृति में अहम भूमिका निभा रही है।

जालान जी महान कार्यों और योगदानों की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। इन जैसे महान व्यक्तित्व के योगदानों को शब्दों के सीमा में बांधा नहीं जा सकता।

सम्मेलन के ३६ वर्षीय दीर्घ इतिहास में एक बड़ा अध्याय जालान जी के हाथों लिखा गया है। यह अभ्यास गौरवपूर्ण और विविधताओं से परिपूर्ण है। उनके विविध आयामों के संयोजन से सम्मेलन और समाज की छवि को उज्ज्वल किया है। अपनी शुभकामनाओं के साथ उन्हें सहृदय सम्मान अर्पण करता हूँ तथा उनके योगदानों एवं हमारे मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

with best compliments from

MPM
Foundry Solutions, *Personalized*

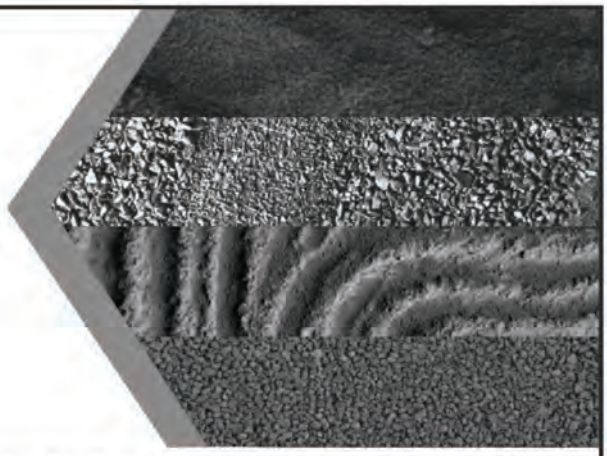

FOUNDRY SOLUTIONS, *PERSONALIZED*

Our quest is to be the **" Vendors of choice"** for our customers, by providing them with **Foundry Solutions, Personalized,** and creating **" Value Beyond Quality"** - while building a dynamic organization to sustain long-term business relevance of the company and collaterally - its people!

In 38+ years of its history, **MPM** is proud and privileged to be in the forefront of foundry solution technology, in the critical spectrum and eco-system of casting preparation, specially in **Green Sand Molding systems.**

MPM has proven its commitment to its core principles: **Integrity, quality, commitment and innovation.** This has helped us not only to keep abreast with dynamic market changes, but also grow steadily with our customers.

OUR PRODUCTS

Inoculants
Optimising Iron

A Selection of high-quality Inoculants to optimize and achieve the required cast metal microstructure and matrix

Lustron®
Lustrous Carbon Additive

A three decades proven propriety blend of carefully selected and scientifically evaluated Lustrous Carbon Additive helps:
- **Improve Surface Finish**
- **Reduce Casting Defects**
- **Optimize additive consumption**

Recarburizer
Raising the bar on Pure Carbon

Our range of high purity Carbons ntended for use as recarburizers of irons and steel during the melt preparation process.

HD Sleeves
Eliminate Shrinkage + Improve Yield

An innovative product portfolio of exothermic isers and sleeves. A joint venture with GTP Schaefer GmhB, Germany.

sandman
Green Sand - *Art to Analytics*

A Saas solution for optimizing Green Sand Process Control with advanced data science and powerful analytics.

COATINGS
Parting line between heat and fusion

A range of specially formulated and high-quality Refractory Coating finding application in Grey Cast Iron, Ductile Iron, Steel and Non-Ferrous casting, covering numbers of process types.

GROUP COMPANIES

MPM-DURRANS REFRACOAT PVT. LTD

MPM Foundry Solutions, Personalized

sandman®

RAY SUGAR™

MPM PRIVATE LIMITED

www.mpmindia.com info@mpmindia.com

M-22, MIDC, Hingna Industrial Estate, Nagpur - 440 016 Maharashtra, India.
Tel: +91 (7104) 232401 / 232402/237065

नन्दकिशोर जी जालानः
एक व्यक्ति ही नहीं, व्यक्तित्व की खान

राम अवतार पोद्दार
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

श्री नन्द किशोर जी जालान की शत वार्षिकी– सुखद और दुःखद दोनों क्षण। यह पढ़कर आश्चर्य होना लाजिमी है। सुखद इसलिए कि एक ऐसे शलाका पुरुष की जन्म शतवार्षिकी के साक्षी होने का सुअवसर प्राप्त होना, जिन्होंने अपने यौवन काल से ही समाज को अपने श्रम से न सिर्फ सिंचित किया बल्कि चिंतन से एक नई दिशा दी। और दुःखद इसलिए कि ऐसे व्यक्तित्व का आज सशरीर हमारे बीच नहीं होना, जबकि आज समाज को ऐसे बिरले व्यक्तित्व की अत्यधिक जरूरत थी। लेकिन यह भी ध्रुव सत्य है कि आजीवन तो इस धरा पर रहने के लिए कोई आता नहीं है। जो आया है, वह जायेगा भी। सुकुन इस बात का जरूर है कि स्व० जालान जी ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन को वर्षों तक जिस पथ का पथिक बनाया, आज भी वह मार्गदर्शन के रूप में काम कर रहा है।

मात्र २६ वर्ष की उम्र के सम्मेलन के महामंत्री के पद का दायित्व भार संभालने की कूबत रखने वाले जालान जी के सामाजिक योगदान की वर्णना को यूं तो शब्दों में नहीं बांधा जा सकता लेकिन वर्तमान युवाओं तथा नई पीढ़ी को किंचित मात्र जानकारी देकर सामाजिक सोच को जिन्दा रखने का प्रयास किया जा सकता है।

जिस तेजी से आज विश्व, देश तथा समाज का परिदृश्य परिवर्तित हो रहा है, वह हमें यह सोचने के लिए मजबूर कर रहा है कि क्या सामाजिक परिवर्तन हमारे लिए अभिशाप बनता जा रहा है?

जालान जी रूढ़ीवादी परम्पराओं तथा सामाजिक बुराईयों के प्रबल विरोधी थे, वहीं संस्कारों के प्रति गंभीर चिन्तन रखते थे। समाज में व्याप्त घूँघट प्रथा से लेकर नारी शिक्षा के प्रबल हिमायती थे, वो भी उस दौर में जब इन सब बातों के बारे में बोलना तो दूर, सोचना भी सोच के परे था। बढ़ती जनसंख्या पर केन्द्र सरकार ने करीब १९८० में प्रचार प्रारम्भ किया, लेकिन जालान जी ने १९६४ में इस विषय पर लोगों का ध्यानाकर्षण करा दिया था। हालांकि उस वक्त लोगों को उनकी यह बात समझ में नहीं आई। कहते भी हैं कि दूरगामी सोच दूरदृष्टि वाला ही व्यक्त कर सकता है, संकीर्ण मानसिकता के पल्ले तो समय आने पर ही पड़ती है।

सम्मेलन के अच्छे से लेकर बुरे दौर तक के साक्षी रहे जालानजी ने जिस बखूबी के साथ बागडोर संभाले रखी, आज उसी का प्रतिफलन है कि सम्मेलन रूपी वट वृक्ष 90 सालों का हो गया। इसकी शाखाएं-प्रशाखाएं देश के चतुर्दिक फैल गई। बिना समर्पण भाव के यह कतई संभव नहीं हो सकता। कहते हैं कि कोई भी सुधार तभी लागू होता है, जब वह स्वयं से शुरू किया जाये। कार्यकर्ताओं की फौज तैयार करने वाले जालान जी का ऐसा ही उदाहरण देखना हो तो उनके सुपुत्र श्री पवन जालान में देखा जा सकता है जो कि स्वयं अपने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए विभिन्न सामाजिक कार्यों में रत हैं। आज वे अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री के पद पर रहते हुए भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं। ऐसे विरले ही व्यक्ति मिलेंगे, जिनकी अगली पीढ़ी समभाव के साथ सम्मेलन के सामाजिक कार्यों से जुड़ी हो। इनमें एक और नाम ध्यान में आता है, जो है सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष स्व. मोहन लाल जी तुलस्यान के सुपुत्र नरेन्द्र तुलस्यान का। स्व. तुलस्यान जी को भी सम्मेलन की गतिविधियों में दिशा प्रदान करने में स्व. जालान जी का योगदान उस वक्त रहा जब वे किसी भी पद पर नहीं थे। जालान जी ने ही अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष के कार्यकाल की समाप्ति पर तुलस्यान जी को सम्मेलन की बागडोर सौंपी थी और उनके मार्गदर्शक बने रहे।

विषम परिस्थितियों में भी हार नहीं मानने की प्रवृत्ति वाले स्व. जालान जी को सम्मेलन के भीष्म पितामह, प्राण पुरुष, शलाका पुरुष माना जाता रहा है। सम्मेलन के इतिहास में उनका नाम हमेशा स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा।

mPokket
Fast Approval, Instant Loan

India's Most Trusted Instant Loan App for the Youth

Get loan up to ₹45,000

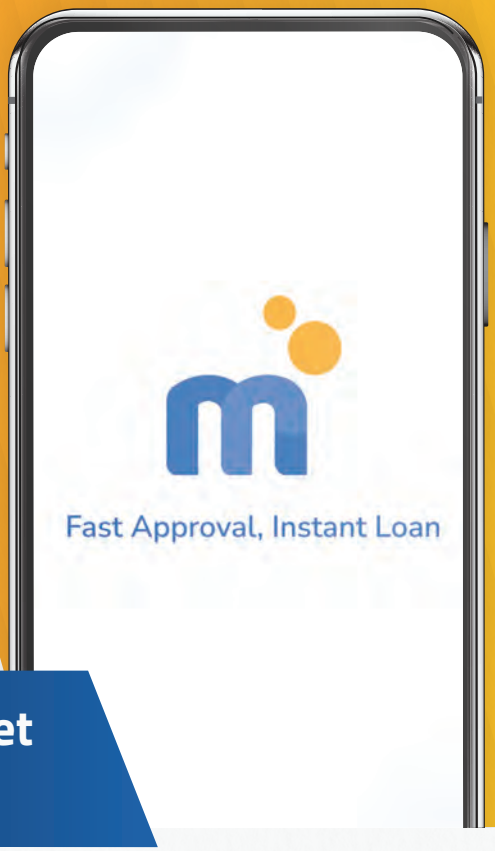

Fulfill all your needs with mPokket Instant Loan

Offering Financial Independence to the Youth of India !

- 30 Million+ Downloads
- 100% online process & zero paperwork
- Easy EMI
- Instant a/c transfer
- RBI approved
- Instant approval & fastest disbursal

GET IT ON Google Play

DOWNLOAD NOW

PS Srijan Corporate Park, Tower 1, 12th Floor, Unit No. - 1204, 2, EP & GP, Sector V, Bidhannagar, Kolkata, West Bengal 700091

www.mPokket.in @mPokket @mpokketofficial @mPokket @mpokketofficial @mPokket

नंदकिशोर जी जालान एक प्रेरक व्यक्तित्व

गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया
निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

एक अनुकरणीय व्यक्तित्व जिन्होंने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन को विकट परिस्थितियों में नेतृत्व प्रदान किया। उन्होंने समाज के व्यापक हित में तीन सत्र तक सम्मेलन के अध्यक्षीय पद के दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। सत्र १९८३ से १९८६, १९९३ से १९९७ एवं १९९७ से २००१ यानी कुल १२ वर्ष तक। वो अकेले व्यक्ति है जिन्होंने इतने वर्षों तक सम्मेलन का बीड़ा उठाया। नंद किशोरजी जालान का जन्म १६-९-१९२४ को हुआ था, कृतज्ञता ज्ञापन हेतु सम्मेलन इस वर्ष उनकी जन्म शती मना रहा है। सम्मेलन से जुड़ने की उनकी यात्रा उनके युवा काल से ही शुरू हो गई थी। ५० वर्षो से अधिक समय तक उन्होंने सम्मेलन से सक्रिय जुड़ाव रखा तथा विभिन्न पदों पर विभिन्न व्यक्तियों के साथ काम किया आपके अनुभव का कोई सानी नहीं है। नंदकिशोर जी को इसलिए सम्मेलन का प्रेरणा पुरुष तथा भीष्म पितामह भी कहा जाता है। सम्मेलन के महामंत्री के रूप में आपने बृजलाल जी बियानी, सेठ गोविंद दास जी मालपानी और भँवरमल जी सिंघी जैसे महानुभावों की अध्यक्षता में काम किया। जब नंदकिशोर जी महामंत्री बने थे उस समय बृजलाल जी बियानी के पहले पांच महानुभावों ने सम्मेलन के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया था पर जब आप अध्यक्ष पद से निवृत हुए उस वक्त तक अध्यक्षों की संख्या १५ पहुंच गई थी, हम अनुमान लगा सकते हैं उनके दीर्घ अनुभव का। १९५० से २००१ तक सक्रिय रूप से एवं उसके बाद सलाहकार के रूप में सम्मेलन से जुड़े रहे।

नदी के बहते जल की तरह वो परिवर्तन में विश्वास रखते थे, उनका चिंतन आधुनिक एवं वैज्ञानिक था। युवाओं के ऊपर उनका पूरा विश्वास था वो कहा करते थे कि यदि हमें युवकों की ऊर्जा का लाभ लेना है तो अपनी सार्वजनिक संस्थाओं और उनके क्रियाकलापों को आधुनिकता का जामा पहनाना होगा जिससे हमारा युवावर्ग उनसे जुड़ सके, अपनी योग्यता एवं क्षमता से समाज को लाभान्वित कर सके, और बीते हुए युग से कहीं ज्यादा शक्तिशाली एवं प्रभावित रूप से नवनिर्माण व सामाजिक सुधारो की गंगा बहा सके।

जालान जी सादा जीवन एवं उच्च विचार के धनी थे, कथनी एवं करनी के समन्वय में विश्वास रखते थे।

समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों, शादियों में दिखावा और फिजूल खर्ची के वो सख्त विरोधी थे। शिक्षा के प्रचार-प्रसार विशेष कर बच्चियों की उच्च शिक्षा के हिमायती थे। बजरंगलाल जी जाजू, रतन जी शाह, दीपचंद जी नाहटा, एवं सीताराम जी शर्मा जैसे महानुभावों ने उनके साथ महामंत्री के रूप में सम्मेलन को अपनी सेवाएँ दी। रामकृष्ण जी सरावगी, हनूमान प्रसाद जी सरावगी, नंदलालजी रुंगटा, हरि प्रसादजी कानोड़िया, राम अवतार जी पोद्दार, पद्मश्री प्रह्लाद रायजी अगरवाला, आत्मारामजी सोंथलिया, भानीराम जी सुरेका एवं संतोष जी सराफ जैसे महानुभावों ने भी उनके साथ सम्मेलन के कार्यों को गति प्रदान की। मुझे उनके साथ काम करने का अवसर तो नहीं मिला पर युवावस्था से ही राँची में सम्मेलन से जुड़े होने के नाते उनसे उनको सुनने एवं उनकी कार्यशैली देखने का लाभ अवश्य मिला था। उनके सम्मान में एवं श्रद्धा सुमन अर्पित करने हेतू सम्मेलन इस वर्ष उनकी जन्म शती मना रहा है यह बहुत ही प्रशंसनीय कदम है अपने सराहनीय कार्यों की खुशबू बिखेर कर ८ जून २०११ को वे अपने नश्वर शरीर का त्याग कर अंतरिक्ष के क्षितिज में परम शक्ति में विलीन हो गये।

समाज के ऐसे पुरोधा को उनकी जन्मशती के अवसर पर मेरा शत शत नमन...

मेरी श्रद्धांजलि

संतोष सराफ
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मुझे सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंद किशोरजी जालान के साथ कार्य करने का सौभाग्य तो प्राप्त नही हुआ लेकिन उनके बारे में बहुत कुछ सुना है। इनको सम्मेलन का भामासाह माना जाता है। आपने अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक कार्यों के लिए समर्पित कर दिया। आप सम्मेलन के अलावा और भी बहुत सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। अपने कार्यकाल में सम्मेलन को बहुत ऊचाइयों पर पहुँचाया। सच्ची श्रंद्धांजलि उनको जन्म-शतवार्षिकी दिवस की तभी होगी जब हम उनके द्वारा दिखाए गए हुए पद चिन्हों पर चले।

जालान जी के साथ मैंने लम्बे समय तक काम किया

रतन लाल शाह
पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

जानकर खुशी हुई कि श्री नन्द किशोर जी जालान के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर **"समाज विकास"** के एक विशेषांक का प्रकाशन हो रहा है। यह स्तृत्य प्रयास है। मेरी शुभकामनायें साथ है। सम्मेलन के मंच पर श्री जालान जी के साथ मैंने लम्बे समय तक कार्य किया है। सन् १९५० से ६२ तक वे सम्मेलन के महामंत्री थे।

दूसरी पारी उनकी प्रारम्भ हुई थी १९७४ के रांची अधिवेशन से। श्री सिंघीजी ने अध्यक्ष पद का भार ग्रहण किया था। उन्होंने जालानजी को महामंत्री मनोनीत किया। मेरा भी सम्मेलन में प्रवेश इसी अधिवेशन से हुआ। कुछ विशेष मुद्दों को लेकर (१) मारवाड़ी शब्द की परिभाषा (२) पदाधिकारियो की कार्य अवधि की सीमा निर्धारण और (३) राजस्थानी भाषा के प्रचार प्रसार की मांग। इन विषयों पर जालानजी की रजामंदी थी अत: जमकर कार्य हुआ। संविधान में संशोधन करके परिभाषा को सही किया। पदाधिकारियों की कार्य अवधि की सीमा तय की और १९८५ में संस्था का एक रजिस्टर्ड संस्था के रूप दिया गया।

सम्मेलन का विस्तार देने के लिये युवा मंच व महिला मंच स्थापना करने की इच्छा थी। श्री जालान जी ने इसे पंख दिये व मेहनत करके स्थापित किया। दोनो ही मंच आज अच्छे कार्य कर रहे हैं।

सिंघीजी के बाद लम्बे समय तक अध्यक्ष पद पर रहकर जालान जी ने समर्पण का नेतृत्व दिया था। वे तन-मन-धन से सम्मेलन को समर्पित थे। नमन...

संस्मरण

सम्मेलन के आधार स्तंभ थे नंदकिशोर जालान

भानीराम सुरेका
निवर्तमान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नौ दशक के इतिहास में बहुत कम ऐसे लोग हुए हैं जिनके जीवन में सम्मेलन प्रथम प्राथमिकताओं में सर्वोपरि रहा। स्व. नंदकिशोर जालान मेरे समय में ऐसे ही अद्वितीय व्यक्तित्व थे जिनकी सुबह सम्मेलन के साथ शुरु होती थी और देर रात तक वे सम्मेलन की समस्याओं से जूझते रहते थे।

सफल व्यवसायी परिवार के मुखिया स्व. जालान की दिनचर्चा में सम्मेलन प्रधान था। मैं यूं तो कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन और पश्चिम बंग प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन से पहले से जुड़ा हुआ था लेकिन साल १९९३ में जब दिल्ली अधिवेशन में स्व. जालान ने अध्यक्ष का पदभार संभाला तो पहली बार श्री सीताराम शर्मा के साथ मुझे संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री बनाया। सम्मेलन का बड़ाबाजार स्थित तत्कालिक केन्द्रीय कार्यालय हो या जालान जी का अम्हर्स्ट स्ट्रीट स्थित आवास नियमित बैठकों का दौर चलता रहता था एवं श्री शर्मा के साथ मुझे उन बैठकों में शामिल होना होता था। पार्क स्ट्रीट स्थित कलकत्ता चेंबर ऑफ कॉमर्स में भी उनका अवदान था। वे वहां अध्यक्ष भी रहे। बहुत सी बैठके वहां हुई। हम जब भी जाते थे। जालान जी अपने खर्चे से हमारी आवभगत करते। संस्था के पैसे का दुरुपयोग उन्हें खलता था।

एक लंबी कानूनी जकड़न से सम्मेलन को मुक्त कराने में मुख्य भूमिका निभा चुके श्री जालान हर समय सम्मेलन को आगे बढ़ाने एवं नये उर्जावान लोगों को जोड़ने में सक्रिय रहते थे। सम्मेलन का मुखपत्र **"समाज विकास"** समय पर प्रकाशित हो, इसके लिए वे स्वयं तत्पर रहते थे। लोगों को फोन करना, उनका आलेख मंगाना तथा संपादन करके प्रकाशन के लिए भेजना उनकी प्राथमिकताओं में होता था। इसी के साथ कार्यकारिणी समिति और अखिल भारतीय समिति की बैठकों का आयोजन और वैचारिक विमर्श को आगे बढ़ाने के लिए नये-नये विषयों का प्रतिपादन उनकी चेतना के जाग्रत होने का प्रमाण था।

स्वभाव से अनुशासन पसंद श्री जालान अपने सहयोगियों से भी यही अपेक्षा रखते थे। चूक होने पर उनका आक्रोश भी झेलना पड़ता था लेकिन यह सम्मेलन के कार्यों तक सीमित था। व्यक्तिगत जीवन में उनका आतिथ्य और आग्रह अविस्मरणीय है।

अपने जीवन के अंतिम क्षण तक सम्मेलन को न्यौछावर करने वाले श्री जालान आज भी अतुलनीय हैं। उनके जैसा त्याग, समर्पण एवं सहयोग शायद ही किसी और राष्ट्रीय अध्यक्ष में परिलक्षित हुआ हो।

श्री जालान ने सम्मेलन के प्रारंभिक दिनों को देखा था इसीलिए वे इसकी महत्ता से वाकिफ थे। वे चाहते थे कि प्रवासी मारवाड़ी समाज वैचारिक आंदोलनों में सामूहिक और संगठित होकर रहे। अतीत के व्यामोह से मुक्त होकर वर्तमान और बेहतर भविष्य के लिए सतत सतर्क रहे। अन्य समाजों से संघात न करके समरस होकर रहे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के इतिहास का एक बड़ा हिस्सा श्री जालान की कर्मठता, दूरदर्शिता और तत्परता की कहानियों से सुसज्जित है। कोई चाहकर भी उनके अवदान की अवहेलना नहीं कर सकता। यह गर्व की अनुभूति करने लायक है।

मैंने सामाजिक जीवन में उनके जैसा समर्पित व्यक्तित्व बहुत कम देखा है। मुझे उनके साथ काम करते हुए हमेशा यह अहसास हुआ कि उनके जैसा काम करने का अवसर मिले तो मैं भी समाज के लिए उपयोगी बन सकता हूँ।

आज भले जालान जी सशरीर उपस्थित नहीं हैं लेकिन उनके द्वारा स्थापित आदर्श आज भी पाथेय है। यही उनके सफल व सक्षम होने का सबसे पुख्ता सबुत है।

अनगिनत गुणों की खान थे जालान जी

संजय हरलालका
निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मात्र २६ वर्ष की उम्र में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री पद पर आकर सम्मेलन को ऊंचाई तक ले जाने तथा हमेशा निश्चल मन से मार्गदर्शक रहे, घूंघट प्रथा के दौर में नारी शिक्षा के प्रबल हिमायती, १९६४ में ही जनसंख्या नियंत्रण के प्रति लोगों को सचेत करने की सोच के धनी (जबकि सरकार ने १९८० के दशक में इस पर काम शुरू किया था), निःस्वार्थ भाव से सम्मेलन में नए लोगों को लाने का मार्ग प्रशस्त करने वाले, अनगिनत गुणों की खान, सम्मेलन के शलाका पुरुष परलोकगामी नंद किशोर जी जालान को पूर्ण भावों के साथ अंतःकरण की कोर से कोटि-कोटि नमन।

युवा मंच की स्थापना में नंदकिशोर जी जालान की भूमिका

सज्जन भजनका
सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति

मारवाड़ी युवा मंच की शुरुआत १० अक्टूबर १९७७ को गुवाहाटी, असम में हुई थी। इसके बाद यह संगठन तेजी से फैलने लगा और १९८४ तक असम के कुछ अन्य शहरों जैसे तिनसुकिया, डिब्रूगढ़ तथा मेघालय के शिलॉन्ग में भी इसकी शाखाएँ खुल गई।

इसी समय, असम के तिनसुकिया शहर में एक लघु अधिवेशन आयोजित किया गया, जिसमें निर्णय लिया गया कि इसका पूर्वोत्तर प्रदेशीय संगठन बनाया जाए।

इस लघु अधिवेशन मे ही श्री प्रमोद सराफ की अगुवाई में एक तद्धर्थ समिति का गठन किया गया एवं सर्वप्रथम पूर्वोत्तर स्तर पर मारवाड़ी युवा मंच स्थापना की गई इसके बाद यह योजना बनाई गई कि इस मंच को राष्ट्रीय स्तर पर विस्तारित किया जाए। इसके लिए उत्तर-पूर्व के युवा मंच सदस्यों के एक समूह एवं मारवाड़ी सम्मेलन के श्री नंद किशोर जालान के सक्रिय योगदान द्वारा भारत के विभिन्न हिस्सों में यात्राएं की गई और मारवाड़ी युवा मंच की शाखाएँ, उत्तर-पूर्व भारत के बाहर अन्य राज्यों में भी स्थापित की गई।

अगले कुछ वर्षों में, मारवाड़ी युवा मंच, प्रमुख राष्ट्रीय युवा संगठन के रूप में उभरा, और इसका पहला राष्ट्रीय अधिवेशन १९८५ में गुवाहाटी में हुआ एवं मंच को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली और यह भारत के सबसे बड़े स्वैच्छिक युवा संगठनों में से एक बन गया।

प्रमुख उपलब्धियाँ:

पिछले ४-५ दशकों में, मारवाड़ी युवा मंच ने विभिन्न समाज सेवा परियोजनाओं के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दिया है:-

एम्बुलेंस और शव वाहिनी सेवाएँ, मारवाड़ी युवा मंच देश भर में ४०० से अधिक एम्बुलेंस और शव वाहिनी सेवाएँ संचालित करता है।

- कृत्रिम अंग शिविर,

मारवाड़ी युवा मंच ने १००,००० से अधिक कृत्रिम अंग, विकलांग व्यक्तियों को निशुल्क प्रदान किए हैं।

- कैंसर निदान,

संगठन ने मोबाइल इकाइयों के माध्यम से १२५,००० से अधिक लोगों की कैंसर जांच की है।

- जल परियोजनाएँ,

मारवाड़ी युवा मंच ने ५००० से अधिक जल कूलर और फिल्टर आदि स्थापित किए हैं ताकि स्वच्छ पेयजल प्रदान किया जा सके।

रक्तदान शिविर,

नियमित रूप से रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया है, जिससे भारत भर में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूती मिली है।

इन पहलों के माध्यम से मारवाड़ी युवा मंच भारत का सबसे बड़ा युवा संगठन बन गया है, जो बिना किसी भेदभाव के सेवा प्रदान कर रहा है और समाज विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है, साथ ही राष्ट्रीय एकता को मजबूत कर रहा है।

आरंभ में मारवाड़ी युवा मंच की स्थापना मारवाड़ी सम्मेलन की युवा इकाई के रूप में हुई थी। मारवाड़ी सम्मेलन के आयोजनों में युवा मंच को भी स्थान दिया जाता था एवं युवा मंच के आयोजनों में मारवाड़ी सम्मेलन की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी।

कालांतर में मारवाड़ी सम्मेलन एवं युवा मंच के बीच की दूरियां बढ़ती गई एवं युवा मंच एक स्वतन्त्र संगठन के रूप में काम करने लगा, हालांकि स्थानीय स्तरों पर सम्मेलन एवं युवा मंच सम्मिलित आयोजन भी करते थे।

दोनों तरफ से हमेशा यह प्रयास चलता रहा कि दोनों संगठन आपस में सहयोग रखे एवं समाज को सम्मिलित नेतृत्व दे, आशा है भविष्य में यह स्वपन भी अवश्य ही पूरा होगा।

Diligent Man

Govind Agrawal
I.P. President
Utkal Pradeshik Marwari Sammelan

I convey my thanks and gratitude to you and your team for inviting me to attend the Birth centenary celebration of our beloved mentor and patron late Nanda Kishore Ji Jalan at Kolkata on 21.09.2024.

Late Jalan Ji was a towering personality. He was the National president of All India Marwadi Federation. Our organization flourished in all respects under his able leadership. His well considered decisions made our organisation strong and to expand. The more we say about his contributions, the less it will be. I request all concerned in the Marwadi Federation to follow his ideals and carry his noble thoughts to grass root level. That will be the greatest tribute to him on this occasion of his birth centenary. We should feel immensely proud of such a loving and caring leader who shined as jewel in the crown of our organisation. I pray my respectful homage and tribute to him on this occasion.

This Durga Puja **explore an exclusive range of shirting fabrics in a variety of trend-setting prints. Tailor them into impeccable cuts and perfect fits to give your festive look an edgy style.**

#buyaRaymond #giftaRaymond

Sharad Shubhechha

5% EXTRA CASHBACK* SBI card

*Min. Trxn.: ₹6,000; Max. Cashback: ₹750 per card account.
Validity: 30 Aug - 13 Oct 2024. T&C Apply.

Scan QR code to locate nearest store

THE Raymond SHOP

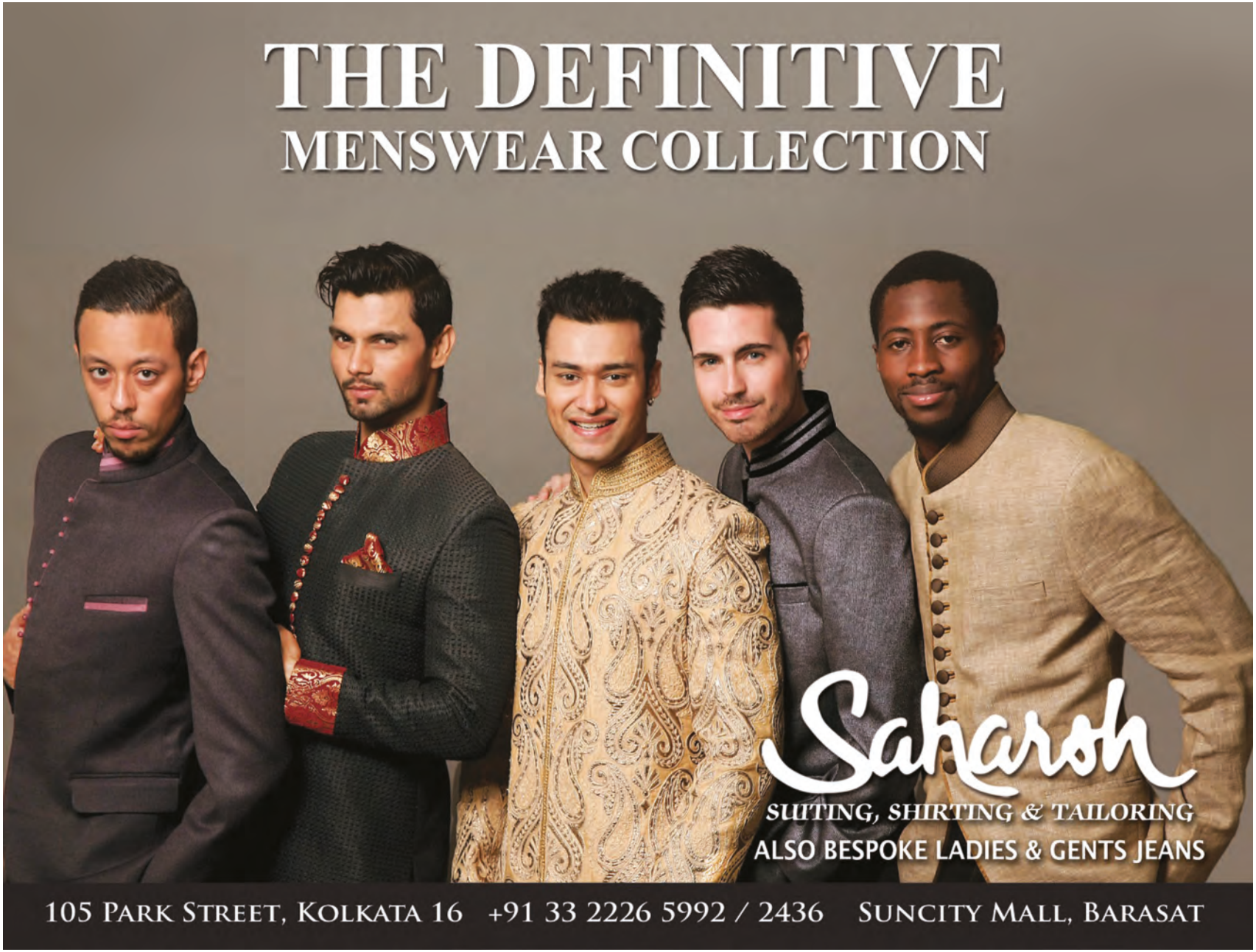

THE DEFINITIVE
MENSWEAR COLLECTION
Saharsh
SUITING, SHIRTING & TAILORING
ALSO BESPOKE LADIES & GENTS JEANS
105 PARK STREET, KOLKATA 16 +91 33 2226 5992 / 2436 SUNCITY MALL, BARASAT

Apollo
TOUCHING LIVES

Certificate No. : M-0342
NABL Accredited

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

P-72, Prince Anwar Shah Road, Opp. South City Mall, Kolkata-700 045
Tel. : 4021-2525-55, E-mail : pashahroad@theapolloclinic.com

SERVICES AT A GLANCE

- **Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments**
- **Radiology**
  - MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
  - Ultrasonography | - Colour Doppler Study
- **Cardiology**
  - ECG | - Echo-Cardiography
  - Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
  - Treadmill Test (TMT)
- **Wide Range of Pathology**
- **Pulmonary Function Test**
- **UGI Endoscopy / Colonoscopy**
- **Physiotherapy**
- **EEC / EMG / NCV**
- **General & Cosmetic Dentistry**
- **Elder Care Service**
- **Sleep Study (PSG)**
- **EYE / ENT Care Clinic**
- **Gynae and Obstetric Care Clinic**
- **Haematolgy Clinic**
- **Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep**
- **Health Check-up Packages**
- **Online Reporting**
- **Report Delivery**

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

Yours Tastefully
Anmol
TM
Enjoy Great Taste with Good Health
Anmol
FruitBix
Anmol
dream
LITE
Anmol
Marie
Plus
With Best Compliments from:
Anmol Industries Ltd.
BISCUITS, CAKES & COOKIES
BISCUITS
For your comments, complaints and trade related queries write to us at info@anmolindustries.com
or call us at 1800 1037 211 | www.anmolindustries.com | Follow us on:

स्व. नंद किशोर जालान – एक शख्सियत

श्यामसुन्दर हरलालका
निवर्तमान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

एक शख्स बनकर न जियो बल्कि एक शख्सियत बनकर जियो शख्स तो मर जाता है, मगर शख्सियत हमेशा जिंदा रहती है।

नंद किशोरजी जालान का जन्म ९ सितम्बर १९२४ में कलकत्ता में हुआ था तथा वे बी.कॉम तक की शिक्षा प्राप्त की थी। ये बचपन से ही बहुत सक्रिय व उत्साही युवा थे। वे जिस काम में भी लगन से लग जाते तो उसको अपने अंजाम तक पहुँचाकर ही दम लेते थे। वे सभी कामों को पूर्णता तक नहीं पहुँचाने तक अपने प्रयासो में कमी नहीं आने देते थे।

वे युवा अवस्था में ही सन् १९५० में सम्मेलन की राष्ट्रीय समिति के साथ सक्रिय रूप से जुड़कर विशेष दायित्व को निर्वाहन करने लगे थे। सेठ गोविंद दास मालपानी सन् १९५४ से १९६२, उनके आठ वर्षों के कार्यकाल में आपने ही उनके महामंत्री के दायित्व का सक्रिय रूप से निर्वाहन किया था। सेठ गोविंद दास एक साहित्यिक, समाजसेवी व राजनेता थे एवं राष्ट्रीय राजनीति में भी उनका बहुत दबदबा था। उनके साथ कार्य करने का अनुभव बहुत रोचक व विलक्षण था। स्व. भंवरमल सिंघी सन १९७४ में राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित हुए एवं सन् १९७९ तक दो कार्यकाल तक इस पद पर रहे एवं इन दोनों कार्यकाल में स्व. जालानजी ने ही सक्रिय महामंत्री की भूमिका का निर्वाहन किया था। स्व. जालानजी की सक्रियता, विचारों में स्पस्टता व कार्यशैली को देखते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष की पहली पसंद राष्ट्रीय महामंत्री के लिये जालानजी ही होते थे। उनको सम्मेलन का बहुत बड़ा अनुभव था। उन्होंने भारतवर्ष की सम्मेलन शाखाओं का सर्वाधिक दौरा किया है इसलिए सम्मेलन से जुड़े सभी कार्यकर्त्ता जालानजी को पहचानते थे एवं उनकी स्वीकार्यता भी थी।

मुझे याद है सन् १९७४ में जब मैंने धुबड़ी में सम्मेलन का विशेष प्रान्तीय अधिवेशन आयोजित किया था तब वे मेरे आग्रह पर स्वयं कलकत्ता से कई सदस्यों को लेकर पहुँचे थे। उक्त समय में प्रान्तीय अध्यक्ष स्व. मोहनलालजी जालान थे। मैं अधिवेशन का स्वागत मंत्री था। जालानजी धुबड़ी शहर से परिचित थे कारण उनसे अनेक व्यापारिक स्मृतियाँ जुड़ी हुई थी। उन्होंने मुझे अपने पिताजी से मिलवाने का आग्रह किया था। वे उनसे मिलकर उन पुरानी स्मृतियों को ताजा करना चाहते थे। जब कुशुम मेजिटेबुल प्रोडक्ट के वे बिक्री अधिकारी के रूप में धुबड़ी आते रहते तब पिताजी की फर्म उनके एक मात्र डीलर थे एवं वे दुकान में ही दो एक दिन रुककर बिक्री बढ़ाने के लिए सभी डिलरों के पास मिलने जाते तथा और अधिक माल खरीदने के लिये प्रोत्साहित करते। उनका उन दिनों में भी दैनिक परिधान कलपदार धोती, कुर्त्ता ही हुआ करता था। उनके वस्त्रों में कोई परिवर्तन नहीं था। मैं उनको उस समय से पहचानता था करीब सत्तर वर्ष पूर्व से।

स्व. जालानजी प्रथम बार राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में १९८२ से १९८६ के कार्यकाल के लिये जमशेदपुर अधिवेशन में निर्वाचित हुए थे। उनके साथ स्व. बजरंगलाल जाजू महामंत्री हुए लेकिन कार्यकाल पूर्ण होने की पूर्व उनकी मृत्यु के कारण श्री रतन साह जी ने महामंत्री के दायित्व का पालन किया।

स्व. नंद किशोरजी जालान द्वितीय बार राष्ट्रीय अध्यक्ष सन् १९९३ में दिल्ली अधिवेशन में निर्वाचित हुए थे एवं महामंत्री थे स्व. दीपचंदजी नाहटा जिनकी सक्रिय राजनीति में भी भागीदारी थी। तीसरा कार्यकाल १९९७ में हैदराबाद अधिवेशन में प्रारंभ हुआ था एवं उनके साथ महामंत्री की भूमिका में श्री सीतारामजी शर्मा थे जो स्वयं एक विचारक, लेखक, पत्रकार तथा अनेक संस्थाओं से जुड़े रहने का अनुभव रखते थे। इन दोनों सक्रिय समाज के नेतृत्व ने मिलकर सम्मेलन को बहुत ऊँचाई तक ले गये। सम्मेलन को विभिन्न प्रदेशो में बसने वाले मारवाड़ियों के बीच पहचान दिलवाने में बहुत बड़ी भूमिका का निर्वाहन किया। इसके बाद जितने भी राष्ट्रीय अध्यक्ष हुए मसलन श्री सीताराम शर्मा, नंदलालजी रुंगटा, हरी प्रसादजी कानोड़िया, रामअवतारजी पोद्दार, प्रहलादरायजी अगरवाल, संतोष कुमारजी सराफ गोवर्धनजी गाड़ोदिया तथा वर्त्तमान शिवकुमारजी लोहिया सभी के साथ मुझे काम करने का अवसर मिला है। इन सभी ने सम्मेलन की यात्रा में चार चांद लगाने का ईमानदारी से प्रयास किया है। सम्मेलन को भारतवर्ष के सभी राज्यों में जहाँ प्रवाशी मारवाड़ी समाज सदियों से बस रहा है, वहाँ तक इसकी पहुँच बनाने की यात्रा में सभी ने भरपूर योगदान दिया है। आज हम स्व. नंद किशोरजी जालान की शतवार्षिकी मना रहे हैं लेकिन सच्ची श्रद्धांजलि तब होगी जब सम्मेलन के प्रति उनके संजोये हुए सपनों को साकार कर सके। सभी प्रवाशी मारवाड़ी भाई अपने संस्कार, संस्कृति को अक्षुण रखते हुए भौतिक प्रगति में अपना परचम लहराये एवं जरुरतमंद लोगों के लिये हमारी दान की सरिता अविरल बहती रहे, व **राष्ट्र की प्रगति हमारे लक्ष्य** के प्रति हम ईमानदारी से आगे बढ़े। यही उनका सपना था। अब जिम्मेवारी दूसरी पीढ़ी की है कि उनके सपने को साकार करने का। उन्होंने अपने जीवन का अमूल्य समय सम्मेलन को ऊँचाई तक ले जाने के लिये दिया है एवं उनके प्रयासो से सम्मेलन जन जन तक पहुँचने की राह पर है। सम्मेलन प्रवाशी मारवाड़ी समाज के लिये एक आशा की किरण है।

DTC
COMMIT DELIVER GROW
From Earth to Excellence
Transforming Industries, Shaping Lives.
For over 40 years, DTC Group has led the way in India's core sectors—starting with a bold vision in mining, expanding into infrastructure, innovating in logistics, and now transforming real estate, DTC has become a name synonymous with commitment and success.
We've mined essential minerals like kaolin and sandstone using advanced GPS solutions, launched landmark real estate projects such as Orchid Point and Southern Heights, and focused on affordable housing and smart city developments. In logistics, Box My Space offers cutting-edge digital warehousing and supply chain solutions.
Driven by a commitment to sustainability, DTC also invests in clean water projects, green initiatives, and community welfare, building a future that is not only prosperous but responsible.
Committed to progress, delivering on promises, and fostering growth for the future.

नंदकिशोर जालान ढेर सारी खूबियां कुछ मासूम खामियां भी

विश्वम्भर नेवर
प्रधान सम्पादक, छपते छपते हिन्दी दैनिक
निदेशक, ताजा टीवी

नंदकिशोर जी के साथ कई खट्टे-मीठे संस्मरण हैं। जीवन की एक लंबी यात्रा में वे हमारे पथ प्रदर्शक रहे। उनसे बहुत कुछ सीखा। उन्हें कभी नाराज भी किया और कभी उनका विश्वासपात्र भी रहा। आज उन्हें गए १३ वर्ष से भी अधिक हो गए पर उनकी यादें आज भी तरोताजा है। उनको भुलाना इसलिए भी मुश्किल है क्योंकि नंद किशोर जी के जाने के बाद उनकी जगह किसी और ने नहीं ली। उनसे पहली मुलाकात अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के चलते हुई। सम्मेलन मारवाड़ी समाज का एकमात्र प्रतिनिधि संगठन रहा है। इस मंच का अतीत बहुत ही गौरवशाली है और इसकी गौरवशाली परंपरा को अक्षुण्ण बनाए रखने में नंदकिशोर जी की अहम भूमिका रही। सम्मेलन से मेरे जुड़ाव का कारण संस्था द्वारा किए गए समाज सुधार मूलक आंदोलन थे। इस आंदोलन में एक साधारण कार्यकर्ता के रूप में जुड़ने का मुझे अवसर मिला। समाज के विकारों और समय के साथ आयी कुरीतियों के लिए ग्लानि के विरुद्ध सामाजिक आंदोलन में मेरी रुचि किशोरावस्था से थी। सम्मेलन ने मुझे मंच दिया और ईश्वर दास जालान, भंवरमल सिंघी, श्री जगन्नाथ जालान, श्री नंदकिशोर जालान के सानिध्य में अपने समाज को व्यवसाय जनित बुराइयों से मुक्त करने के संघर्ष में अपने को शामिल करने के लिए उर्वरक जमीन दी।

बचपन से सामाजिक विषमता और विसंगतियों के चलते बागी प्रवृत्ति से परिजनों की नाराजगी झेलनी पड़ती थी। मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियों में रुझान सक्रियता में बदल गई। जगन्नाथ जी जालान ने पश्चिम बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन से जोड़ा। उनके साथ काफी समय तक काम किया। इसी दौरान नंदकिशोर जी से भी मुलाकात हुई। फिर कुछ समय गुजरने के बाद मारवाड़ी सम्मेलन में नंदकिशोर जी का नेतृत्व सर्वमान्य बन गया। नंदकिशोर जी पार्ट टाइम कर्मी नहीं थे। सम्मेलन को पूरा समय देने लगे थे। पारिवारिक कारोबार से अपने को मुक्त कर लिया था। मैं अक्सर नंदकिशोर जी के अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित मकान में जाया करता था। ग्राउंड फ्लोर में उनकी छोटी सी बैठक थी जहां वे सम्मेलन का कार्य करते थे। वहीं सम्मेलन के प्रबंधक को बुलाकर काम सौंपने और चिट्ठी आदि लिखने का उनका 'डेली रूटीन' था।

नंदकिशोर जी की सबसे बड़ी खूबी थी कि वह अपने काम के प्रति समर्पित थे एवं सामाजिक मामलों में मारवाड़ी सम्मेलन के लक्ष्य व उद्देश्यों के प्रति उनका दिमाग स्पष्ट था। सामाजिक मुद्दों के मामले में कोई दुविधा या भ्रांति नहीं पाली। विचारों में स्पष्टता थी और लोगों से काम लेना जानते थे। शायद इन्हीं खूबी के कारण उन्होंने मुझे कभी खाली बैठने नहीं दिया। सम्मेलन संबंधित कामों में जुटाये रखा।

स्वतंत्रता के पश्चात विकास हुआ। समाज में भले ही एकांश में किंतु धन वर्षा हुई। उस समय सामाजिक कार्यों के प्रति लोगों में रुचि बढ़ रही थी। सेवा मूलक कार्यों का विस्तार हुआ किंतु समाज में विकृतियाँ भी पनपने लगी। नंदकिशोर जी जैसे लोगों ने उन विकृतियों से समाज को मुक्त करने में अपनी अहम भूमिका भी निभाई। जालान जी के साथ वैचारिक भिन्नता रखने वाले लोग भी थे। किंतु नंदकिशोर जी ने कभी उनसे समझौता नहीं किया। फलस्वरूप उनका विरोध भी शुरु हुआ। यह कड़वा सच है कि कई लोगों का उनसे मतभेद हुआ। सामाजिक कार्यों में बहुत जरूरी है कि सबको साथ लिया जाए लेकिन नंद किशोर जी को उनसे इतर विचार वाले लोगों को साथ लेना रास नहीं आया। वे एक सीमा तक ही एडजेस्ट कर पाते थे उसके उपरांत तालमेल की प्रवृति उनमें नहीं थी। लेकिन यह भी सच है कि मारवाड़ी सम्मेलन के साथ सामाजिक सुधारों एवं समाज को पूंजी जनित विकारों से मुक्त करने की प्रवृत्ति के कार्यों पर उनके साथ ही ब्रेक लग गया। प्रशासनिक दक्षता और सामाजिक सुधारों के ड्राइविंग सीट पर जब तक नंदकिशोर जी रहे मारवाड़ी सम्मेलन का रथ आगे बढ़ता गया। आज सम्मेलन के पास धन की कमी नहीं है। दक्षिण कोलकाता के रईसी इलाकों में बड़ा दफ्तर भी है। किंतु सम्मेलन में प्रभावी कार्यक्रम का अभाव है। इन सब कारणो से मारवाड़ी सम्मेलन धीरे-धीरे अपनी प्रासंगिकता खो रहा है। लेकिन यह भी सच है कि देश का ऐसा कोई दूसरा संगठन नहीं है जो इसकी जगह ले सके। अतः समाज के हितेषियों का यह कर्तव्य है कि सम्मेलन की प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए ठोस कार्यक्रम हाथ में ले। नंद किशोर जी के प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

समर्पित व्यक्तित्व

प्रेमलता खंडेलवाल "हरि प्रिया"
साहित्य रत्न

समाजसेवी स्व. नंदकिशोरजी जालान की ७५वीं वर्षगांठ पर कलकत्ते के विशाल सभागार में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की मिटिंग में बंबई से लौटते वक्त मेरा भी कलकत्ता होकर गौहाटी आना हुआ और मैंने नंदकिशोरजी के उज्ज्वल मस्तिष्क पर तिलक किया। उन पवित्र पलों को मैं भुला नहीं सकती। तिलक करते वक्त उनके मुख-मंडल पर मधुर स्मित था और वे कह रहे थे कि तिलक मेरे द्वारा करवाकर वे बहुत ही प्रसन्न हो रहे हैं। स्वास्थ्य-लाभ हो और जीवन आनंदपूर्वक स-सम्मान व्यतीत हो – ऐसी मैंने भी मंगलकामना की। यह सौभाग्य मुझे सीतारामजी-शर्मा के कारण मिला। मेरे ससुरजी स्व. जयदेवजी के साथ मैं स्व. नंदकिशोरजी से मैं कई बार मिल चुकी थी, मैं उनका सम्मान करती थी और उनसे आत्मियता भी थी। तन-मन-धन से सेवा करने वाले समाज-सेवी कम ही होते है। मैं पुनः सत्-सत् नमन् करती हूँ उन्हें और उनके पद-चिन्हों पर चलकर समाज भी लाभान्वित हो रहा है।

BEST COMPLIMENTS!
'Krafting Ampere'
AARNAV POWERTECH
21-P, PHASE-1
TATISILWAI INDUSTRIAL AREA
RANCHI - 835103
JHARKHAND
'Manufacturer of transformers, panels, cable trays and race ways'
GARODIA ENTERPRISES
MARKET ROAD EAST
UPPER BAZAR
RANCHI - 834001
JHARKHAND
'House of leading electrical goods'
0651-2205996 / 2206636
garodiaent@gmail.com
www.garodiagroup.com
0651-2265164 / 2205996
info@aarnavpowertech.com
www.aarnavpowertech.com

समाज सिरमौर-आदरणीय श्री नंदकिशोर

सीए विनोद अग्रवाल
महासचिव - शिक्षायतन फाऊंडेशन
संस्थापक- विनोद पोजिटिव फाऊंडेशन

"है जग में वही सूरमा, जो अपनी राह स्वयं बनाता है।
सब चलते दुसरो के पदचिन्हो पर, वो पद चिन्ह बनाता है।"

कोलकता शहर के पिछले १२५ साल (१९००-२०२४) कालखंड के इतिहास पर गौर करने पर, मारवाड़ी समुदाय के पांच महत्वपूर्ण सामाजिक नेतृत्व की विशिष्ठ सूची बनाने बैठा, तो काफी जद्दोजहद के बाद मेरा मन ओर मस्तिष्क घनश्याम दास बिड़ला, सीताराम सेक्सरिया, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, नंदकिशोर जालान, और पुष्कर लाल केडिया को चिन्हित कर पाता हूँ।

मेरे इस चुनाव का उद्देश्य ना तो अन्य अनेक हजारो कार्यकर्ताओ के योगदान को कम समझना है और ना ही, मै अपेक्षा करता हू कि मेरे चुनाव से कोई एक भी व्यक्ति सहमत हो। इस सूची में, पाठक, ना तो क्रम और ना ही, आपके पसंद-नापसंद के नाम के होने या ना होने के चक्कर मे पड़े। उपर्युक्त सूची एक नितांत व्यक्तिगत चुनाव का विषय है। इसलिए शुरू से ही मैं सबसे क्षमा मांगते हुए, किसी प्रकार के नये विवाद को ना खड़ा करने का विनम्र अनुरोध करता हूँ।

चलिए, इस आलेख के नायक नंदकिशोर जालान जी के जीवन यात्रा और उनके सामाजिक दायित्व के विशाल कैनवस की चर्चा पर फोकस कर, वर्तमान ओर आने वाली पीढ़ी को जालान जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित कराके सामाजिक सेवा की तरफ प्रेरित करे।

संजोग देखिए, मेरा ४५ साल का प्रोफेशनल कैरियर बिड़लाजी ओर सेक्सरिया जी के संस्थाओं से ही जुड़ा हुआ है। इन दोनो महानुभावो से कभी मेरी व्यक्तिगत मुलाकात तो नही हुई पर इनका संघर्षमय जीवन, उपलब्धियाँ और सामाजिक योगदान मेरे जीवन यात्रा का पाथेय है।

'पर प्रभुदयाल जी, नंदकिशोर जी और पुष्कर लाल जी को नजदीक से देखने, मिलने और समझने का सौभाग्य जरूर मिला। यादों के झरोखे मे झांकने से जालान जी का प्रथम चित्र १९६७-६८ मे टाटानगर मे हुए बिहार प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन मे, सफेद कुर्ता और धोती मे ओजपूर्ण भाषण देते हुए ही आता है। एक छात्र कार्यकर्ता के रूप में, उस सम्मेलन में मेरा परिचय, समाज रत्न रामेश्वर जी टांटिया, गौरीशंकर जी डालमिया, एवं जालान जी से हुआ। सम्मेलन के समापन के साथ ही मेरा सक्रिय सामाजिक सरोकार भी विराम में रहा।

मेरे मामाजी, जुगसलाई टाटानगर निवासी, बाबूलाल जी चौधरी अपनी सामाजिक सक्रियता के साथ समाज विकास और सामाजिक प्रचार तंत्रो के माध्यम से मारवाड़ी समाज के कुरीति सुधार से जुड़े थे। मेरा भी सीमित लगाव सामाजिक गतिविधियों से रहता था।

कोलकाता – जालान जी की जन्मभूमि, शिक्षा भूमि और कर्म भूमि रही। किशोर अवस्था से ही समाज में व्याप्त कुरीतियो: पर्दा प्रथा, नारी शिक्षा का अभाव, दहेज का अभिशाप, मारवाड़ी समुदाय की उच्च शिक्षा के प्रति उदासीनता, शादी विवाह पर अनावश्यक खर्चा आदि का प्रखर विरोध और साथ में आंदोलन किया। उनकी कथनी और करणी में एकरुपता थी। सीताराम सेक्सरिया, भंवरमल सिंधी, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका रामेश्वर टांटिया, गौरीशंकर डालमिया जैसे अनेक मारवाड़ी सामाजिक नेताओं के कर्मठ सहयोगी होने का सौभाग्य और गौरव जालान जी को मिला।

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, पोद्दार/हलवासिया छात्र निवास, संगीत ज्योत्सना, नवलगढ़ शिक्षण संस्थान, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी जैसी अनगिनत संस्थान जालान जी के सामाजिक सरोकार और उन सबके विकास में उनके विशिष्ठ योगदान के साक्षात प्रतीक है।

सामाजिक प्रकल्पो के लिए आर्थिक धन संग्रह करने में जालान जी की अप्रतिम दक्षता थी। १९७६ में पोद्दार छात्र निवास मे दाखिले के समय उन्होने मुझसे पूछा- कलकता में किसको जानते हो? मैने कहा- आपको। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और कहा मैंने तो कभी तुमको देखा भी नहीं? मैने तब १९६७ में टाटानगर मे मारवाड़ी सम्मेलन समारोह के समय हुई परिचयात्मक मुलाकात का जिक्र किया तो वो मेरे भोलेपन से दिये गये संदर्भ पर खिलखिलाकर हंस पड़े।

जालान जी का बिड़ला परिवार से बहुत ही घनिष्ठ संबंध रहा। बड़ाबाजार के काली गोदाम में एक साथ गद्दी होने तथा हेयर स्कूल में पढ़ने के फलस्वरूप जालान जी का कृष्ण कुमार जी बिड़ला, गंगा प्रसाद जी बिड़ला और बसंत कुमार बिड़ला जी से बड़ी आत्मीयता थी।

सन २००० के आसपास जालान जी के पौत्र सिद्धांत का विवाह मेरे मेंटर स्वर्गीय छगन लाल - इंदु देवी मौहता की पुत्री ममता से हुआ। विवाह समारोह के दौरान, स्वर्गीय गंगा प्रसाद जी बिड़ला को घंटो कई विषयो पर जालान जी से बातचीत करते हुए, मैने देखा। सरल हृदय, मधुर मुस्कान, समय का सटीक पालन, सामाजिक कार्यो के प्रति तन-मन-धन से प्रतिबद्धता - नंदकिशोर जालान जी के मानवीय चरित्र के गौरवपूर्ण आयाम है।

शारांश मे, मैं तो यही लिखूंगा:

जब तक ऊपर नभ से सूरज है रौशन
धरा पर गंगाजल में रवानी रहेगी
मारवाड़ी समाज के इतिहास के पन्नो पे
नंदकिशोरजी की अमर कहानी रहेगी।

About **DECCAN**

DECCAN is a progressive company with a proven history of innovation and manufacturing excelling spanning over five decades. DECCAN continues to introduce new technology and products that improves efficiency, safety and RoI.

About **DECCAN Insulators**

DECCAN is a pioneer and the largest manufacturer of Silicone Composite Insulators in India. DECCAN operates in multiple mission-critical segments of power transmission, substation, high voltage equipment, railways and urban rail transport (metro). DECCAN has consistently proved its superiority and has earned the confidence of all major Power Utilities. DECCAN'S products are found extensively across projects in India and about 33 countries around the world.

IMS CERTIFIED | ISO 9001 Quality | ISO 14001 Environment | ISO 45001 Health & Safety

G1-G7 , TSIIC Sultanpur, Sangareddy,
Hyderabad, Telangana, India, PIN:502319

info@deccan.in

+91 99488 84442

नंदकिशोर जालानः तन भी सुंदर मन भी सुंदर

शिव रतन फोगला
कार्यकारिणी सदस्य
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

श्री नंदकिशोर जालान और मारवाड़ी सम्मेलन एक दूसरे के पर्यायवाची बन गए थे। यह सौभाग्य बहुत कम लोगों का होता है कि वह किसी संस्थान के नाम से जाने जाए या कोई संस्था उनके नाम से जानी जाए। नंदकिशोर जी उन सौभाग्यशाली व्यक्तियों में थे। नंदकिशोर जी मारवाड़ी सम्मेलन संगठन के भीष्ण पितामह थे। यह दर्जा उन्हें यूं ही नहीं मिला था। इसके लिए उन्होंने एक लंबी यात्रा की। अपने कारोबार योग्य सुपुत्रों को सौंप दिया और जुट गए सम्मेलन में। एक तरह से उन्होंने धूनी रमा ली थी। नंदकिशोर जी जहां भी जाते ऐसा लगता था कि पूरा सम्मेलन आ गया है। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं थी वास्तविकता थी। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक था। गोल चेहरा, चश्मा, उम्र के बढ़ते पड़ाव में भी उनके चेहरे पर रुआब था। लेकिन स्वभाव से वे बहुत विनम्र थे। सब की बात सुनना और सबसे प्रेम से मिलना उनके व्यक्तित्व की खूबी थी। भ्रमणकारी थे। विक्टोरिया मेमोरियल के प्रतिदिन प्रातः सैलानियों में नंदकिशोर जी का नाम उल्लेखनीय है। बाद में पांव से लाचार हो गये तो प्रातः भ्रमण बंद करना पड़ा।

मारवाड़ी समाज कई तरह के पड़ाव से गुजरा है। राजस्थान से आकर बंगाल में विशेष कर कोलकाता में बसा। समाज में भिन्न-भिन्न तरह के लोग थे। उस समय औद्योगिक विकास शुरू हुआ था। वे विमल शर्टिंग शूटिंग में कारोबारी थे। कारोबार में भी नंदकिशोर जी बहुत समन्वयवादी थे। मीठा काम था और बड़े निष्ठा से उन्होंने अपने कारोबार को जमाया। उनकी विशेषता थी कि उन्होंने व्यापार और सामाजिक सरोकार दोनों में महारत हासिल थी। किंतु इन दोनों प्रवृत्तियों में कभी घालमेल नहीं किया। सम्पन्न थे किंतु कभी अहम नहीं पाला। एक बात जो हम लोगों को उनसे सीखनी है कि वह यह है की जालान जी बहुत प्रगतिशील विचारधारा के थे। स्वर्गीय ईश्वर दास जालान और बिड़ला परिवार के आदर्शों को जीवन में उतारा लेकिन अंधे होकर किसी का अनुसरण नहीं किया।

समाज सुधार के लिए श्री नंदकिशोर जी ने जीवन भर संघर्ष किया। शादी विवाह में आडंबर के वह खिलाफ थे। इसलिए कई शादियों में जहां आडंबर का बोलबाला होता वह नहीं जाते थे। समाज सुधार के आंदोलन में उन्होंने ईश्वर दास जालान एवं भंवरमल सिंघीजी जैसे गांधीवादी नेताओं का अनुसरण किया। नंद किशोर जी की विचारधारा बहुत स्पष्ट थी कथनी और करनी में फर्क नहीं था।

जालानजी ने कार्यकर्ता भी तैयार किये। मारवाड़ी समाज में सुधारवादी नेताओं में नंदकिशोर जी अग्रणी थे। कभी नेता की तरह नहीं कार्यकर्ता की तरह ही काम किया। धनोपार्जन में भी उन्होंने संयम से काम लिया। रहन-सहन में सरलता बरती। वे कभी भी अपने आदर्शों में डिगे नहीं एवं उनको दिखावे एवं फिजुलखर्ची से नफरत थी। नन्द किशोर जी ने अपने परिवार की शादियों में सादगी रखी। अपने पारिवारिक सम्बन्धों के यहां भी शादी में फिजुलखर्ची होती तो वे नहीं जाते थे।

सम्मेलन के प्राण थे

जुगल किशोर अग्रवाला
समाजसेवक, जोरहाट

समाज विकास के प्रकाशन में इनकी अहम भूमिका थी। १९७३ में समाज विकास के संचालन का भार श्री नन्दकिशोरजी जालान को दिया गया। कौस्तुभ जयन्ती यानी २०१० समय समय पर समाज विकास के संपादन का कार्य करते रहे।

आपका जन्म १६ सितम्बर १९२४ को कोलकाता में हुआ था। श्री जालान जी मंत्री का कार्यभार १९५४-६२ एवं १९७४-७९। सन् १९८२ में जमशेदपुर में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित हुए। आपने २००१ तक अध्यक्षीय भार संभाला।

मारवाड़ी युवा मंच के नवम् राष्ट्रीय अधिवेशन रांची में "समाजगौरव" के रूप में आपको सम्मानित किया गया था।

२२.०९.२०१० को कौस्तुभ जयन्ती समारोह में मुझे जोरहाट से कोलकाता के कलामन्दिर सभागार में उपस्थित रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रतिभा देव सिंह पाटिल द्वारा किया गया था। उस समय ८६ वर्षीय वयोबृद्ध पूर्व वरिष्ठ अध्यक्ष नन्दकिशोरजी जालान का सम्मान राष्ट्रपति द्वारा किया गया।

मारवाड़ी सम्मेलन जोरहाट शाखा द्वारा श्री नन्दकिशोरजी जालान राष्ट्रीय अध्यक्ष का ६.११.१९९५ को सम्मानित किया गया। उस समय श्री रामचन्द्रजी मालपानी शाखाध्यक्ष और श्री जुगलकिशोर अग्रवाल मंत्री थे।

१९८९ में जब असम में आतंकवाद जबरदस्त फैल गया था व कामरूप चेंबर ऑफ कॉमर्स के सचिव शंकर विरमीवाल की हत्या कर दी गई थी, उस समय पूरे असम में दशहत का माहौल था। उस समय मैं भी कोलकता गया हुआ था। हमारे जोरहाट के स्व. सोहनलालजी पिंचा होजाई के स्व. ओंकारमलजी अग्रवाल अध्यक्ष पूप्रमास, श्री रामगोपालजी अग्रवाल एडवोकेट, डिब्रुगढ़ प्रधान सचिव पुप्रमास, हम सब एक साथ श्री जालानजी के निवास पर विचार-विमर्श के लिये गये थे। उन्होंने हमारी बातें बहुत दिलचस्पी से सुनी व उनके यहां खाना खाया व काफी समय चर्चा में लगा।

श्रीमान जालानजी पूरे भारतवर्ष में संस्था के जरिये भ्रमण करके मारवाड़ी समाज में क्रांति पैदा की, बहुत सारे समाज-सुधार उनके नेतृत्व में हुआ था।

मैं उनकी जन्म शतवार्षिकी पर नमन करता हूँ व उनकी आत्मा की शान्ति की प्रार्थना करता हूँ।

Wonder images PVT. LTD.

wonder images

ISO 9001:2015 & 45001-2018 Certified Company

Wonder Images is an ISO 9001:2015 & 45001-2018 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising, Signage & Store Branding with daily printing capacity of 100,000 sq.ft. Having HP XLJET 1500 for Back-to-Back print VUTEK 3360, GS3250LX PRO UV Hybrid Machine FUJI-UV 1600R & LATEX 700/335 including CNC Router / Laser

Back-lit-flex • Front-lit-flex • Building Wrap • One Way Vision • Self Adhesive Vinyl Vehicle / Fleet Graphics • Full setup of FABRIC Boxes • Floor And Wall Graphics Mesh, Tyvek, Yupo • Reflective Signage • Frosted Vinyl • Translite • Canvas Direct Print on ACP, Acrylic, Glass, WPC, Plywood and many other hard Surfaces.

Eastern India's **Largest** Indoor - Outdoor Printers.

inhouse production of Signage **ACP & ACRYLIC**

Fully automated **Signage** Installation process.

Billboard sites & **Unconventional** media space.

Contact Us:

Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in

बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे जालान जी

शम्भु चौधरी
कोलकाता

आदरणीय स्व. नंदकिशोर जालान जी मारवाड़ी समाज को संगठित करने की सोचते थे, उनके मन में मारवाड़ी सम्मेलन के बीज स्व. ईश्वरदास जालान जी के द्वारा पड़े थे।

मेरी पहली मुलाक़ात उनके साथ मुजफ्फरपुर (बिहार) के व्यायामशाला के बिहार अधिवेशन के दौरान हुई थी, उस समय तक मारवाड़ी युवा मंच के गठन और उसके हल्की सी सुगबुगाहट सुनने को मिली थी। श्री रतन शाह जी के भाषण में युवाओं को जोश भरने और समाज के युवाओं को सांगठित होने की जरूरत पर बल दिया गया था।

तब मेरी उम्र २२-२३ साल की रही होगी। यह कालखंड (तिथी ठीक से याद नहीं) शायद १९८२-८३ का रहा होगा।

मैं जिस परिवार से जुड़ा हूँ और मेरे कटिहार से मुजफ्फरपुर के प्रवास के दौरान मुजफ्फरपुर में मुझे स्व. ईश्वर दास जी के कमरे में ही रहना होता था चुंकि तब तक स्व. ईश्वर दास जालान जी का पूरा परिवार कोलकाता शिफ्ट कर चूका था और उनकी संपति, जमीन की देखभाल मुजफ्फरपुर के बासुदेव सिंह जी (मैनेजर) के जिम्मे था। नंदकिशोर जालान जी की मेरी निकटता उसी दौरान हो गई।

फिर मुझे कोलकाता आना हुआ, तब साल १९८४ का रहा होगा। नंदकिशोर जालान जी से कोलकाता आते ही संपर्क किया, फोन पर मिले नहीं, ऑफिस में उनका कोई कर्मचारी होगा, बोला, सर जी आने से बात करवाता हूँ दूसरे दिन सुबह सात बजे का समय हुआ होगा उनका फोन मैं जिस होटल में ठहरा हुआ था, आ गया मैं अवाक रह गया, जालान जी ने खुद ही फोन किया था बोले 'आप' कब तक हो कोलकाता?

मैंने बताया कि मैं अब स्थायी रूप से ही अब कोलकाता रहने की सोच रहा हूँ घर भाड़ा का देख रहा हूँ तब उन्होंने मुझे कोलकाता में सम्मेलन के काम में हाथ बाँटने को कहा और ऑफिस में आकर मिलने को भी। मैं सम्मेलन से जुड़ गया, रतन जी, भंवरमल सिंघी जी, सुशीला सिंघी जी से मुलाकाते होने लगी। वे सम्मेलन की कई जिम्मेदारियां मुझे देने लगे जालान जी चाहते थे कि सम्मेलन में, मैं संगठन की जिम्मेदारी संभाल लूँ, जबकि मेरी रूचि लिखने-पढ़ने की तरफ थी। जालान जी मुझे हमेशा इस बात के लिए प्रेरित करते थे कि मैं उनके साथ ही रहूँ, परन्तु तब तक मैं मारवाड़ी युवा मंच से सक्रिय रूप से जुड़ चूका था, गुवाहाटी में युवा मंच का प्रथम अधिवेशन होना तय हो चूका था।

युवा मंच से जुड़ जाने के बाद, सम्मेलन की ऑफिस में ही उन्होंने मुझे बैठने और मारवाड़ी युवा मंच का सारा काम करने दिया, जब भी उनको मेरे से कोई भी बात करनी होती, मथुरा सिंह जी ही हमारे बीच कड़ी के रूप में संवाद वाहक के रूप में काम किया करते थे एक बार कोर्ट के एक सम्मेलन के केस को लेकर मुझे कड़ी के रूप में रखे। नथमल जी हिम्मतसिंहका को वह कार्य दिया गया। उस समय रुमापाल जज थी। सारी बातें नहीं लिखी जा सकती।

जालान जी एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। अपने पैसे से सम्मेलन को चलाना, पोद्दार छात्रावास की देखभाल करना, अम्हर्स्ट स्ट्रीट मारवाड़ी हॉस्पिटल में सेवा देना, उनका दैनिक कार्यक्रम सा बन चूका था। समाज विकास के प्रकाशन की जिम्मेदारी।

एक दिन सीताराम शर्मा जी का फोन आया कि मैं उनसे आकर मिल लूँ। तब तक मुझे नहीं पता था कि मेरे ऊपर समाज विकास के प्रकाशन की जिम्मेदारी देने का सोचा जा रहा है। श्रद्धेय सीताराम जी ने मुझे कहा कि मैं समाज विकास की जिम्मेदारी जालान जी से ले लूँ और जालान जी से मुझे मिलने कहे तब वे काफी अस्वस्थ चल रहे थे। उनसे मिला तो उनका वही स्नेह मेरे ऊपर देखने को मिला, बोले "तुम आ गए हो, मुझे अब कोई चिंता नहीं"। उन्होंने मुझे संपादक का भार सौंप दिया था पर मेरे मन में उनके प्रति जो आदर, सम्मान था, मेरे संपादकीय कार्यकाल में उनका नाम संपादक की तरह ही जाता रहा। उनके साथ बिताये वो क्षण मेरे लिए अमूल्य धरोहर है। समाज के लिए वो जीते थे, हर पल उनका समाज के प्रति समर्पित था। ऐसे अदभुत प्रतिभा के धनी व्यक्ति के साथ मेरा काम करना, मेरे जीवन को सफल कर दिया।

मैं उनके विषय में कुछ भी लिखूँ, यह मेरी धृष्टता होगी। फिर भी भाई शिव कुमार लोहिया जी का आदेश मिला तो जालान जी के प्रति मेरे श्रद्धा सुमन अर्पित करते हेतु अपने पुष्प अर्पित करता हूँ। आज भी मुझे उनको स्व. शब्द देना भारी सा लगता है। श्री जालान जी की आत्मा मारवाड़ी सम्मेलन में बसी है। ऐसा लगता है, आज भी रोजाना की तरह शाम को वो सम्मेलन के दैनिक काम देखने आते हैं। इन्हीं शब्दों के साथ।

संस्मरण

समर्पित समाज सेवी

ओम प्रकाश खण्डेलवाल
निवर्तमान प्रांतीय अध्यक्ष पू. प्र. मा. स.
पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अ.भा.मा.स.

स्वनाम धन्य स्वर्गीय नन्द किशोर जी जालान एक सहज, सरल, विनय एवं मृदु स्वाभाव के धनी व्यक्ति थे। १९८०-९० के दशक में अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के गुवाहाटी दौरे के समय मैने दो बार उनसे व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की थी। गौहाटी गौशाला के प्रांगण में आयोजित एक सभा में मारवाड़ी समाज तथा सम्मेलन कार्यों एवम् गतिविधियों के बारे में उनके विचार सुनने का मौका मिला। मेरे गुवाहाटी निवास स्थान पर भी पिताजी स्वर्गीय जयदेव जी खण्डेलवाल साथ भेंट वार्ता में समाज की ज्वलन्त समस्याओं के सम्बन्ध में विशद चर्चा हुई। मारवाड़ी सम्मेलन की शाखायें तथा सदस्य संख्या वृद्धि पर उन्होंने मुझसे भी कड़ी मेहनत से कार्य करने का सुझाव दिया। सम्मेलन का मुख पत्र **'समाज विकास'** किस प्रकार अधिक उपयोगी बने, इस सम्बन्ध में काफी विचार-विमर्श हुए। उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हें भी मारवाड़ी सम्मेलन तथा समाज के कार्यों में अधिकाधिक रुचि लेकर कार्य करते रहना चाहिये। उनका यह आदेश मेरे सामाजिक जीवन का प्रेरणा स्रोत बना।

श्रद्धास्पद जालान जी की समाज सुधार तथा कल्याण के कार्यों के प्रति उनकी लगन, समर्पण, एवं दृढ़ संकल्प को देखकर मैं अभिभूत हुए बिना नहीं रह सका। स्व. जालान जी जीवन पर्यन्त अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की एक प्रकाश स्तम्भ के रूप में निष्काम सेवा प्रदान करते रहे। शतशः नमन्।

दायित्वों के कुशल निर्वाहक

जगदीश मुँधड़ा
पुर्णिया

सबसे पहले, हम सभी को इस बात पर गर्व होना चाहिए कि हम एक ऐसे व्यक्ति के शताब्दी समारोह का हिस्सा हैं, जो स्वयं समाज सेवा और समाज विकास की संस्था थे!

सामाजिक मुद्दों और सरोकारों के प्रति उनकी भागीदारी और भागीदारी की गाथा, स्वतंत्रता-पूर्व युग में शुरु हुई, जब सब कुछ निराशा और अनिश्चितता की स्थिति में था!!

कोई केवल आश्चर्यजनक रूप से सोच और कल्पना कर सकता है कि अपने विचारों और उद्देश्यों की सदस्यता लेने के लिए कुछ समान विचारधारा वाले लोगों को संगठित करना और इकट्ठा करना उनके लिए कितना कठिन रहा होगा!!

खैर, हम सभी अपने दैनिक जीवन में अन्याय और अनुचितता का सामना करते हैं।

लेकिन, इसे श्री नंद किशोर जालान जैसे सुधारक की जरूरत है, जो सामाजिक उत्थान और विकास का मार्ग दिखाने और प्रकट करने के लिए प्रकाश स्तंभ रखता है!!

और, उनकी उपलब्धियों और उपलब्धियों को मापने के लिए यह मेरी ओर से एक निरर्थक प्रयास होना चाहिए!! उनके समकालीनों और साथी-पुरुषों के दिलों में इसकी गवाही और पुष्टि पर्याप्त है!!

मारवाड़ी एकता जिंदाबाद, बाबूजी को मेरा सतत नमन..

नंदकिशोर जालान एक सरल मना संगठक

उमेश खंडेलिया

सामाजिक संगठन का जन्म विभिन्न परिस्थितियों जनित आवश्यकताओं के कारण होता है। दूरदर्शी नेताओं की दूरदर्शिता, सामाजिक व सकारात्मक सोच व कल्पना के आधार पर गठित संगठन शताब्दीयों तक अपने उद्देश्य का निर्वहन करते हुए आज भी अपनी सार्थकता का अनुभव कराते आ रहे हैं। ऐसे कार्यकर्ताओं के सबल समर्पित नेतृत्व के चलते ही समाज में संगठन की स्वीकार्यता बनी रहती है। अन्यथा समाज के लिए अप्रासंगिक हो जाना ही स्वाभाविक है। १९३५ में तब की परिस्थितियों के मद्देनजर नजर मारवाड़ी समाज के हितों की रक्षा हेतु मारवाड़ी सम्मेलन का गठन हुआ था। राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर तक के वर्तमान तक की संगठित व विकसित स्थिति हेतु अतीत में नेतृत्व देने वाले सभी कार्यकर्ता व नेताओं को हम हृदय से नमन करते हैं। मारवाड़ी समाज के इस अन्यतम संगठन के महत्व को मैंने अपने शैशव काल से ही आत्मसात किया है। मेरे आदरणीय पिता स्वर्गीय हरीराम जी खंडेलिया अपने डिब्रूगढ़ आवासकाल से ही सम्मेलन के संपर्क में रहे हैं। धेमाजी महकमा गठन के पश्चात १९७१ में बिहारी लाल जी लोहिया व राधाकृष्ण जी खेमका के प्रयासों से हरिराम खंडेलिया की अध्यक्षता में ही धेमाजी शाखा का गठन हुआ। १९८४ में मृत्यु पर्यन्त उनके अध्यक्ष काल में प्रह्लाद जी राठी शाखा मंत्री के रूप में उनके सहयोगी रहे। १९८२ में शिलांग में अनुष्ठित प्रांतीय अधिवेशन में उन दीनों मनिषियों के साथ आनेवाली टीम के कनिष्ठतम प्रतिनिधि के तौर पर मैं भी उपस्थित था। बच्चों में समाजिक जागरूकता पैदा करना ही इनका उद्देश्य रहा होगा।

इसी अधिवेशन में पूर्वोत्तर के आदरणीय भगवती प्रसाद जी लड़िया, छगनलाल जी जैन, डॉक्टर गिरधारी लाल सराफ, राष्ट्रीय नेता आदरणीय भंवरमल जी सिंघी, नंदकिशोर जालान, रतन जी शाह बजरंगलाल जी जाजू आदि मनिषियों का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष बिहारी लाल जी लोहिया और राधा कृष्ण जी खेमका के दर्शन भी हुए थे। गर्व से कहो हम मारवाड़ी है जैसे जोशीले आह्वान के साथ रतनजी शाह का संबोधन हम जैसे किशोर के लिए एक नूतन अनुभव था। भंवरमल जी सिंघी व सुशीला जी सिंधी का अभिभावकीय संबोधन, नंदकिशोर जी जालान का भावी योजना आयारित वक्तव्यों ने मुझ में भी प्रेरणा का संचार किया। ऐसे ही प्रेरणा के आधार पर २० जुन १९८३ में मारवाड़ी युवा मंच धेमाजी शाखा का गठन हुआ।

१९८३ के जुलाई माह के अंतिम सप्ताह में बिहार प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के संयोजन में कार्यकर्ता परिसंवाद व कार्यशाला का आयोजन हुआ था। धेमाजी शाखा सम्मेलन की अपेक्षा अनुसार नवगठित मंच कार्यकर्ताओं का एक दल शाखा सचिव उमेश खंडेलिया (लेखक) सहित नंदकिशोर राठी, विमल खंडेलिया व सज्जन थर्ड उक्त कार्यशाला में शामिल हुए। ज्ञातव्य है कि उस वक्त मंच सम्मेलन की ही युवा ईकाई के रूप में परिचित थी।

संस्मरण

स्व. नंदकिशोर जालान – एक कर्मठ योगी

पवन कुमार लिल्हा
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

श्री मद्भगवद् गीता के तीसरे अध्याय के २१वें श्लोक मे भगवान श्री कृष्ण ने कहा –

यद्यदाचरति श्रेष्ठःसत्त देवेतरो जनः।
स सत्प्रमांग कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।

अर्थात कोई भी महापुरुष जो आचरण (व्यवहार) करता है, सामान्य व्यक्ति उसी का अनुसरण करते है और जो वे आदर्श प्रस्तुत करते है सम्पूर्ण विश्व उसी का अनुसरण करते है।

ये बाते कही गयी है, नंदकिशोर जी जालान के लिये उन्होंने अपने जीवन काल में विभिन्न रूपों में मारवाड़ी समाज को अपनी सेवा का योगदान दिया है। किसी क्षेत्र में आर्थिक रूप से भी मदद करनी होती तो वे कभी भी पीछे नहीं हटते।

संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म क्षेत्र में कभी भी बिना कार्य किये रह नहीं सकता है। हमेशा किसी न किसी की सेवा करते रहते। कार्य करते-करते ऊँचे उठते रहते हैं। कही कोई भी व्यक्ति उच्च पद पर काम करते-करते सफलता प्राप्त कर लेता है। इसमे उस व्यक्ति को धन का या पद का अभिमान आना स्वभाविक है। हालाँकी जब भी कोई व्यक्ति भौतिक संसार में रहता है तो उसमे ज्ञान बुद्धि और अहंकार भी रहता है। अहंकार हर मानव में आ जाना स्वभाविक है। पद का अहंकार, धन का अहंकार, रूप का अहंकार, और फिर संचय की तृष्णा भी बढ़ती जाती है। हम परिग्रह करते रहते हैं। अगर हम संसार मे आये तो हम कुछ भी नहीं लाये और जायेंगे तब भी कुछ नहीं ले जायेंगे। जो मिला हमें यही से मिला, जो कमाया यही से कमाया। संचय से फिर कई बाधाएँ आती है। चोरी का भय, रख रखाव करने का खर्च आदि। मनुष्य को अपना काम निरंतर करते हुए भगवान की भक्ति करते रहना चाहिए। भगवान (श्री कृष्ण) ही सभी कारणों के कारण हैं और हम तो भगवान के ही अंश हैं।

जालान जी ने समाज की सेवा पर विशेष ध्यान दिया। वे २६ वर्ष की उम्र मे ही अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारी हो गए। जालान जी क्रांतिकारी रहे है और अपना निर्णय सही दिशा में देते थे, जिससे उनकी धर्म निष्ठा बढ़ती गयी और समाज की लोगो उनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगने लगे। उनकी कार्यों के प्रति बहुत निष्ठा रहती थी, उनके कार्य काल में कुछ आर्थिक समस्या आयी गयी थी तो उन्होंने अपने पास से पैसे मिला के समाज विकास की मासिक निकालना बंद नहीं होने दिया और आज भी एक अच्छी साफ सुथरी पत्रिका हैं और अब एक-एक प्रति का इंतजार रहता है।

इसी बीच नंदकिशोर जी जालान ने जी पोद्दार छात्र निवास के कार्य भार संभाला और वे उनके सभापति के रूप में ०५.०८.१९९१ से ०६.०८.२०११ तक लगभग २०-२१ वर्षों तक सुचारू रूप से कार्य किया। उन्होंने छात्रों के बीच व्याप्त तनाव को और भोजनालय की भी उचित व्यवस्था की ताकि छात्रों को घर जैसा गरम एवं शुद्ध भोजन प्राप्त होता रहें। उन्होंने वहाँ के कार्यकलापों पर एक अमिट छाप छोड़ी।

मेरा शत शत नमन

अशोक कजरिया
दुर्गापुर

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के भूतपूर्व कर्मठ राष्ट्रीय अध्यक्ष स्व. नंदकिशोर जी जालान का १००वां जन्म जयंती मनाया जा रहा हैं। इसके लिए बहुत-बहुत साधुवाद।

श्री नंदकिशोर जी जालान को सर्वप्रथम मेरा देखने का अवसर १९७६ में दुर्गापुर में शाखा की स्थापना करने अपने सहयोगी श्री विशंभर नेवर, श्री रामकृष्ण जी, सरावगी तथा श्री रतन शाह, के साथ पधारे थे उस समय शायद मैं हाफ पेंट में अपने पिता स्वर्गीय श्री राम कुमार कजरिया की उंगली पकड़कर उन लोगों के स्वागत में लीन था। उन लोगों के उत्सावर्धक भाषण से जिस समाज में नई गति आई, विराम भूमि पर स्थापना हो रही थी उस विराम भूमि पर आज समाज के द्वारा तैयार की हुई धर्मशाला एवं मंदिर श्री लक्ष्मी नारायण भवन की स्थापना हो चुकी है, जो कि समाज की सभी गतिविधियों को त्वरित तरीके से संचालित कर रही है। श्री नंदकिशोर जी जालान संगठन को मजबूत करने के लिए कई बार दुर्गापुर पधारे। उनके मार्गदर्शन के कारण ही हम लोग करीब ४८ साल से दुर्गापुर शाखा को लगातार चला पा रहे हैं। उनके साथ मेरा कई बार पत्र व्यवहार भी हुआ। २००१ में गिरिडीह, झारखंड के एक तलाक के मामले में श्री जालान जी की त्वरित कार्यवाही से हमें प्रोत्साहन मिला एवं अन्य कार्य करने में उत्साहवर्धक रहा। पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, पुनर्विवाह तथा सामाजिक उत्थान पर विभिन्न कार्यक्रम चला कर के उन्होंने अपनी भूमिका का निर्वाह किया। असम एवं उड़ीसा में आए तनाव को कम करने में सार्थक भूमिका निभाई। इस तरह के विभूति को मेरा शत-शत नमन।

Great but Humble

Dr. Bimal Chajjer
Delhi

Mr. Jalan was a great socialite who spent all his life serving people. His untiring efforts to bind the whole Marwari community together was unmatchable. A great but humble human being! Salute to his personality!

श्रद्धासुमनः स्वर्गीय नंद किशोर जालान

अनिल कुमार जाजोदिया
पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष : अ.भा.मा.स.
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष : अ.भा.मा.यु.मं

स्वर्गीय नंद किशोर जालान का नाम न केवल मारवाड़ी सम्मेलन में, बल्कि पूरे मारवाड़ी समाज में बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा स्रोत रहा है। उनके अद्वितीय योगदान और समर्पण को याद करते हुए, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की पत्रिका **"समाज विकास"** के विशेष अंक में उनसे जुड़े संस्मरण पर प्रकाश डालना अत्यंत गर्व का विषय है।

मुलाकात से पहलेः

मारवाड़ी युवा मंच की प्रारंभिक सक्रियता के दौरान ही आदरणीय नंद किशोर जालान जी का जिक्र सामने आता रहा और लोगों द्वारा उनके सामाजिक योगदानों के बारे में बहुत सारी बातें बताई गई जिनमें कोलकाता में उनके सेवा कार्य, मारवाड़ी सम्मेलन के कुशल संगठनकर्ता और मारवाड़ी युवा मंच की स्थापना के महत्वपूर्ण शिल्पी का उल्लेख अत्यन्त ही सम्मान के साथ होता था।

उनके सांगठनिक कौशल ने उन्हें न केवल एक सफल नेतृत्वकर्ता बनाया, बल्कि उन्हें देशभर में एक आदर्श व्यक्ति के रूप में भी स्थापित किया। उन्होंने भी अपने जीवन में ईमानदारी, निष्ठा और मेहनत को सर्वोपरि रखा।

मुलाकात के दौरानः

कई वर्षों के बाद उनके आवास पर उनसे मिलने का संजोग बना और उनके विचारों को जानने समझने का अवसर मिला। जालान जी का मानना था कि समाज सेवा ही सच्ची सेवा है। उन्होंने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा समाज सेवा के कार्यों में व्यतीत किया। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्य किए। और खास बात यह रही कि इन मुलाकातों में वे सदैव अपने योगदान को नगण्य ही बताते रहे और दूसरों का नाम लेकर उनकी चर्चा करते थे।

राष्ट्रीय अध्यक्षीय कालः

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में मेरा श्री नंद किशोर जालान जी से मिलना और उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करने का अनुभव बहुत ही शानदार रहा। उन्होंने संगठन और समाज की बारिकियों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हुए अपने बहुमूल्य सुझाव दिये और प्रोतसाहित भी किया।

उनका मानना था कि सेवा के कार्यक्रमों का लाभ यथासंभव, हर व्यक्ति तक पहुंचना चाहिये और इन कार्यक्रमों की योजना बनाने में हर व्यक्ति, हर वर्ग की हिस्सेदारी पर भी ध्यान देना चाहिये।

समाज गौरव सम्मानः

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के अष्टम राष्ट्रीय अधिवेशन कारवां २००८, रांची के अवसर पर श्री नंद किशोर जालान जी को प्रतिष्ठापरक समाज गौरव सम्मान से विभूषित किया गया था। स्वास्थ्य कारणों से वे इस आयोजन में स्वयं उपस्थित न हो सके, जिसकी पूर्ति हम लोगों ने अगले माह कोलकाता में उनके आवास पर जाकर यह सम्मान भेंट कर की थी।

इस समाज गौरव सम्मान के माध्यम से हमने मारवाड़ी युवा मंच की स्थापना, सम्मेलन के माध्यम से समाज को सशक्त बनाने में जो उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है, उसके प्रति अपना नमन, अभिनंदन और भावांजली व्यक्त की थी।

प्रेरणादायक व्यक्तित्व व विरासतः

जालान जी का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। उनकी सादगी, विनम्रता और समाज के प्रति समर्पण हम सभी को प्रेरित करता है। उन्होंने अपने जीवन में जो भी कार्य किए, उन्हें पूरे मनोयोग से किया और अपने आदर्शों पर अडिग रहे। उनके जीवन से हम सभी को यह सीख मिलती है कि सच्ची सफलता केवल धन और समृद्धि में नहीं, बल्कि समाज के प्रति समर्पण और सेवा में है। नंद किशोर जालान जी की विरासत आज भी हमारे बीच जीवित है।

उनके अद्वितीय योगदान और समर्पण को याद करते हुए हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम भी अपने जीवन में उनके आदर्शों और मूल्यों को अपनाकर समाज सेवा के कार्यों में अपना योगदान दें।

नन्द किशोर जालान : अंगुली पकड़कर चलना सिखाया

अलका बांगड़
अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला समिति

आदरणीय भाईजी नन्द किशोर जालान के बारे में कुछ लिखना मेरा सौभाग्य है। जीवन में उनका बहुत ऋण है जिसे उऋण होना असम्भव है। अपने सामाजिक जीवन में उन्होंने अंगुली पकड़कर चलना सिखाया। आज अपने सार्वजनिक जीवन में मैं जो भी हूँ उसमें भाईजी का वरदहस्त का अहम् योगदान है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संगठन से मुझे उन्होंने जोड़ा ही नहीं, वे हमेशा प्रोत्साहित भी करते रहे। पग-पग पर उनका मार्गदर्शन मिला। वे गलतियां भी बताते थे एवं उनको सुधारने में पूरी निष्ठा के साथ मदद भी करते थे। नन्द किशोर जी मारवाड़ी समाज के सिरमौर थे। समाज में पनप रहे विकारों एवं हमारी परम्पराओं में हो रहे ह्रास से चिन्तित रहते थे। अपने को सिर्फ चिन्ता तक सीमित नहीं रखकर उनको सुधारने का भी वे निरन्तर प्रयास करते रहे। समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिये उन्होंने मारवाड़ी सम्मेलन के संगठन को सुदृढ़ किया। हमारे लिये यह गर्व की बात है कि समाज में महिलाओं को आगे बढ़ाने और उन्हें दायित्वशील बनाने की दिशा में भाईजी सक्रिय रहे। अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में उन्होंने अपने को समाज हेतु समर्पित कर दिया था। भाईजी के आशीर्वाद एवं उनकी सक्रियता से ही हमने सम्मेलन में महिला समिति का गठन किया। यही नहीं महिला समिति को एक सर्वांगीण एवं स्वतंत्र संगठन बनाने में उनकी बड़ी भूमिका थी। वे इस बात के प्रबल समर्थक थे कि समाज में महिलाओं को अधिकार एवं दायित्व दोनों का समान रूप से बोध हो। महिला समिति का अध्यक्ष बनाकर मुझे आगे बढ़ने में उन्होंने कोई कसर नहीं उठा रखी थी। अपने संरक्षण में उन्होंने महिला संगठन को आगे बढ़ाया। महिला समिति की राजस्थान में योजनाओं को मूर्तरूप देने के लिये वे मेरे एवं महिला समिति की कर्मियों के साथ राजस्थान भी गये एवं हमारे साथ मिलकर उन्होंने महिला समिति के कार्यों का मार्गदर्शन किया।

उसके साथ मेरे कई संस्मरण हैं। सभी संस्मरण प्रेरक हैं। जोधपुर में कारगिल की विधवाओं को महिला समिति ने सहयोग देने का बड़ा कार्यक्रम किया जिससे उत्तरी कमांड के मुख्य सेनापति एवं कई सैनिक अधिकारी आये थे। इस कार्यक्रम में भाईजी ने न सिर्फ भाग लिया बल्कि इसे सफल एवं ऐतिहासिक बनाने में उनकी बड़ी भूमिका थी। हमारी महिला समिति ने कई शानदार उपलब्धियां भी हासिल की हैं एवं भाईजी का आशीर्वाद एवं उनका सान्निध्य हमें मिला। वे हमारे पितातुल्य अभिभावक थे। उनके साथ किये गये कार्य अविस्मरणीय हैं।

भाईजी ने सामाजिक जीवन में ही नहीं कलकत्ता चेम्बर में भी उन्होंने मुझे अपने सान्निध्य एवं मार्गदर्शन से उपकृत किया। मैं चेम्बर की अध्यक्ष बनी, भाईजी का मुझे आशीर्वाद एवं सहयोग प्राप्त हुआ।

नन्द किशोर जी का अभाव आज भी खटकता है। समाज में ऐसे लोग गिने चुने ही हुए जिन्होंने दूसरों को आगे बढ़ाने में खुशी महसूस की। उनके अभाव की पूर्ति सम्भव नहीं है। हमारा कर्तव्य है कि नन्द किशोर जी की आशाओं के अनुरूप हम समाज के सहयोगी बनें।

समाज विकास के
नंद किशोर जालान
अभिनंदन समारोह विशेषांक में प्रकाशित
संस्मरण
६९वें स्थापना दिवस, २५ दिसंबर, २००२

क्रांतिकारी व्यक्तित्व के स्वामी

गणपतराय धानुका
गुवाहाटी

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष व पूर्व महामंत्री के रूप में श्री नन्दकिशोरजी जालान ने जो सेवाएं समाज और सम्मेलन को प्रदान की हैं, वह अनुकरणीय और अविस्मरणीय है। आपने अनेकों सहज और कठिन यात्राएं की हैं, शायद ही देश के किसी प्रांत का कोई हिस्सा आपने छोड़ा हो, जहां आप समाज के बीच नहीं गये। समाज के प्रति आप में सद्भावनायें कूट-कूट कर भरी हुई हैं। उम्र के इस पड़ाव में भी आप उतने ही सक्रिय हैं, जितने कि युवावस्था में थे। मेरा उनके साथ बरसों का संबंध रहा है, जब भी असम के दौरे पर आते, उनके सान्निध्य का अवसर मिलता। उनके साथ मैंने भी यात्राएं की हैं, उन्हें सदैव चुस्त और दुरूस्त पाया है, अपने सामाजिक जीवन में अपने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं, फिर भी विचलित हुए बिना एक 'मूक साधक' के रूप में आप अपने कर्त्तव्य पथ पर डटे रहे।

'समाज विकास' के माध्यम से आपने समाज को न केवल सामाजिक और पारंपरिक संस्कृति व साहित्य की जानकारी दी, बल्कि समाज के अनगिनत कार्यकर्त्ताओं और विचारकों के व्यक्तित्व और कृतिव्य से समाज को परिचित कराया, तो बतौर एक लेखक और सम्पादक के रूप में आपने समाज को क्रांतिकारी वैचारिक दिशा प्रदान की है। मेरी राय में जालानजी के व्यक्तित्व का सम्मान होना चाहिए, व्यक्ति का नहीं, क्योंकि व्यक्तित्व में ही व्यक्ति की सम्पूर्णता है और उसका अपना अस्तित्व व वजूद भी है। इस अवसर पर मेरा सुझाव है कि श्री जालानजी के विचारशील और प्रेरणादायक लेखों का पुस्तकाकार में प्रकाशन किया जाना चाहिए, जो न केवल धरोहर के रूप में रहेगी, बल्कि आनेवाली पीढ़ी के लिए एक थाती बनकर विद्यमान रहेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। सम्मेलन इस दिशा में चिंतन कर, इसे मूर्तरूप देने का प्रयास करे। समाज इस हेतु हर सम्भवः सहयोग प्रदान करे। श्री जालानजी के सम्पादन में **'समाज विकास'** ने अपनी एक विशिष्ट पहचान कायम कर रखी है जो बहुत कम सामाजिक मुखपत्रों में देखने को मिलता है। समाज विकास के माध्यम से श्री जालानजी ने अनेकों जाने-अनजाने कार्यकर्त्ताओं के कृतित्व से समाज को अवगत कराया है। समाज विकास के पन्नों में यत्र-तत्र सामग्री बिखरी हुई पड़ी है, जो आपने प्रत्येक प्रांतीय दौरों के दौरान एकत्रित की उन्हें एक वृहद पुस्तकाकार रूप में मुद्रित किया जाना चाहिए, वे हमारी 'धरोहर' हैं, जिसे हमें आनेवाली पीढ़ी को सौंपना है।

देश के पूर्व राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा आदि न जाने कितने राष्ट्रीय नेताओं ने समय-समय पर समाज के बारे में अपने ऐतिहासिक और सारगर्भित वक्तव्य दिये, उनसे यह प्रमाणित होता है कि 'मारवाड़ी समाज ने देश के लिए क्या नहीं किया?'

मेरा सुझाव है कि आप इस कार्य हेतु योजना बनावें। मेरे से जो भी बन पड़ा मैं तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करने को तैयार हूँ। समाज के अन्य लोग भी इस कार्य में सम्मेलन को पूरा सहयोग प्रदान करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। इस पुनीत अवसर पर आपने मुझे याद किया, इस हेतु मैं सम्मेलन परिवार का आभारी हूँ और अंत में पुनः श्री जालान जी के **'अभिनंदन समारोह'** की सफलता की मंगलमय कामना करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि श्री जालानजी को स्वस्थ और दीर्घायु प्रदान करें, समाज जालानजी के सेवाओं के प्रति नत मस्तक और चिर ऋणी रहेगा।

सराहनीय व्यक्तित्व श्री जालान के

गुलाब चन्द कोटड़िया
चेन्नई

श्री नन्दकिशोर जालान मूझे अत्यन्त ही सौम्य, शिष्ट, शांत, सरल लगे हैं। अपने काम व समाज सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता अपूर्व है। इतने सालों तक अथक सेवा देने के बाद इस उम्र में भी समाज विकास का सम्पादन का भार ले रखा है। कई बार पत्राचार हुए। कलकत्ता में फेडरेशन के अलावा कई मारवाड़ी संस्थाएं उठ कर खड़ी होती रही हैं और विलुप्त भी होती रही हैं। उन्होंने मेरे एक पत्र के जवाब में यह लिखा था कि इनकी ओर ध्यान ही न दें क्योंकि ये सब अंशकालीन हैं। श्री जालान जी का अ.भा.मा. सम्मेलन में जो योगदान रहा है बहुत ही सराहनीय है। वे इस उम्र में भी ऊर्जावान हैं तथा उनकी कर्मठता नई पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा स्रोत बनेगी। भगवान से करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें दीर्घायु व स्वस्थ जीवन प्रदान करें।

सहयोगियों के सम्मानकर्त्ता श्री जालान

रामपाल अग्रवाल नूतन
पूर्व अध्यक्ष
बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

श्री नन्दकिशोर जी जालान के लम्बे सामाजिक व सार्वजनिक जीवन के संबंध में लिखना किसी भी सामाजिक व्यक्ति के लिए गौरव की बात है। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को शब्दों में पिरोना कठिन है, विशेषकर उनके प्रति उमड़ते-घुमड़ते अनेकों विचारों, अनुभूतियों एवं संस्मरणों की एक लम्बी दास्तान है।

मुझे याद है कि १९५१ में जब मैं और अनुज घनश्याम बनेड़ा (राजस्थान) अपने पिताश्री मोहनलाल जी अग्रवाल के साथ कलकत्ता पहुंचे उस समय ज्येष्ठ भ्राता श्री भंवरलाल जी अग्रवाल बिड़लाजी के रूबी जनरल इंश्योरेंस कंपनी में सेवारत थे। बचपन से सार्वजनिक कार्यों में मेरी रूचि रही अत: कलकत्ता में भी सार्वजनिक कार्यकलापों के बारे में जानने व भाग लेने की उत्सुकता हुई। साम्यवादी संगठनों से जुड़े बड़े भाई बंशीलाल जी चित्तरंजन एवेन्यू स्थित पोद्दार छात्रावास में आया करते थे। कदाचित वर्ष १९५१ की बात है, एक दिन उन्होंने बताया कि पोद्दार छात्रावास के सचिव श्री नन्द किशोर जी जालान की यह विशेषता रही है कि वे पोद्दार छात्रावास में सबके प्रिय हैं। जब कभी कोई कठिनाई छात्रावास के किसी छात्र के समक्ष आती है तो जालान जी तत्काल उसका समाधान कर देते हैं। छात्रावास के सभी छात्र संतुष्ट रहें, यह सामान्य बात नहीं है। मेरी इच्छा हुई ऐसे व्यक्ति के दर्शन करना चाहिए। भाईसाहब के साथ पोद्दार छात्रावास गया। छात्रावास में सार्वजनिक कार्यक्रम भी हुआ करते थे। वहीं नन्दकिशोर जी को एक दर्शक एवं श्रोता के रूप में सर्वप्रथम देखने एवं सुनने का अवसर मिला। लगभग ५०, ५१, वर्ष पूर्व का उनका आकर्षक व्यक्तित्व मुझे आज भी स्मरण है। २५-२६ वर्ष की अवस्था का नौजवान यों भी बरबस किसी को मोह लेता है। आज के कई युवाओं की बात छोड़ दें जो व्यसनों के शिकार हो जाते हैं। लेकिन श्री जालान जी के ५० वर्ष के सामीप्य में मुझे उनमें कभी कोई ऐसा व्यसन देखने को नहीं मिला न सुना जो बरसों बरस समाज का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति की ऊंचाई को कम करता हो।

उस समय अनेक बिन्दुओं पर समाज दो विचार धाराओं में लगभग बंटा हुआ था। एक सुधारवादी ग्रुप कहलाता था, दूसरा परम्परावादी या कि रूढ़ीवादी या कि सनातनी। सुधारवादी ग्रुप का नेतृत्व स्व. श्री बसंत लाल मुरारका, सीताराम जी सेक्सरिया, भागीरथ जी कानोड़िया, भंवरमलजी सिंघी, प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका, रामकुमार जी भुवालका आदि कर रहे थे। उनका सक्रिय साथ देने वाले श्री नन्दकिशोर जी जालान सबसे युवा थे। आकर्षक व्यक्तित्व, व्यवहार कुशल, हंसमुख। केवल एक विधा से नहीं, तन, मन, धन से समाज के लिए अपने को समर्पित किये हुए थे। सार्वजनिक जीवन में यदि कोई समर्पित हो, पूरा समय देने वाला हो, चिन्तक हो, नेतृत्व क्षमता हो, साथ ही सबसे बड़ी बात यह है कि साधनों के लिए पराश्रित न हो अर्थात् सम्पन्न हो, उदार हो, तो कंटकाकीर्ण मार्ग भी औरों के मुकाबले ऐसे व्यक्ति के लिए आसान बन जाता है।

परम्परावादी ग्रुप में रामनाथ जी बाजोरिया, छोटे लाल जी कानोड़िया, बैजनाथ जी बाजोरिया, पं. सूर्यनाथजी पांडेय, रामरिछ पाल जी झुनझुनवाला, विश्वनाथ जी लोहिया आदि थे।

संयोग से मेरा सम्बन्ध इस परम्परावादी ग्रुप से वर्ष १९५१ में ही हो गया जब विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय में आयोजित अग्रसेन जयन्ती समारोह में श्री जयदयाल जी गोयनका, भाई हनुमान प्रसाद जी पोद्दार व रामनिवास जी झुनझुनवाला ने समारोह में व्यक्त मेरे विचारों को सुन मेरी पीठ थपथपाई।

समाज में ऐसे लोग भी रहे जो दोनों विचार धाराओं के समन्वित प्रतीक थे। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना १९३५ में कलकत्ता में हुई थी जिसके प्रथम अध्यक्ष श्री रामदेवजी चोखानी दोनों प्रकार के विचार वालों के लिए समान रूप से सम्मानित थे। वेणीशंकर जी शर्मा, भूरेलाल जी बया, चौथमल जी सराफ, राधाकृष्ण जी कानोड़िया, रामेश्वर जी टांटिया आदि यद्यपि सुधारवादी माने जाते थे, लेकिन अपने विचारों के प्रति इतने कट्टर नहीं थे कि प्राचीन विचार वालों की बातों की छूटते ही उपेक्षा करने लगे। ईश्वर दास जी जालान तत्कालीन मारवाड़ी समाज के शिखर पुरूष थे। समाज के आम आदमी का ऐसा शुभ चिन्तक चिराग से ढूंढ़ने पर भी दिखाई नहीं पड़ेगा।

कलकत्ता में यों तो कई धनी परिवार थे, लेकिन सबसे बड़े परिवारों में बिड़ला जी सुधारवादी ग्रुप के प्रति उदार थे, उसी प्रकार बांगड़ ग्रुप परम्परावादियों से अधिक जुड़े हुए थे। जुगल किशोर जी बिड़ला हिन्दुवादी संस्थाओं के कलकत्ता में राष्ट्रीय स्तर पर जाने माने पृष्ठ पोषक थे।

कलकत्ता में हिन्दी के तीन समाचार पत्र थे तीनों तीन प्रकार की विचारधारा बनाये हुए थे। दैनिक विश्वमित्र और उसके संचालक श्री मूलचंद जी अग्रवाल तथा बाद में उनके सुपुत्र श्री कृष्णचंद्र जी अग्रवाल सुधारवादियों के खुले पृष्ठ पोषक थे। परम्परावादियों को जिन्हें सुधारवादी, सदैव रूढ़ीवादी, अंधविश्वासी मानते थे, दैनिक पत्र सन्मार्ग उनका हित चिन्तक था। तीसरा पत्र दैनिक लोकमान्य था जिसके संचालक पं. रामशंकर जी त्रिपाठी थे वे दोनों को समान रूप से साथ लेकर चलते थे। बाद में लोकमान्य लगभग बंद हो गया, विश्वमित्र कमजोर पड़ गया, सन्मार्ग बुलंदी पर है। १९५१ से १९६५ के सन्मार्ग एवं लोकमान्य के अंक मेरे भाषणों, लेखों सार्वजनिक कार्यकलापों के विवरण से भरे हुए रहते थे।

नन्दकिशोर जी जालान की प्रतिभा का यह आलम था कि देश के समस्त मारवाड़ी समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण दायित्व सन् १९५० में मात्र २६ वर्ष की अवस्था में सफलतापूर्वक संचालन करने लगे। १९५० में सम्मेलन के दायित्वपूर्ण पद पर जालानजी जो अधिष्ठित हुए तो फिर मुड़कर पीछे नहीं देखा। बरसों महामंत्री, कुछ समय उपाध्यक्ष एवं गत वर्ष अर्थात् सन् २००१ तक लंबे समय के लिए अध्यक्ष पद पर आसीन रहे। इस दीर्घ अवधि में सम्मेलन को अनेकों उतार चढ़ाव देखने पड़े। जालानजी उन गतिविधियों के महत्वपूर्ण नायक रहे हैं।

मारवाड़ी समाज की यह विशेषता है कि जिन संस्थाओं से जो व्यक्ति जुड़े हुए हैं और वहां उस संस्था विशेष में भी विचार विभेद हुआ है तो अभिव्यक्ति ही विरोध की परिधि रही है। सीमा का उल्लंघन नहीं। इस दृष्टि से अन्य कई समाज संगठनों से मारवाड़ी समाज के संगठन अपनी ऊंचाई बनाये हुए हैं। यही नहीं एक और विशेषता मैंने देखी कि कलकत्ता में वैचारिक मतभेदों की पराकाष्टा होने पर भी सार्वजनिक, परोपकारी कार्यों में कहीं किसी ने कमी नहीं की। अपने अपने ढंग से चिकित्सा, शिक्षा, साहित्य प्रकाशन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, आध्यात्मिक व धार्मिक कार्यों में दान प्रवृत्ति का कोई अभाव नहीं देखा। यद्यपि धार्मिक कार्यकलापों में दोनों ग्रुपों में कलम और वाणी की तनातनी यदा कदा दिखायी व सुनाई पड़ जाया करती थी।

जैसे मैंने ऊपर कहा है कि कलकत्ता छोड़कर बाहर यहां तक कि सुधारवादी छवि की मानी जाने वाली अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रादेशिक इकाइयों में कहीं कोई वैचारिक मतभेद दिखाई नहीं पड़ा। इसका प्रत्यक्ष रूप बिहार में देखने को मिला। १५ फरवरी १९६३ को देश रत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के पटना स्थित निवास सदाकत आश्रम पर उनके सान्निध्य में सम्पन्न बैठक में मैंने कलकत्ता से आकर भाग लिया। बैठक में ही मेरे विचारों से प्रसन्न होकर राजेन्द्र बाबू ने पटना आकर गाय पर काम करने का निर्देश दे दिया जिसके अनुसार ३१ मार्च १९६४ को मैं कलकत्ता से विदा लेकर पटना चला आया, और लगभग यहीं का बनकर रह गया। यहां १० वर्षों के सरकारी दायित्व तथा गोरक्षा संबंधी गतिविधियों के प्रमुख की भूमिका निर्वाह करने के पश्चात सन् ७५,७६ में बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन से जुड़ा और जहां नन्द किशोर जालान के साथ कलकत्ता में तालमेल नहीं बना उन्हीं जालानजी के नेतृत्व मे अ. भा.मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यों को आगे बढ़ाने के काम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगा। जब कभी उन दिनों सम्मेलन की प्रादेशिक या अ.भा. सम्मेलन की बैठक होती वहां प्रायः नन्द किशोर जी जालान के नेतृत्व का लाभ मिलने लगा।

बिहार में सुधारवादियों या सनातनियों की कोई भिन्न भिन्न इकाइयां नहीं थी। मारवाड़ी समाज की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था मारवाड़ी सम्मेलन ही थी जिसमें सुधारवादी, परम्परावादी, सनातनी, आर्यसमाजी कोई हो, सबको बराबर का सम्मान मिलता।

जालान जी का कद मारवाड़ी सम्मेलन में प्रारंभ में महत्वपूर्ण बाद में शिखर पर रहा। लोग बिहार की बड़ी बैठकों में भंवरमल जी सिंघी, नन्द किशोर जी जालान के लिए लालायित रहते थे। बाद के वर्षों में गंभीर एवं विद्वतापूर्ण भाषण के लिए श्री जालान जी एवं श्री रतन जी शाह प्रायः एक साथ आते, व समाज में प्रेरणा फूंककर जाते।

जालानजी वर्ष १९८२ में सम्मेलन के अध्यक्ष बने। मैं भी लगभग इसी अवधि में सम्मेलन के कार्यों में विशेष रूचि लेने लगा। अ.भा. मारवाड़ी महिला सम्मेलन के संगठन एवं विस्तार में जालान जी नींव के मजबूत पत्थर के रूप में सामने आये। महिला सम्मेलन की प्रथम अध्यक्षा श्रीमती सुशीला मोहनका तथा कुछ अन्य पदाधिकारियों के साथ श्री जालान जी देश के कोने-कोने में गये व महिला समाज को राष्ट्रीय स्तर पर संगठित करने में सफल हुए। परिणाम स्वरूप वर्ष १९८२ में श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल, पटना में अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन का ऐतिहासिक महाधिवेशन हुआ, जालान जी की प्रतिभा निखार लायी।

१९८७ में जब बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष का दायित्व मुझ पर आया तो नन्द किशोर जी जालान के सान्निध्य का सीधे लाभ मिला। नजदीकिया बढ़ने लगी ऐसी कि सार्वजनिक सामीप्य दो कदम आगे बढ़कर एक दूसरे से आत्मीय रूप से जुड़ गये। पटना में बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का अपना स्थान लेने में अध्यक्ष के रूप में मुझे तथा महामंत्री के रूप में श्री विजय कुमार किशोरपुरिया तथा हम बिहार के सभी तत्कालीन पदाधिकारियों को जो सफलता प्राप्त हुई उसमें जालान जी का नैतिक समर्थन प्राप्त था।

कलकत्ता में जो भी कार्यकर्त्ता बाहर से जाता है, उसे चुम्बक की तरह जालान जी अपनी ओर खींच लेते हैं। मेरे तथा मेरे जैसे अनेकों कार्यकर्त्ताओं के लिए यह संभव नहीं था कि कलकत्ता जाने पर एक समय जालान जी के यहां भोजन या जलपान किये बगैर लौट जाएं। गाड़ी नहीं होगी तो गाड़ी भेजकर बुला लेंगे, वापस गाड़ी से छुड़वा देंगे। भला ऐसे कौन अल्पबुद्धि कार्यकर्त्ता होगा जो जालान जी की इतनी आत्मीयता की उपेक्षा कर उनके सान्निध्य के लाभ से वंचित रहना चाहेगा। कम से कम मुझे तो सदैव उनका मार्गदर्शन मिला है। मैंने एक विशेषता जालान जी में देखी है कि एकाध बार ऐसा अवसर भी आया जब कार्यशैली को लेकर थोड़ा मतभेद रहा। लेकिन प्रगट रूप से उनका स्नेह मुझे पूर्ववत मिला। उन्होंने लेश मात्र भी व्यवहार में कोई अन्तर न आने दिया। व्यक्तिगत रूप से मैं अपने लिए यह उनका बड़प्पन मानता हूँ।

सम्मेलन में अनेक ऐसे अवसर आये जब कई बिन्दुओं पर विशेषकर चुनाव के समय विवादास्पद स्थितियां बनी लेकिन जालान जी की विनम्रता ने बिगड़ सकने वाली स्थितियों को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। बम्बई, पटना, दिल्ली, कोलकाता में अनेक अवसरों पर जालान जी का त्यागमयी प्रवृत्तियां देखने को मिली। मैं व्यक्तिगत रूप से जालान जी का अनुयायी हूँ।

मैं जालानजी के अगुवाई में उनके शतायु होने तक प्रेरणा लेता रहूँ यह प्रभु से प्रार्थना है। ऐसे विलक्षण पुरूष कम ही देखने को मिलते हैं कि सामाजिक कार्यों में अपने को समर्पित कर दें।

क्रांतिकारी सोच और बदलाव की प्रक्रिया के वाहक

सोम प्रकाश गोयनका
अध्यक्ष, उ.प्र. प्रा.मा. सम्मेलन

श्री नन्दकिशोरजी जालान अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के वर्तमान प्राणपुरुष ही नहीं एक ऐसे सारथी हैं जो सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज में क्रांतिकारी सोच और बदलाव की प्रक्रिया का संदेश प्रचारित-प्रसारित करते रहे हैं। वे अतीत की अच्छाइयों को चुनकर वर्तमान की चुनौतियों से जूझने का रास्ता अख्तियार कर रहे हैं ताकि भविष्य की पीढ़ी के सम्मुख एक उच्च आदर्श और मानदंड रखे जाये। अपने जीवन को समाज और सम्मेलन के लिए समर्पित करने वाले श्री जालान हमारी प्रेरणा के स्रोत तो हैं ही, आने वाली पीढ़ी के लिए आदर्श व अनुकरणीय व्यक्तित्व भी हैं। उनके द्वारा किये गये कार्य समस्त समाज को एक नयी दिशा देने के लिए यथेष्ट हैं। सम्मेलन द्वारा उनका अभिनंदन किया जाना वस्तुतः उनका अभिनंदन नहीं बल्कि स्वयं को अभिनंदित करने जैसा है। आज सम्मेलन को गर्व होना चाहिए कि उसके पास एक ऐसा व्यक्तित्व है जो राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मारवाड़ी समाज का मार्गदर्शन करने की क्षमता रखता है।

श्री जालान अपने अनुभव से सम्पूर्ण समाज कों नवदिशा देने में सफल हों। प्रभु से यही प्रार्थना है कि वे श्री जालान को ऊर्जान्वित रखें, स्वस्थ व गतिशील रखें ताकि हम उनका सामीप्य पाकर समाज को जानें, उसे गौरवमंडित करने को उत्प्रेरित हों।

महावीर प्रसाद नारसरिया
अध्यक्ष : राजस्थानी परिषद,
कलकत्ता

मृदुभाषी, कर्मयोगी, साहित्यप्रेमी एवं समाजसेवी श्री जालानजी ने मारवाड़ी समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों के विरूद्ध संघर्षमय जीवन द्वारा कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहन देकर 'सम्मेलन' को नये-नये आयाम दिये हैं। उन्होंने (श्री जालानजी) समाज सुधार, महिला शिक्षा, छात्रावासों एवं समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्यक्रम लेकर जागृति की लहर पैदा की।

समाज सेवा के प्रति समर्पण की भावना अन्य कार्यकर्त्ताओं को भी अवश्य प्रेणा देगी। मैं आदरणीय जालानजी के स्वस्थ रहते हुए दीर्घायु होने की कामना करता हूँ।

त्याग भावना से भरा अनूठा व्यक्तित्व

बजरंग लाल जाजू
पूर्व महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

श्री जालान जी के बारे में लिखना बहुत आसान नहीं है। न तो वे स्वर्गीय ईश्वर दास जी जालान की तरह से प्रमुख चिंतक हैं और न भंवरलाल जी सिंघी की तरह प्रखर वक्ता हैं। उन्होंने ऐसा भी कुछ नहीं किया है कि जिससे उनके बारे में खासतौर पर कहा जा सके। उन्होंने अपने जीवन में १९४७ से २००१ के लम्बे समय में समाज की जो सेवा की है वह अपने आपमें एक इतिहास है। धार्मिक अथवा राजनैतिक जीवन में तो अनेक ऐसे उदाहरण मिल सकते है जिसमें लोगों ने ५४ वर्ष से ज्यादा समय दिया हो पर सामाजिक जीवन में खासकर सम्मेलन के ६७ वर्ष के कार्यकाल में उतना लंबा समय पूर्ण रूपेण समाज से जुड़े रहना बहुत ही कम संस्थाओं में देखने को मिल सकता है।

'कह रहा है शोर ये दरिया से
समुन्दर का सकून (शान्ति)
जिसमें जितना जर्फ है (योग्यता)
उतना ही वो खामोश है।'

ऊपर का शेर जालानजी के जीवन के बारे में बहुत उपयुक्त हैं। बिना किसी लाग लपेट अथवा प्रसिद्धि की अपेक्षा किये बिना एटलस की भांति उन्होंने सम्मेलन के विशाल उत्तरदायित्व को अपने जीवन में वहन किया है।

ऐसा भी नहीं है कि इस दौरान उनके विरुद्ध आवाज न उठी हो अथवा उनके व्यवहार को लेकर आलोचना नहीं हुई हो पर इसके बावजूद भी उन्होंने सभी कार्यकर्त्ताओं को अपने साथ लेकर चलने की चेष्टा की एवं इसी वजह से वे सबके आदर के पात्र हो गये हैं। जब भी जहां से भी निमंत्रण आया भारत जैसे बड़े देश में कहीं भी जाने में उन्होंने देरी नहीं की। यही नहीं कि वहां जाकर स्थानीय समस्याओं पर अपनी बुद्धि एवं सामर्थ्य के अनुसार उनका मार्ग दर्शन किया। इसके अलावा उन्होंने कभी भी अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को सम्मेलन के दीर्घकालीन भविष्य के सामने महत्व नहीं दिया। इसका एक उदाहरण मुझे याद आता है। स्वर्गीय मेजर राम प्रसाद जी पोद्दार मुम्बई के अध्यक्ष पद के लिए मुम्बई के बंधुओं का प्रस्ताव था। इसके विपरीत करीब ८ या ९ प्रदेशों से श्री जालानजी का अध्यक्ष पद के लिए प्रस्ताव आया हुआ था। इसके बावजूद भी उन्होंने समाज के भले के लिए आगे होकर पोद्दार जी का समर्थन ही नहीं किया बल्कि उनके कार्यकाल में बिना किसी हिचकिचाहट के पूर्ण मन से उनका सहयोग किया। इतने समय के गुजर जाने पर उनका यह बलिदान सराहनीय है।

मेरी समझ में उनको किसी प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं है क्योंकि ५४ वर्ष का यह सामाजिक जीवन अपने आप में एक प्रमाण पत्र है। मैं एक शेर से उनका अभिनंदन करता हूँ-

'हुजूमें बुलबुल हुआ चमन में,
किया जो गुल ने जमाल पैदा।
कद्रदानों की कमी नहीं ऐ अकबर,
करे तो कोई कमाल पैदा।'

हमारा समाज गौरवान्वित है श्री जालान को पाकर

दीपचंद नाहटा
पूर्व महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

श्री नन्दकिशोरजी जालान से मेरा आत्मीयता से ओत-प्रोत घनिष्ठ संबंध है। वे समाज के एक कर्मठ, निर्भीक एवं विचारशील व्यक्ति हैं। श्री जालानजी कठिन से कठिन घड़ी में किसी भी तरह की परिस्थितियों का सामना करने के लिए सदैव तत्पर रहते है।

बचपन में श्री जालानजी एक मेधावी छात्र के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने सन् १९४० में कलकत्ता के हेयर स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। फिर उन्होंने १९४५ में कलकत्ता के विद्यासागर कालेज से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन दिनों विद्यासागर कालेज से एक पत्रिका निकलती थी जिसमें केवल अंग्रेजी और बांग्ला भाषा की पठनीय सामग्री रहती थी। श्री जालानजी ने अपने अथक परिश्रम से विद्यासागर कॉलेज की उस पत्रिका में हिन्दी भाषा की पठनीय सामग्री को समाहित करवाया। उस पत्रिका के लिए हिन्दी विभाग के श्री जालानजी सह-सम्पादक नियुक्त किये गये।

श्री नन्दकिशोरजी जालान एक बहुआयामी एवं बिरल व्यक्तित्व के धनी हैं। स्व. भंवरमल जी सिंघी यह निश्चित रूप से जानते थे कि श्री नन्दकिशोरजी जालान एक ऐसा व्यक्ति है जो समाज के विकास के लिए कार्य करने की तीव्र इच्छा शक्ति रखता है। फलस्वरूप जब स्व. भंवरमलजी सिंघी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष बने तब उन्होंने श्री नन्दकिशोर जी जालान को महामंत्री का पदभार सौंपा।

श्री नन्दकिशोरजी जालान लगभग ५३ वर्षों से सम्मेलन से जुड़े रहे हैं। १९५०-५४ तक स्व. बृजलाल बियानी अध्यक्ष और श्री जालान महामंत्री रहे। १९५४-६१ तक स्व. सेठ गोविन्ददासजी अध्यक्ष और श्री जालानजी महामंत्री रहे। १९७४-७८ तक स्व. भंवरमलजी सिंघी अध्यक्ष और श्री जालान जी महामंत्री रहे। १९७९-८१ में श्री जालान उप सभापति रहे। १९८२ से १९८६ तक वे सभापति रहे।

मैं लगभग चार वर्षों सन् १९९३ से १९९७ तक सम्मेलन का महामंत्री रहा और नन्दकिशोरजी जालान अध्यक्ष रहे। मेरे मंत्रीत्वकाल में श्री जालानजी के नेतृत्व में समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं आडंबरों के प्रति व्यापक आंदोलन छेड़े गये जिसमें काफी सफलता हासिल हुई। सम्मेलन के उत्थान एवं प्रगति के लिए श्री जालानजी सर्वदा सचेष्ट रहे। उन्होंने सम्मेलन की विचाराधारा के प्रचार-प्रसार एवं समाज के उत्थान के लिए भारत के कई प्रांतों का दौरा किया। इनकी अध्यक्षता में सम्मेलन ने कई उपलब्धियां हासिल की।

श्री जालानजी की अध्यक्षता में सन् १९८५ में स्वर्ण जयंती एवं १९९५ में सम्मेलन का हीरक जयंती उत्सव मनाया गया। स्वर्ण जयंती में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैल सिंह एवं हीरक जयंती उत्सव में भारत के राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा पधारे थे। उन्होंने सम्मेलन और समाज की गरिमा के संबंध में जो कुछ कहा था– वह स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने के साथ समाज की बड़ी धरोहर है। सन् १९४७ में श्री जालान जी मारवाड़ी छात्र संघ के मंत्री रहे और सन् १९५१ में सभापति। श्री जालानजी ने अपने अथक परिश्रम और लगन से टाला टैंक के नीचे गोयनकाजी के बगीचे को भाड़े पर लेकर राजस्थान छात्र निवास का शुभारंभ किया। मारवाड़ी छात्र संघ के अध्यक्ष पद के निर्वाचन में सन् १९५१ में श्री जालान जी लगभग दो-तिहाई मतों से विजयी हुए और अध्यक्ष पद को संभाला। स्व. प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका के विशेष अनुरोध पर ये पोद्दार छात्र निवास (प्रारंभ में मारवाड़ी छात्र निवास) के महामंत्री बने और अव्यवस्थाओं को सुधारा। प्रभुदयालजी के स्वर्गवास के बाद इन्हें पोद्दार छात्र निवास का अध्यक्ष बना दिया गया जिस पर वे आज भी हैं।

श्री जालानजी की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि ये जिस संस्था से भी जुड़े उन्होंने अपने सुचिन्तित विचारों, अनुभवों से संस्था को लाभान्वित किया। इनकी कर्मठता और समाज सुधार की भावना को देखते हुए मारवाड़ी समाज इनसे बहुत आशान्वित है।

कलकत्ता चेम्बर आफ कामर्स ने लगभग ३० वर्षों से श्री जालानजी के नेतृत्व में असीम उन्नति की है।

श्री नन्दकिशोरजी जालान को उपरोक्त समाज सेवकों के अलावा स्व. सीतारामजी सेकसरिया, स्व. भंवरमलजी सिंघी, स्व. श्रीमती सुशीला देवी सिंघी, स्व. ईश्वरदास जी जालान और भागीरथजी कानोड़िया जैसे राष्ट्रीय विभूतियों के साथ सामाजिक कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। श्री जालानजी ने पत्नी वियोग को बड़ी शांति से सहन किया। कठिन से कठिन क्षणों में भी वे अपने कर्त्तव्य पथ से विचलित नहीं हुए। वे एक प्रखर वक्ता, उदार हृदयीं, साहित्य प्रेमी एवं मौलिक चिन्तक हैं।

श्री जालानजी ने सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं में रहकर अपना उल्लेखनीय योगदान दिया। इनका मानना है कि हमें अपने समाज के उत्थान के लिए समाज में व्याप्त कुरीतियों से लड़ना होगा। तभी हम अपने समाज का और देश का भला कर सकते हैं। श्री नन्दकिशोरजी जैसा व्यक्ति अपने आप में एक संगठन है।

श्री जालान जी ईश्वर की सर्वोपरि प्रभुता में आस्था रखने वाले, जीवन की सरलता, पवित्रता तथा भाईचारे की भावना को समझने वाले, गरीबों की तत्परतापूर्वक सहायता करने वाले एक विशेष व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं। इनका कहना है कि हमारी दृष्टि जहां तक जाती है वहां तक पहुंचने के लिए हमें सुदूर अन्तरात्मा की पुकार पर अमल करना होगा। निन्दा स्तुति की परवाह न करते हुए बेधड़क सत्य की राह पर चलते हुए सबके प्रति प्रेम और सहिष्णुता को अपनाना होगा। श्री जालानजी के अनुसार यदि हम कुछ अच्छा काम करने के लिए कदम उठायेंगे तो हमारे समक्ष कुछ बाधायें अवश्य आयेंगी। कुछ विरोधी शक्तियां प्रबल दिखाई देंगी। फिर भी हमें उन तमाम तरह की कठिनाइयों का सामना करते हुए बाधाओं को चीरते हुए आगे बढ़ते हुए अपने में आत्मविश्वास और स्वाभिमान उत्पन्न करना होगा तभी हम अपने समाज और देश को विकास के पथ पर ले जा सकते हैं।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर श्री नन्दकिशोरजी जालान के सम्मान में प्रकाशित होने वाले विशेषांक के लिए मैं अपनी शुभकामना प्रेषित करता हूँ। श्री नन्दकिशोरजी जालान जैसे समाज सेवी को पा कर हमारा समाज गौरवान्वित है। श्री जालान जी शतायु हों और समाज विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर होते रहें।

युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक

कल्याणमल लोढ़ा
पूर्व उपकुलपति - जोधपुर विश्वविद्यालय

कोलकाता लौटने पर अवगत को हुआ कि **'समाज विकास'** का **'नन्दकिशोर जालान अभिनंदन विशेषांक'** प्रकाशित हो रहा है और दिनांक २५-१२-२००२ को उनका सार्वजनिक अभिनंदन समारोह आयोजित होगा। यह शिव संकल्प है और आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक भी। सम्मेलन को इसके लिए बधाई।

नन्दकिशोरजी जालान के साथ ही मेरे मस्तिष्क में अर्द्ध शताब्दी का इतिहास स्पष्ट होता है। श्री जालानजी का व्यक्तित्व और कृतित्व समाज के विकास का प्रामाणिक इतिहास है – एक युग का स्वच्छ दर्पण। मैं १८४५ में कलकत्ता आया था तब स्वर्गीय भंवरमलजी सिंघी ने उनसे व्यक्तिगत परिचय कराया तब से अद्यावधि मैंने उनके समग्र और समर्पित व्यक्तित्व को देखा, समझा और सराहा है। उनमें सेवा-साधना की अप्रतिम प्रतिभा तो है ही पर साथ ही वह जागरूकता और युग-सम्मत चेतनता भी है, जो किसी भी समाज को नयी दृष्टि- नयी भूमिका से सम्पन्न करती है। ऐसे प्रभावी व्यक्तित्व के लिए मैं गीता का यह श्लोक ही सटीक समझता हूं–

यद् यदा चरति श्रेष्ठस्ततदेवेतरोजनः।
स यत् प्रमाणं कुरूते लोक स्तदनुवर्तते।।

श्रेष्ठ एवं वरेण्य पुरूषों का जीवन प्रमाण बनता है और लोक मन उनका ही अनुकरण करता है। अनुकरण ही नहीं, अनुपालन भी, अनुगमन भी। यही आदर्श जीवन का प्रकल्प है। पुनः श्रीकृष्ण का कथन है– योगः कर्मसु कौशलम्। गत अर्ध शताब्दी से समाज में जो भूलभूत परिवर्तन और परिशोधन हुआ है, उसमें श्री नन्दकिशोरजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनकी अवधारणाएं और क्रिया-शक्ति इसका साक्ष्य है। कुरीतियों और दुष्प्रथाओं का उन्होंने उन्मुक्त और निर्भीक होकर विरोध किया, समाज की जर्जर परम्पराओं के विरुद्ध सशक्त आवाज उठायी। अभी मैं 'समाज विकास' (नवम्बर २००२) पढ़ रहा था- इस अंक में उन्होंने 'प्रेम विवाह' के पक्ष का सतर्क समर्थन किया है। मेरी समझ में संभवतः ऐसा विचार, वे ही कर सकते हैं, जिनमें मौलिकता के साथ-साथ चिन्तन की नूतन दृष्टि प्राप्त होती है। श्री जालानजी का जीवन भी चुनौतियों से भरा रहा है। वे पोद्दार छात्र निवास के भी मंत्री थे और उन्होंने इसका नया प्रवर्तन किया। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। अग्रेजी में एक कहावत है–

"An ounce of performance is worth more than a pound of preachment. Success is measured by the obstacles one has overcome while trying to succeed. A ship in harbour is safe but that is not what ships are made for. They have to tide over typhoons and storms to prove their mettle."

श्री जालानजी का कर्त्तव्य को तोलना इतिहास करेगा यानी पीढ़ियां। उनका योगदान तो 'मन' भर रहा है।

समाज की विकृत्तियां संस्कृति को भी विकृत करती हैं तब पूरा लोक गतिहीन होकर मति विभ्रम से संत्रस्त होता है। हमें यह ज्ञात रहना चाहिए। समाज भी निर्झर की भांति एक सतत् प्रवाह है, जो दुर्गम उपत्यकाओं को चीरता हुआ नवीनता की ओर अग्रसर होता रहता है। युग चेता व्यक्ति ही अपनी ऊर्जा से उसे नयी चेतना, नया प्रवाह और नयी गति देते हैं- वे आलोक स्तम्भ हैं। श्री नन्दकिशोरजी का व्यक्तित्व और कृतित्व भी ऐसा ही आलोक का स्तम्भ है। मैं इन्हें युगचेता शिव संकल्पों से युक्त मनीषी गिनता हूँ। उनका अभिनन्दन वस्तुतः आज की पीढ़ी का स्वच्छ दर्पण बनकर नए गवाक्ष खोलने का सार्थक प्रमाण बनेगा।

जीवेद शरदः शतम्। बुध्येय शरदः शतम्
रोहेम शरदः शतम्। पूषेम शरदः शतम्
भवेय शरदः शतम्। भूषेम शरदः शतम्

इसी वैदिक प्रार्थना के साथ ही मैं उनके अभिनन्दन में अपना स्वर-संलाप करता हूँ।

सम्मान के पात्र

प्रकाश चन्द्र अग्रवाल
सम्पादक, दैनिक विश्वमित्र, कोलकाता

अपने लिये तो सभी जीते हैं, मगर दूसरों के लिए जीने वाले विरले ही होते हैं। ऐसे ही कुछ चुनिन्दा लोगों में हैं श्री नन्द किशोर जी जालान, जो पिछले पांच दशकों से दूसरों के लिए जी रहे हैं। गृहस्थी की गाड़ी चलाने के लिए जीविकोपार्जन करना नितांत जरूरी है। अपनी और अपने परिवार की देखभाल भी करना जरूरी होता है, लेकिन इसके साथ-साथ जिस समाज में हम जीते हैं, जिस समाज से हम लेते हैं और जिस समाज से हम जीने की कला सीखते हैं, उस समाज के बारे में भी सोचना बहुत जरूरी है। समाज की मुख्य धारा से कटकर मनुष्य के लिए जीना असम्भव है। इसीलिए कहा गया है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। श्री जालान पूर्णतः सामाजिक प्राणी हैं, जिन्होंने समाज को काफी करीब से देखने-समझने और तरक्की करने की न सिर्फ खुद कोशिश की है, बल्कि दूसरों को भी समाज से जुड़ने के लिए उत्प्रेरित किया है। आज जबकि लोग आधुनिकता की चकाचौंध से सम्मोहित होकर समाज की शाश्वत परम्पराओं से विमुख होते जा रहे हैं, ऐसे समय में श्री जालान सरीखे बहुआयामी व्यक्तित्व वाले लोगों से सीख लेने की जरूरत है। जिन्होंने अपने परिवार, घर-गृहस्थी और उद्योग-व्यापार की देखभाल करते हुए समाज की चिंता कभी नहीं छोड़ी। लगातार पांच दशकों से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से जुड़े रहे श्री जालान ने सामाजिक कुरीतियों, कुप्रथाओं और कुरपरम्पराओं के खिलाफ कई आन्दोलनों का नेतृत्व किया है। सामाजिक उत्थान के लिए आपके प्रयास सर्वविदित हैं। लगातार पांच दशकों से समाज के कल्याण के लिए आप काम कर रहे हैं। अपने आपमें यह एक महत्वपूर्ण बात है। समाज सुधार और समाज सेवा की राह कांटो भरी होती है। कार्यों की प्रशंसा कम, आलोचना अधिक होती है। लेकिन श्री जालान कभी विचलित नहीं हुए और अपने सिद्धांतों पर अटल रहे। इसलिए आप निश्चित रूप से सम्मान के पात्र हैं। सच तो यह है कि ऐसे लोगों का ही सम्मान होना चाहिए, क्योंकि ऐसे लोगों का सम्मान करने से सम्मान करने की परम्परा स्वयं सम्मानित होती है। श्री जालान के 'विश्वमित्र' परिवार के साथ लम्बे अर्से से गहरे सम्बन्ध रहे हैं। विश्वामित्र परिवार की ओर से श्री जालान को हार्दिक शुभकामनाएं।

Trust your loved ones with
those trusted by millions of Indians.
AMRI is now
manipalhospitals
LIFE'S ON
37 hospitals | 70+ years of healthcare legacy | 5,600+ Doctors
10,500+ beds | Serving 19 cities
Scan to access
special privileges
info@manipalhospitals.com | 1800 102 5555 | www.manipalhospitals.com

This Durga Puja **explore an exclusive range of shirting fabrics in a variety of trend-setting prints. Tailor them into impeccable cuts and perfect fits to give your festive look an edgy style.**

#buyaRaymond #giftaRaymond

Sharad Shubhechha

5% EXTRA CASHBACK* SBI card

*Min. Trxn.: ₹6,000; Max. Cashback: ₹750 per card account.
Validity: 30 Aug - 13 Oct 2024. T&C Apply.

Scan QR code to locate nearest store

THE Raymond SHOP

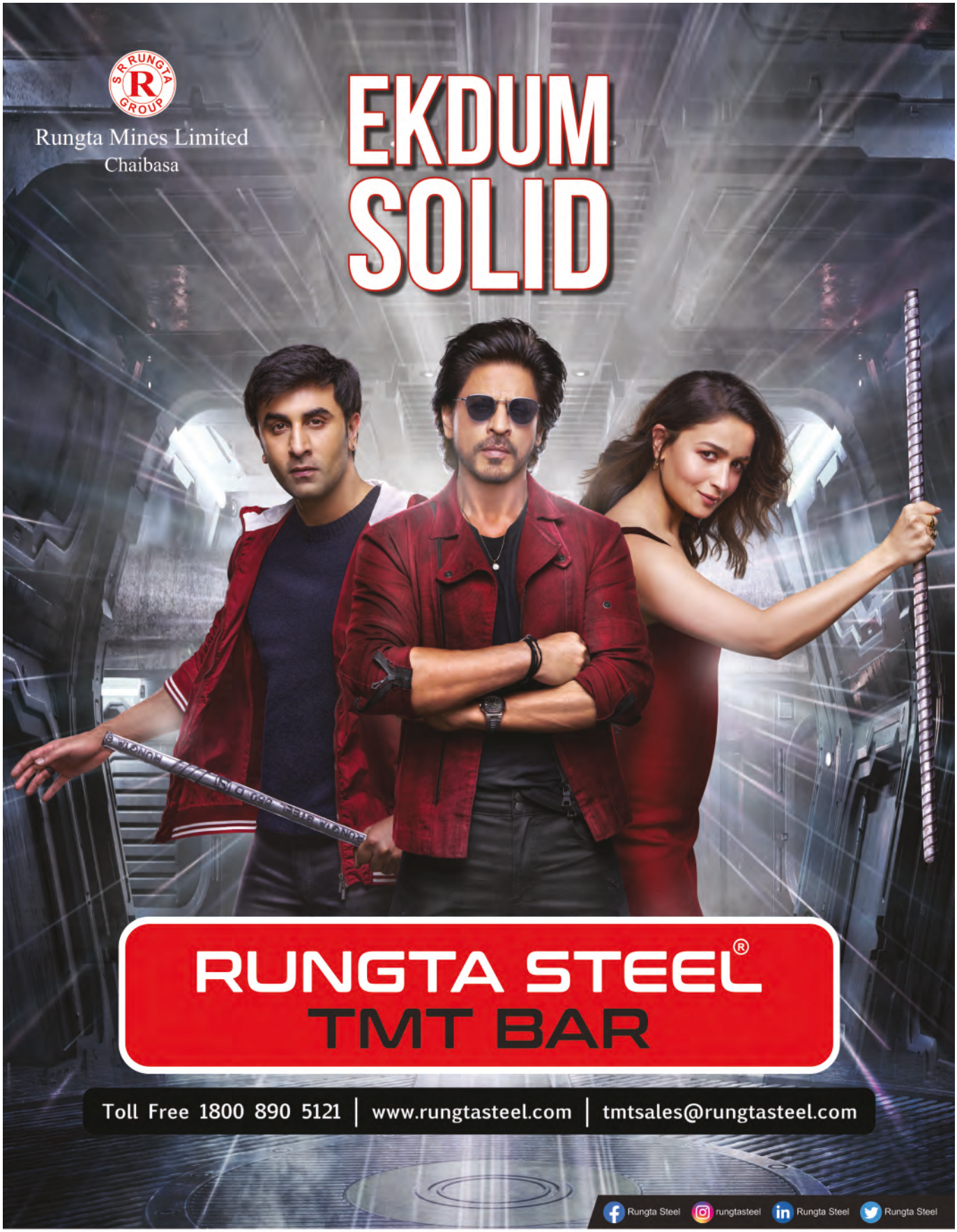

Rungta Office, Nagpur Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand-833201

PrraniGanga

दुनिया का पहला ऑनलाइन पशुधन उत्पाद बाजार

www.prraniganga.com

में आपका स्वागत है

मनचाहा ब्रांड किफायती दाम पर घर बैठे पाए ....

* UP TO 40% DISCOUNT

केवल प्राणिगंगा में

* कुछ विशेष उत्पादों के खरीद पर एक पर एक फ्री पाए...

10 लाख + किसानों का भरोसा

70+ ब्रांड्स

120+ फ़ीड

1500+ उत्पाद

एनिमल फीड | मेडिसिन्स | इक्विपमेंट | सर्विसेस

82409 97737 support@prraniganga.com www.prraniganga.com

मित्र ही नहीं, मार्गदर्शक भी

इंद्रचंद संचेती
सलाहकार एवं पूर्व कोषाध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

अर्द्धशती हो गए नन्दकिशोरजी से मेरी मित्रता केवल सामाजिक विषयों तक ही सीमित नहीं है हमारा सम्बन्ध, बल्कि घर की, बाहर की, तमाम सार्वजनिक चर्चाओं में हम एक दूसरे को सुना करते हैं, स्वीकारा करते हैं। विरल ही कोई ऐसा दिन हो जिसके वक्ष पर हमारी गुफ्तगू के स्वर अंकित न हुए हों। जिनसे इतना घनिष्ठ संबंध रहा हो उनके बारे में कुछ भी शब्दबद्ध करना बड़ा ही कठिन और दुष्कर कार्य इसलिए हो जाता हे कि लहराती हुई संस्मरणों की असंख्य लहरों में से कितना जल अंजलिबद्ध हो कैसे कहा जाए। अत: लेख तो क्या पूरी किताब ही लिख डालूं तो भी स्मृतियों के पंख पसारे विहगों की पूरी टोली को पकड़ पाना संभव नहीं होगा।

१९४९ के मध्य में काशी हिन्दू विश्व विद्यालय से बी.ए. पास कर कलकत्ता आना हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय में एम.ए. (पालिटिकल साइन्स) में तथा एल.एल.बी. में दाखिला लिया। यहां संक्षेप में यह बता दूं कि इस समय लखनऊ विश्वविद्यालय के उपकुलपति आचार्य नरेन्द्र देव की प्रेरणा से मेरा प्रवेश लखनऊ विश्वविद्यालय में हो चुका था, परंतु मेरे परिवार वाले आचार्य नरेन्द्र देव की समाजवादी विचारधारा के कारण उनसे मेरी निकटता नहीं चाहते थे, अत: मुझे लखनऊ छोड़कर कलकत्ता विश्वविद्यालय में दाखिला लेना पड़ा। चूंकि मैं कलकत्ता में नया-नया आया था, इसलिए यहां सब कुछ मेरे लिए अनजान था। न कोई दोस्त, न कोई संगी-साथी, परिचित भी नहीं के बराबर। मैं इस फिराक में या कि कलकत्ता में मेरे कुछ दोस्त बनें जो यहां के युवा मारवाड़ी छात्रों से मेरा परिचय करा सकें। बनारस और लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्र-संघ में काम करने के कारण यहां के छात्र संघ में भी मुझे विशेष स्थान मिला। मैं लॉ कालेज के छात्र संघ में विभागीय मंत्री बना दिया गया। ऐसे ही समय स्नातकोत्तर छात्र-संघ की ओर से मुझे भारतीय संविधान पर एक सेमिनार आयोजित करने का मौका मिला, जिसकी अध्यक्षता सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने किया था। उसी दौरान विश्व विद्यालय प्रांगण या कॉलेज स्ट्रीट काफी हाउस में मेरा परिचय नन्दकिशोर जी जालान से हुआ। मुझे ज्ञात हुआ कि वे प्रेसीडेंसी कॉलेज के भूतपूर्व स्नातक रह चुके थे और उस समय मारवाड़ी छात्र संघ के सक्रिय कार्यकर्ता थे। उन्होंने मुझे इस संस्था से जोड़ना चाहा। मेरे लिए यह सौभाग्य की बात थी कि मैं एक नवागंतुक छात्र समाज की प्रसिद्ध छात्र-संस्था से सक्रिय रूप से जुड़ सका। इस संस्था में मैने जालान जी के नेतृत्व में विभिन्न पदों पर काम किया। मैं तो यहां तक स्वीकार करूंगा कि उन्होंने मुझे कलकत्ता के मारवाड़ी युवा समाज से परिचय ही नहीं करवाया, बल्कि एक उत्साही कार्यकर्त्ता बनाया। यह थी जालान जी की युवकों को सामाजिक कार्यों में जोड़ने और प्रशिक्षित करने की योग्यता और लगन।

समय के अंतराल में हमारे सम्बन्ध घनिष्ठतम होते गए। तब उन्होंने मुझे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से मात्र जोड़ा ही नहीं, बल्कि सक्रियता भी प्रदान की। उन दिनों सम्मेलन की बागडोर श्री ईश्वरदासजी जालान के हाथ में थी। मैं नन्दकिशोर जी के साथ उनसे मिलने लगा तथा समाज सुधार के कार्यों में दिलचस्पी लेने लगा। उस समय सम्मेलन की समस्त शक्ति समाज को संगठित करने तथा पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, फिजूल खर्ची एवं प्रदर्शन पर अंकुश लगाने में लगी हुई थी। मैं जालानजी के नेतृत्व में भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों में हो रहे सम्मेलन के अधिवेशनों में भाग लेने लगा। घनिष्ठता का आलम यह था कि मैं प्राय: उनके साथ ही जाता और उनके साथ ही ठहरता। उनका वह स्नेह और अपनापन एक यादगार बनकर आज भी प्रतिस्थापित है मेरे स्मृति-पटल पर। मैं तो यहां तक कहूंगा कि वे ही मेरे प्रेरणा सूत्र थे- सामाजिक सेवा के क्षेत्र में मेरे पदार्पण काल में।

जालानजी सृजनात्मक सामाजिक कार्यकर्ता है। जिस काम को भी हाथ में लेते हैं उसे पूरा करने में अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं। यह उनके अथक परिश्रम का ही सुप्रतिफल था कि वे मारवाड़ी सम्मेलन को अखिल भारतवर्षीय स्तर पर एक सक्रिय संस्था के रूप में शिखर-विराजित कर सके। सम्मेलन द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'समाज विकास' की प्रगति का समस्त श्रेय जालान जी को ही जाता है।

जिन्दादिली, मित्र बनाने की पटुता और मित्रता निभाने की पारंगता- विशेषताओं की यह त्रिवेणी अबाध रूप से प्रवाहित है श्री जालानजी के व्यक्तित्व- गंगा में, जिसमें मिज्जित होने का सौभाग्य मुझे कई-कई बार मिला।

समय के प्रवाह में बहते-बहते हम दोनों के सामाजिक व्यक्तित्व में भी अभिवृद्धि हुई।

THE HERO OF SOCIAL UPLIFTMENT

Shyama Nand Jalan
Director, Indian Dance Academy
Vice-President of Science City Organisation

I am very happy that the social services rendered by Shri Nand Kishore Jalan are being celebrated and a special issue of **"Samaj Vikas"** is being published regarding his life and work.

I came to know him immediately after coming out of the school in about 1948. He was firstly the Secretary and subsequently the President of the Marwari Students' Union which was very active in those days. He was also the uncle of one of my close friends Mr. Banwarilal Jalan and, therefore, had substantial affection for me. In those days, I not only had considerable interest in social and political activities apart from acting and theatre but was also an activist. We used to organize various celebrations, debates, symposiums and other intellectual activities in the students' union. Shri Nand Kishoreji, took a leading interest in those activities and we happily assisted him.

A devoted worker, full of enthusiasm and ideas, Nand Kishoreji took a lead in establishing Rajasthan Chhatra Niwas in Paikpara and I still remember very vividly a function which he had organised at that place in which Kishore Sahoo, the famous film director had come with Bina Roy, his new discovery who later became a very prominent film heroine. It created a stampede but Nand Kishoreji was able to control the same and the function was very successfully completed.

I also came into contact with him during the elections of my father in which he always contributed richly.

My father late I.D. Jalan was one of the founders of All India Marwari Federation and in 1950 and thereafter, practically until his death in 1978, he was closely associated with it. He was in the look out for a capable young man to take over the management of the Federation. He recognised the effectiveness and the enthusiasm of Nand Kishoreji and invited him to take interest in the Federation. He was so impressed that he straightaway got Nandkishoreji appointed the General Secretary of the All India body at a very young age in 1950. This had at that time and even later, caused a lot of hearburn amongst many other persons then associated with the Federation. Despite this opposition, Nandkishoreji could successfully organize many conference and events for promoting social causes. He became the right hand of my father in all those activities and subsequently took up the reins of the Federation and under his able guidance and inspiration the Federation consistently spread its activities all over India and formed various wings which have worked effectively for the social causes, not limited to the Marwari community only.

If I remember correctly, Nandkishoreji, though affluent, had not inherited a thriving business. He had to establish a new business. After a few years of keen social activities, he had to take a breathe to develop his personal business which he has able to do in a very short time. But his commitment to social upliftment continued and he returned very soon to his social work and again took up the reins of the Federation which has more or less continued unabated for the last 30 years.

I cherish my association with Shri Nand Kishore Jalan. We have had our small and big differences in the student life but despite the same I have always been his great admirer. It is a surprise to see him working with the same enthusiasm and vigour and without any selfish interest despite his advanced age. I not only expect but firmly believe that he will continue to work as sincerely and devotedly till his last.

People, like him, neither retire nor get aged. I pray to Almightly for giving him a long life, as active as it has been so far.

JALAN VISIONARY OF MODERN CALCUTTA CHAMBER OF COMMERCE

B. K. Mohta
Industrial & Former President
Calcutta Chamber of Commerce

After East India Company's final disbandment of its activities in 1858 the company had ceased to trade. It had lingered on as a purely administrative agency. The trade and business activities were taken over by the independent business traders. Way back in 1830, some traders and craftsmen of Calcutta organise themselves to form the Calcutta Traders Association which was a new kind of commercial organisation, the first of its kind in the country. Even in the lustly faissez-faire era, the business community here realised that trade did not flourish entirely by the absence of regulations. Increased opportunity brought new awakening and Calcutta's retail trade understood the value of group Association and Voluntary regulations. The Association was born in realisation of a handful of businessmen mostly British and European who dominated the trade and commerce of this region and the Association was essentially an European Organisation where native traders were not allowed to join. The Calcutta Chamber of Commerce affirms its antiquity as its direct descendent carrying forward the continuity of Calcutta Trade Association originated in 1830 for rapid survey of contemporaries circumstances and appraised organizational initiatives in business world especially in Eastern India which played a pioneering business role in the form of Calcutta Chamber of Commerce.

The Calcutta Chamber of Commerce and Industry also took the responsibility of acting as ministers of civilization and development of civil amenities in towns as well as in developing cities and ports of India.

After Independence, the British traders were not eager in developing the trade & commerce in India but they were in a mood to transfer their trade & commerce and other establishments to the native businessman. In the said process, the activities of the Chamber of Commerce were reduced and part of the trade & commerce establishment were transferred to Indian hands. From a report of 1961, it will reveal that there were only 18 permanent members.Thereafter some of the member firms were taken over by Indians. In 1960, Mr. M. L. Bhartia representing J. Boseck and company Pvt. Ltd. become the President (master of the chamber). He was the first Indian elevated to the post of President. Thereafter, some further firms were taken controll by Indians and they used to take a keen interest in the activities of the chamber. In 1966, Mr. J.C. Sharma, became the President representing Cooke & Kalvey Ltd. in 1968. Mr. S.C. Goenka, become the President representing Construction and Mining Equipments Ltd. Among other prominent Members of the Chamber were the Statesman, Great Eastern Hotel etc. (Before N.K. Jalan took over as President in 1971-72 the activities of the Chamber was confined Debt collections. Neither the dignitaries of Central Government or State Government were invited to interact about the problems faced by trade and commerce nor memorandums were submitted to the Central and State govt. on subjects of National and State Importance. During the year under consideration the total permanent membership strength were increased to 24. I.C. Sancheti also joined the Chamber as Vice President of the chamber along with Sri Jalan. During the presidentship of Mr. N.K. Jalan in the Chamber of Commerce he infused energy in the activities of the Chamber and found expressions in a kind of new commercial organisation which provided background of knowledge corupus of all experience in trade and commerce. He also invited the Central and State leaders to be associated with the Chamber and providing information and problems of the Trades and Commerce and their redress. During his tenure of Presidentship the Chamber had meeting with the following dignitaries and personalities namely Sri Raj Bahadur, Minister for Shipping and Transport, Government of India. Sri Pranab Mukherjee, Deputy Minister of Steel and Mines, Sri Mohan Dharia, Minister of State for Planning, Sri H.N. Bahuguna, Minister of

Communication and Sri J.B. Patnaik, Deputy Minister of Defence, all of Central Government. We further invited the different Ministers of State of West Bengal for interaction with trade and commerce namely Sri Bholanath Sen, Minister in Charge, Public Work and Housing, Dr. Jainal Abedin, Minister of Public Undertaking, Sri Atish Chandra Sinha, Minister of Cottage and Small Scale Industries and Sri Ram Krishna Saraogi, Deputy Minister for Housing.

He also invited General Administrators and top beaurocrates namely Collector of Customs, General Manager Telephone, Post Master General and others. There were many memorandums and representations given to the respective authorities by Calcutta Chamber of Commerce for the betterment of the commercial community prominent of which was company Law Amendment Bill, 1972, Foreign Excange Regulation Bill, 1972, Taxation Law Amendment Bill, 1973.

Looking an eye on the improvement of Civil amenities of the city of Calcutta he invited the Mayor of Calcutta and discussed various plans of development of the city with Mayor and offered the co-operation of the Chamber on such development plans.

In a word we can say that the horizon of the work of the Chamber was expanded much wider during the Jalan's Presidentship. He gave the Chamber prestige not only in government circles but also amongst the Business Class and its Membership increased.

Due to the above activities the prestige of the Chamber not only increased before the members and the public in general but it also improved its working relation with Government deparments and its suggestions on different subjects were duly appreciated and acted upon by different departments of Government of India and West Bengal. Further, the Chamber's role was not only to protect the interest of the traders and businessmen but it has also the role for social service to the public and service to city and its environment where they live. Sri N.K. Jalan was again elected as President in the year 1979. As it was oldest Trade Body of India therefore the Committee under the Leadership of Sri N.K. Jalan decided a year long programme to celebrate the 150 anniversary of the Chamber. The inauguration of this historical event was made by Sri Jyoti Basu, the then Chief Minister of West Bengal at Grand Hotel on 10th July, 1980 in the presence of huge gathering of distinguished guests connected with Trade and Industry, Press, members of Consular Corps, friends and sympathizers. During the year Chamber become member of FICCI and All India Organisation of Employers.

In 1980 I became the President of the Chamber with active participation and association and guidance of immediate past President Sri Jalan. I organized various functions, symposiums, meetings. But most important which was "All India Trade Fair", 1981 which was inaugurated by Sri T. N. Singh, Governor of West Bengal which would not have been so successful without the active support of Sri N. K. Jalan.

As per our rule the President also continues as past President in subsequent years and guides the different activities of the Chamber and by his vast and rich experience, he guided to the imcoming President on various subjects and administrations under his guardianship. The Chamber has developed from year to year and created its status as a Business Organisation of Calcutta, the contribution of Sri N. K. Jalan is substantial in developing the Chamber on today's status. It was his vision which promptedus to realise the importance of women enterpreneur in business which results in formation of a special Ladies Business Forum specially for development of enterpreneurship of women. The Chamber also created foundation in the year 1978 for providing encouragement to outstanding enterpreneurship to the women by giving enterpreneurship award for best women of the year of Rs. 1,00,000/- and also provides award to the best sportsman of the year and under his guidance we collected about Rs. 20,00,000/- for Kargil Fund.

In short it may be stated that Mr. Jalan's role in the development of the role of Calcutta Chamber of Commerce, Calcutta Chamber of Commerce Foundation, Ladies Business Forum has been truely remarkable and his vision of contribution to its cause has greatly helped in bringing this Chamber to its present status.

सम्मेलन के जन्म के पूर्व कुछ वर्षों की स्थिति

स्व. भंवरमल सिंघी
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सामाजिक विभेदों की सृष्टि

मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना सन् १९३५ में हुई थी। लेकिन इस शताब्दी के पहले के ३५ वर्षों ने समाज में संगठन और विघटन की दोनों स्थितियों को जन्म दे दिया था। व्यापार-वाणिज्य में समाज का वर्चस्व सन् १९०० के आसपास स्थापित हो चुका था। विदेशी शासन के अन्तर्गत उसे अपने व्यापारिक हितों की रक्षा की ओर ध्यान देना आवश्यक था। यद्यपि मारवाड़ी समाज संख्या में कम था, तथापि यह सम्पूर्ण भारत वर्ष में फैला हुआ था। समाज के विभिन्न वर्गों, जैसे– अग्रवाल, माहेश्वरी, ओसवाल, खण्डेलवाल, विजयवर्गीय, ब्राह्मण, राजपूत आदि के अपने बड़े या छोटे संगठन थे, जो प्रधानतः व्यापारिक एवं रूढ़िगत सामाजिक हितों की सुरक्षा के लिए सचेष्ट रहते थे, लेकिन दूसरी ओर समाज में ऐसे युवकों का प्रादुर्भाव होना प्रारंभ हो गया था जो रूढ़िगत मान्यताओं को समाज के विकास के लिए हानिकारक मानते थे। अतः इनमें से कुछ संस्थाओं में ऐसे दल भी बन गये थे जो सुचारक की संज्ञा से परिचित होने लगे थे जबकि बाकी सबको सनातनी दल का अनुयायी कहा जाता था।

सन् १९१८ के आसपास महात्मा गांधी अफ्रीका में राजनीति का सत्याग्रह प्रयोग करके भारतवर्ष लौटे और आते ही उन्होंने भारतवर्ष की राजनीति को नया मोड़ देना शुरू किया। उस समय राजनीति केवल आरामकुर्सियों पर बैठनेवाले विद्वानों के हाथों में जमी हुई थी। उन्होने उस राजनीति को जनता के बीच में प्रसारित किया और इसलिए उन्होंने सारे कार्यों को राजनीति के प्रसार में लगा दिया। वे अपने प्रयोग से देश की स्वतंत्रता हासिल करना चाहते थे। उस समय हिन्दुस्तान में राजनीतिक प्रगति से ज्यादा सामाजिक कार्य को महत्व दिया जाता था। एक प्रकार से राजनीति से अधिक सामाजिक सुधार के आंदोलन की ही विशेष प्रकार से भूमिका थी। गांधीजी ने कहा कि जब भारत-वर्ष को स्वतंत्रता मिल जायेगी तो समाज-सुधार का काम अपने आप होने लगेगा। जो और जितना-सा समाज सुधार का काम उन्होंने अपने कार्यक्रम में लिया उसको उन्होंने रचनात्मक कार्य की संज्ञा दी, किन्तु उसकी पृष्ठभूमि तो राजनीतिक ही थी। उन्होंने हिन्दुस्तान के स्वराज्य के लिए अपने प्रयोग आरंभ किये और उन्होंने जहां एक ओर देशी राज्यों को नहीं छूआ वहीं दूसरी ओर समाज सुधार के मामले में भी अग्रसर नहीं हुए। तथापि उनके भारतवर्ष आने से पहले उस वक्त और उसके बाद कुछ अर्से तक समाज-सुधार की ही मुख्य भूमिका थी। हिन्दुस्तान की सभी जातियों ने अपने-अपने ढंग से अपने संगठन बना लिये थे और सामाजिक कार्यों को बल दे रही थीं। वे सारे ही कार्यक्रम प्रगतिशील हों– ऐसा जरूरी नहीं था, बल्कि कई-कई जातियों में तो आगे बढ़ने के बजाए इन संगठनों के द्वारा प्रचलित रूढ़ियों और संस्कारों का समर्थन ही किया जाता था। बाद में जब देश में प्रगतिशीलता की हवा बहने लगी तो उनमें संघर्ष होने लगा था। पर यह मानना होगा कि सनातनी दल का ही सभी सभाओं और संगठनों में अधिक महत्व था। बूढ़े और बुजुर्ग लोग सभी संस्थाओं पर हावी थे और वे हर तरह से जातियों की अग्रगति में बाधक थे। वे संगठन की बात करते थे - थोड़ी-थोड़ी शिक्षा की भी बात करते थे और गांधीजी के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण राजनीति के क्षेत्र में अपने अधिकारों की बात भी करने लगे थे। कलकत्ता उस समय भी सारे मारवाड़ी समाज की एक तरह से राजधानी ही था। यहां का मारवाड़ी एसोसियेशन मारवाड़ी समाज के हितों की रक्षा करने वाली बड़ी संस्था था। किसी जमाने में उसको अंग्रेजी सरकार का सम्बल भी प्राप्त था, जिसका उदाहरण था कि केन्द्रीय विधानसभा में एक प्रतिनिधि भेजने का उसे अधिकार था। जो लोग आज की राजनैतिक इकाइयों - राजस्थान और हरियाणा आदि से यहां आयें और व्यापार-उद्योग में उन्नति की वे ही इन एसोसियेशनों आदि के सर्वेसर्वा थे। जो लोग इनसे बहुत वर्षों पहले यहां आकर बस गये थे, खासतौर से अजीमगंज और जियागंज में, वे एक प्रकार से न पूरे मारवाड़ी थे और न पूरे बंगाली। उनकी भाषा हिन्दी होते हुए भी बंगला से बहुत प्रभावित थी, लेकिन वे सभी ओसवाल थे और अपने धर्म की हर तरह से रक्षा करते थे। विवाह-शादी उनमें या तो आपस में होते थे या राजस्थान के शहरों में। उनके खान-पान पर कोई असर नहीं पड़ा था, पर पहनावा-ओढ़ावा बिल्कुल अलग ढंग का था। ऐसा लगता था कि वे जगत सेठ के घराने के हो। अजीमगंज और जियागंज में तो वे थे ही, पर भागलपुर के पास नाथनगर में भी उनका कुछ अंश रहता था। उन सब लोगों की संख्या काफी थोड़ी थी, परंतु वे मारवाड़ियों से बहुत कम मिलते थे, इसलिए मारवाड़ी समाज में उनका स्थान नगण्य-सा ही था।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि इसे देश में सामाजिक कार्यों की प्रमुखता रहीं थी। मारवाड़ी समाज में सामाजिक विभेदों की शुरूआत सबसे पहले उस समय हुई, जब समाज के पढ़े लिखे दो युवक इन्द्रचन्दजी दुधोड़िया और इन्द्रचन्दजी नाहटा-विलायत यात्रा से १८९० में वापस आये। सनातनी दल ने उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया और उन्हें वापस विलायत लौटना पड़ा। उस समय से पढ़े-लिखें नवयुवकों में जो खलबली मची उसने धीरे-धीरे समाज सुधार का बीच बोया और धीरे-आस्ते 'सुधार दल' का चिन्तन फैलने लगा। फिर भी समाज के संगठनों पर बूढ़े और बुजुर्ग लोग हावी थे और हर प्रकार की प्रगति में बाधा देते रहते थे। सन् १९०९ में श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय के शिलान्यास के समय श्री कालीप्रसादजी खेतान को विलायत भेजने की घोषणा का स्वागत तो हुआ, लेकिन रसोईये को अपने साथ ले जाने के उपरान्त भी जब वे कलकत्ता आये, तो उन्हें जाति

बहिष्कृत कर दिया गया और उन्हें एक प्रकार के प्रायश्चित की पद्धति से गुजरना पड़ा। इस घटना ने भी युवकों के सोचने की प्रक्रिया को अधिक तीव्र किया और उसके बाद विलायत यात्रा का नैषध्य प्रायः समाप्त हो गया, यद्यपि सनातनी दल ने इस स्थिति को पूर्णतः स्वीकार नहीं किया।

धीरे-धीरे सनातनी और सुधारक दलों का मत-पार्थक्य युवकों के अन्य सुधारवादी कदमों को लेकर उभरता रहा, जैसा कि वृद्ध विवाह में दी जानेवाली बाधाएं, छोटी-छोटी लड़कियों के विवाह न करने देने के सुधारवादी दलों के प्रयत्न एवं शेष में सन् १९२६ में नागरमल जी लिल्हा द्वारा किया गया विधवा विवाह एवं रामेश्वर बिड़ला द्वारा अपने से नीची खांप में किया गया विवाह, इस विभेद को एक बड़े रूप में उभार कर लाया। परिणामस्वरूप जमुनालालजी बजाज द्वारा स्थापित की गयी अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा का अधिवेशन जब कलकत्ता में सन् १९२६ में केशरदेव जी नेवटिया के सभापतित्व में हुआ तो नागरमलजी लिल्हा के विधवा-विवाह को लेकर उस अधिवेशन में भयंकर दलदल फैला और समाज के १२ व्यक्तियों को समाज से बहिष्कृत किया गया। दूसरी ओर बिड़ला परिवार का भी कट्टर सनातनी पक्ष के लोगों द्वारा एक प्रकार से सामाजिक बहिष्कार प्रारंभ कर दिया गया। यद्यपि उसके बाद अ.भ. अग्रवाल महासभा कुछ वर्षो तक चली, लेकिन उस अधिवेशन के खुराफातियों ने जो कील ठोंकी, उससे उसकी साख का ह्रास हो गया एवं वह शीघ्र ही बन्द प्रायः हो गई।

फलतः एक ऐसी स्थिति आई जब राजनैतिक या आर्थिक हितों के संरक्षण के विषय में भी समुचित कदम उठाने वाली कोई सशक्त संस्था उस समय नहीं रह गई।

जीवन-मरण का प्रश्न

इसी बीच महात्मा गांधी के आन्दोलन के फलस्वरूप सन् १९३५ का भारत विधेयक आया। उसके सम्बन्ध में ब्रिटिश सरकार ने जो ह्वाइट पेपर प्रकाशित किया था उसमें, जैसा कि स्व. ईश्वरदास जी जालान ने लिखा, नवीन विधान की रूप-रेखा में ऐसा संकेत किया गया था, 'जो देशी राज्यों की प्रजा है उसे ब्रिटिश राज्य की प्रजा के नागरिक अधिकार नहीं दिये जायेंगे।' जब मैंने उसे पढ़ा तो मुझे यह आशंका हुई कि मारवाड़ी समाज के व्यक्ति जो विभिन्न प्रदेशों में बसे हुए हैं उन्हें देशी राज्यों की प्रजा मानकर यदि नागरिक अधिकार नहीं प्राप्त हुए तो ये देश भर में विदेशियों की तरह समझे जायेंगे। ऐसा होने से न तो उनको वो का अधिकार होगा और न कोई नागरिक अधिकार। ऐसी अवस्था में मारवाड़ी समाज की अपार क्षति होगी - मन में ऐसी आशंका जाग्रत हुई कि यदि यह प्रान्तीयता का विष देश में फैल गया तो मारवाड़ी समाज की अवस्था और भी नाजुक हो जायेगी। मैंने इसके सम्बन्ध में स्व. काली प्रसादजी खेतान से बात की और वे मेरी इस बात से सहमत हुए कि इसका संशोधन आवश्यक है– फिर हमने श्री बद्रीदासजी गोयनका से इस सम्बन्ध में बातें की और वे भी हम लोगों के विचारों से सहमत हुए। श्री घनश्याम दास जी बिड़ला से भी मैं मिला और उनका ध्यान भी इस और आकृष्ट किया। स्व. देवी प्रसाद जी खेतान भी वहां मौजूद थे। उन्होंने भी जब उसे पढ़ा तो वे सहमत हुए कि इस संबंध में आवश्यक कार्यवाही की जाये। इसके बाद हम लोगों ने यह निश्चय किया कि अंग्रेजों के एसोसियेशन चेम्बर ऑफ कामर्स और भारतीयों के फेडरेशन ऑफ इंडियन चेम्बर्स आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री के द्वारा भी ब्रिटिश सरकार को यह अधिकार प्रदान करने के लिए लिखवाया जाये। अंग्रेजों के एसोसियेशन चेम्बर ने इसका समर्थन सूचक पत्र सरकार को दिया, परंतु फेडरेशन ऑफ इंडियन चेम्बर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री ने यह प्रश्न उठा दिया कि देशी राज्य यदि ब्रिटिश प्रजा को यह अधिकार दें तभी यह अधिकार देशी राज्यों की प्रजा को ब्रिटिश भारत में दिया जाना संभव हो सकता है।

इसी बीच ब्रिटिश पार्लियामेंट ने एक कमेटी बनाई थी, जिसमें नये संविधान के संबंध में लोगों से विचार-विमर्श किया जा रहा था। हमलोगों ने ऐसा विचार किया कि इस कमेटी के समक्ष अपनी ओर से भी किसी व्यक्ति को भेजना चाहिए। मारवाड़ी एसोसिएशन इस बात के लिए राजी नहीं हुआ, क्योंकि वे लोग विलायत-यात्रा के विरोधी थे। अन्त में हमलोगों ने मारवाड़ी ट्रेड एसोसिएशन की ओर से ब्रिटिश सरकार को पत्र दिया कि वह हम लोगों के प्रतिनिधि को विलायत आने की अनुमति दें और हमलोगों की जो मांग है उसे उपस्थित करने का मौका दें। ब्रिटिश सरकार ने अनुमति दे दी, परंतु कोई ऐसा योग्य व्यक्ति नहीं प्राप्त हो सका, जिसे वहां भेजा जाये। हमलोक चाहते थे कि स्व. देवी प्रसादजी खेतान इसके लिए उपयुक्त होंगे। परंतु इंडियन चेम्बर आफ कामर्स ने इस कमेटी का बायकाट कर रखा था, अतएव उनके लिए वहां जाना संभव नहीं था। अन्त में मैं और श्री रामदेव जी चोखानी बम्बई गये और सर मन्नू भाई मेहता, जो बीकानेर के दीवान थे, उनसे मिले और उनका ध्यान इस ओर आकृष्ट किया और कहा कि वे इस काम को अपने हाथों में लें, परंतु उनकी बातों से हमलोगों को कोई आशाजनक उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। फिर हम लोग पं. मदनमोहनजी मालवीय से मिले। उन्होंने भी ह्वाइट पेपर को पढ़ कर उचित समझा कि इस दिशा में आवश्यक कार्यवाही की जाये। कलकत्ता वापस जाकर हमलोगों ने सर एन.एम. सरकार, जो उस समय के सुप्रसिद्ध बैरिस्टर थे और जो इस काम के लिए विलायत जाने वाले थे, उनसे मिले और उनसे अनुरोध किया कि वे इस विषय को अपने हाथों में लें और ब्रिटिश सरकार से इसे स्वीकृत कराने का प्रयत्न करें। सौभाग्यवश वे राजी हो गये। प्रान्तीयता का विषय तब तक इतना नहीं फैला था। उन्होंने विलायत जाकर भारत के सेक्रेटरी और स्टेट से बातें की और सेक्रेटरी महोदय इस आवश्यक सुधार के लिए राजी हो गये और आवश्यक संशोधन करने का प्रस्ताव करते समय बोले 'मारवाड़ी समाज की कठिनाइयों को दूर करने के लिए यह संशोधन किया जा रहा है।' परंतु संशोधन करते समय उन्होंने यह अधिकार प्रान्तीय सरकारों को दे दिया। जब यह कानून बन गया तब तक अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की भी स्थापना हो चुकी थी। उसने यह प्रयत्न किया कि भारतवर्ष की जो प्रान्तीय सरकारें हैं वे इस अधिकार को प्रदान करें। केवल एक दो राज्यों में कुछ असुविधा हुई और उसे सुधरवाने के लिए सेठ जमनालाल जी बजाज के मार्फत सम्मेलन ने कांग्रेस द्वारा प्रयत्न किया। कांग्रेस की वर्किंग कमिटी ने इसे स्वीकार किया और अन्त में सभी प्रदेशों में यह अधिकार प्राप्त हो गया।

भूली-बिसरी यादें

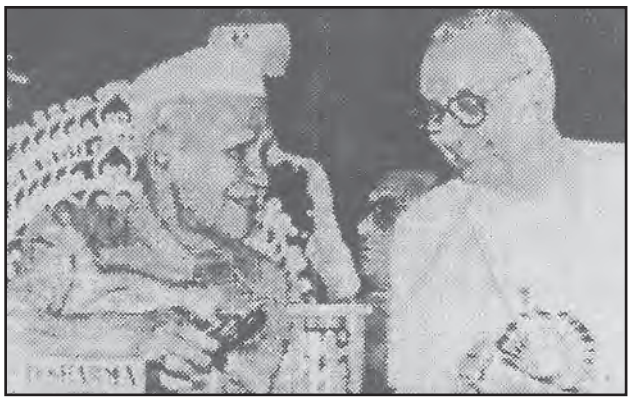

सन् १९९६ में सम्मेलन की हीरक जयंती के उद्घाटन के बाद राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा से समाज की अंतरंग चर्चा में तत्कालीन सभापति श्री नंदकिशोर जालान

असम के मुख्यमंत्री श्री हितेश्वर सैकिया का स्वागत एवं उनसे विचार-विमर्श करते नंदकिशोर जालान

छत्तीसगढ़ सरकार के मंत्री श्री सत्यनारायण शर्मा के साथ नंदकिशोर जालान

सन् १९८६ में राष्ट्रपति ज्ञानीजैल सिंह दीप प्रज्जवलित कर स्वर्ण जयंती समारोह का उद्घाटन करते हुए साथ में सम्मेलन के तत्कालीन सभापति नंदकिशोर जालान

भूली-बिसरी यादें

भूली-बिसरी यादें

भूली-बिसरी यादें

AND PATTON
PRESENT
MAHILASAMMAN SAMAROH

श्री नन्दकिशोरजी जालान के शुभागमन पर
पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन • तिनसुकिया शाखा

७० वाँ स्थापना दिवस समारोह

प्रादेशिक समाचार : आंध्रप्रदेश

आंध्रप्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं विजयवाडा मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा विजयवाडा मे बाढ़ ग्रसित इलाके में लोगो की सेवा करते हुए सदस्यगण।

आंध्रप्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वावधान मे CM बाढ़ राहत कोष के लिए १०००००/- का चैक डी जी पी आंध्रप्रदेश को प्रदान किया।

प्रांतीय समाचार : झारखंड

शिष्टाचार भेंट

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री वर्तमान में उत्कल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल माननीय श्री रघुवर दास जी से जमशेदपुर स्थित उनके आवास पर शिष्टाचार भेंट करते बसंत कुमार मित्तल एवं श्री प्रभाकर अग्रवाल, श्री अभिषेक अग्रवाल, श्री पवन अग्रवाल, श्री संदीप मुरारका धन्यवाद।

प्रांतीय समाचार : उत्कल

कटक शाखा का शपथ ग्रहण समारोह

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, कटक शाखा का वर्ष २०२४-२६ के लिए शपथ ग्रहण समारोह दिनांक १५.९.२४ को कटक स्थित श्याम मंदिर के प्रागण में संपन्न हुआ इसकी अध्यक्षता निवर्तमान अध्यक्ष श्री दिनेश जोशी ने की, मंच पर प्रांतीय अध्यक्ष श्री दिनेश अग्रवाल, मुख्य अतिथि, प्रांतीय सलाहकार श्री जितेंद्र गुप्ता मुख्य वक्ता, कटक के मेयर श्री सुभाष सिंह तथा संगठन उपाध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल जोनल उपाध्यक्ष श्री सुरेश कमानी सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री दिनेश अग्रवाल ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री पवन जी जाजोदिया को पद की शपथ दिलाई तथा संगठन उपाध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल ने सचिव मनोज दुग्गल तथा पूरी कार्यकारिणी को शपथ दिलाई, सभागार में ३०० से अधिक सदस्यों ने अपनी उपस्थित दर्ज करायी, तथा ५० से अधिक नए सदस्यों ने सम्मेलन की सदस्यता ली। श्री रमेश चौधरी एवं श्री पवन जाजोदिया नए विशिष्ट संरक्षक सदस्य बने।

भवानीपटना जोन की बैठक संपन्न हुई

भवानीपटना जोन की बैठक १ सितम्बर, २०२४ को आशारामबापु आश्रम, जयपटना में आयोजित की गई। इस बैठक में जोन की ११ शाखाओं से २०० प्रतिभागियों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री दिनेश कुमार अग्रवाल, प्रांतीय अध्यक्ष ने शिरकत की, एवं श्री मधुसूदन शर्मा, प्रांतीय संगठन उपाध्यक्ष ने वक्ता के रूप में अपने विचार साझा किए। यूपीएमएस प्रदेश महासचिव डॉ. सुभाष चंद्र अग्रवाल ने प्रदेश की विस्तृत विवरण दी। जोन के उपाध्यक्ष श्री दीपक गुप्ता ने जोन की विवरण दी। जोन सचिव श्री किशोर अग्रवाल, एवं कालाहांडी जिला सचिव श्री लालचंद चौधरी, श्री सत्यनारायण अग्रवाल, जयपटना शाखा अध्यक्ष श्रीमति अनिता अग्रवाल भी मंचासीन थे।

बैठक की शुरुआत श्री छोटे लाल अग्रवाल द्वारा गणेश बंदना के साथ हुई। इसके बाद कालाहांडी डिस्ट्रिक्ट कमिटी की जिला अध्यक्ष डॉक्टर सुभाष चन्द अग्रवाल द्वारा घोषणा एवं शपथ पाठ मुख्य अतिथि प्रांतीय अध्यक्ष द्वारा की गई। जयपटना महिला मंडल, युवा मंच की गरिमामय उपस्थिति और कार्यक्रम की व्यवस्था अति प्रशंसनीय रही।

प्रांतीय अध्यक्ष ने विभिन्न विषयों पर चर्चा की और सदस्यता बढ़ाने, शाखाओं का विस्तार करने और बैठकों को बेहतर बनाने, सामाजिक पंचायत, सामूहिक कार्यक्रम, समाज सुधार पर केंद्रित चर्चा हुई। प्रांतीय संगठन उपाध्यक्ष श्री मधु सूदन शर्मा ने भी संगठन पर जोर दिया। कार्यक्रम में समाज के प्रतिभा एवं गौरव को सम्मान किया गया। भवानीपटना में प्रांतीय स्तरीय MSME कार्यशाला कालाहांडी जिला के नेतृत्व में नवंबर माह में करने का निर्णय लिया गया। २० नए सदस्य जोड़े गए। सभा में श्री शंकर अग्रवाल, घासी राम अग्रवाल, जगमोहन जी, मुरारी बाबू, भवानीपटना महिला मंडल एवं अन्य की उपस्थिति थी। सभा का समापन राष्ट्रगान और यूपीएमएस जयपटना शाखा सचिव श्री श्याम सुंदर अग्रवाल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

SHRI VISHUDHANAND SARASWATI MARWARI HOSPITAL

118, RAJA RAM MOHAN ROY SARANI,KOLKATA- 700009
WESTBENGAL , INDIA

PHONE : 3521-1449/1500 Mob: 9230985245

EMAIL : svsmh11@gmail.com

WEB : www.svsmarwarihospital.com

FACILITIES

DIAGNOSTIC SERVICES

- Digital X-Ray
  (500 MA Machine)
  (200 MA Machine)
  (Portable Machine)
- Ultrasound Sonography
- Pathology (Lab)
- Endoscopy
- Laprosocopy
- Colour Doppler
- E.C.G

INDOOR DEPARTMENT

- Intensive Therapeutic Unit
- A/C Delux Cabin
- Major / Minor O.T
- Male / Female Surgical Unit
- Male / Female Medical Ward
- Maternity Ward
- General Cabin
- Special Cabin

OPD (RS.100/-ONLY)

- Dental OPD
- Eye OPD
- Skin OPD
- Neurology OPD
- Chest OPD
- Puva OPD

With Best Compliments From:-

GOVIND STEEL CO. LTD

शाखा समाचार : चाईबासा

डेंगू व मलेरिया से बचाव के लिए चाईबासा शाखा द्वारा पहल

मारवाड़ी सम्मेलन चाईबासा शाखा द्वारा शहर में डेंगू एवं मलेरिया के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए रुंगटा टीएमटी बार एण्ड रोड, रुंगटा माइंस लिमिटेड के सहयोग से शहर में ब्लीचिंग पावडर एवं फोग मशीन द्वारा दवा का छिड़काव करवाया जा रहा है शाखा अध्यक्ष रमेश खिरवाल ने बताया कि रुंगटा समूह के श्री मुकुंद रुंगटा जी से शहर के इस समस्या की बात रखने पर उन्होंने तुरंत इस कार्य को प्रारंभ करने की स्वीकृति प्रदान की तत्काल से मारवाड़ी सम्मेलन चाईबासा ब्लीचिंग पावडर व फोगींग मशीन द्वारा दवा का छिड़काव प्रारंभ किया सम्मेलन ने वार्ड के अनुसार व शहर के स्वास्थ्य केंद्र, पर छिड़काव कर रही हैं अब तक सदर बाज़ार आमला टोला श्मशान काली मन्दिर महादेव कॉलोनी मेरी टोला टुंगरी, न्यू कालोनी बान टोला गाड़ी खाना में किया गया है साथ ही प्रत्येक दिन विभिन्न वार्डों में क्रम वार ब्लीचिंग पावडर व फोगिंग किया जाएगा।

पुर्व नगर परिषद अध्यक्ष गीता बालमुचु द्वारा हरी झण्डी दिखाकर शुभारंभ किया कार्यक्रम में मुकुंद रुंगटा, शाखा अध्यक्ष रमेश खिरवाल, अनिल मुरारका, झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष राजकुमार मुँधड़ा, अशोक विजयवर्गी, पवन गर्ग, धीरज अग्रवाल, अजय बजाज, राजकुमार मुंधड़ा, अजय बजाज, अनूप केडिया, पवन चांडक आदि उपस्थित रहे।

गणेश चतुर्थी चौक चांदनी की बधाई!

चौक च्यानणी भादूड़ो,
दे दे माई लाडूड़ो।
आधौ लाडू बावै कौनी,
सा'पतौ पाँती आवै कौनी।

सुण सुण ऐ गीगा की माँ'य,
थारौ गीगौ पढ़बा जाय।
पढ़बा की पढ़ा ईइ दै
छोरा नै मिठाई दै।

आळो ढूंढ दिवाळो ढूंढ,
बड़ी बहु की पैई ढूंढ।
ढूंढ ढूँढा कर बारै आ,
जोशी जी कै तिलक लगा,

लाडूड़ा मै पान सुपारी,
जोशी जी रै हुई दिवाळी।
जौशण जी नै तिलियाँ दै,
छोरा नै गुडधानी दै।
ऊपर ठंडो पाणी दै,

एक विद्या खोटी,
दूजी पकड़ी, चोटी।
चोटी बोलै धम धम,
विद्या आवै झम झम।

प्रादेशिक समाचार : छत्तीसगढ़

शिक्षक दिवस के उपलक्ष में ५ सितंबर २०२४ को छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन प्रांत के रायपुर शाखा की ओर से रायपुर के मठपुरैना स्थित सरस्वती शिशु मंदिर (भारत माता प्रकल्प) में शिक्षक दिवस मनाया गया। जिसमे विद्यालय के संयोजक देवेंद्र अग्रवाल जी, छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पुरषोत्तम सिंघानिया जी, कोषाध्यक्ष सुरेश चौधरी जी, उपाध्यक्ष सुनील लाठ जी, रायपुर शाखा के अध्यक्ष संजय शर्मा जी, सचिव प्रवीण सिंघानिया जी, कोषाध्यक्ष अशोक जैन जी, सह सचिव राकेश शर्मा जी, विवेक अग्रवाल जी, तथा रायपुर शाखा के कार्यकारिणी सदस्य जोगी डागा जी, नवीन भूषणिया जी, प्रह्लाद चौबे जी, सुमित अग्रवाल जी प्रमुख उपस्थित थे। उक्त कार्यक्रम में सरस्वती शिशु मंदिर मठपुरैना के २२ शिक्षकों/शिक्षिकाओं को सम्मान किया गया, शिक्षिकाओं को एक एक साड़ी तथा सम्मान फलक एवं शिक्षकों को एक एक शॉल तथा सम्मान फलक से सम्मानित किया गया।

प्रांतीय समाचार : पश्चिम बंग

बांकुड़ा शाखा द्वारा स्वतंत्रता दिवस समारोह

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन बांकुड़ा शाखा द्वारा स्वतंत्रता दिवस प्रोग्राम २०२४ हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बड़ी धूमधाम से मनाया गया कार्यक्रम में समाज के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की देशभक्ति के गीतों पर नृत्य के द्वारा प्रस्तुति दी गई एवं संस्था ने बांकुड़ा टाउन गर्ल्स हाई स्कूल की ५० छात्राओं को उपहार प्रदान कर दिवस को हर्षोल्लाह के साथ मनाया। कार्यक्रम में सचिव मनोज बाजोरिया, सह सचिव विक्रम गोयनका, संगठन मंत्री राजीव खंडेलवाल एवं सांस्कृतिक मंत्री वर्षा रावत की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

बांकुड़ा शाखा के श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा नए अध्यक्ष

बांकुड़ा शाखा के अध्यक्ष के रूप में दिनांक ०७.०४.२०२४ को राधा भवन बांकुड़ा धर्मशाला में शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नन्द किशोर अग्रवाल और राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री पवन जालान उपस्थित हुए। प्रदेश अध्यक्ष श्री नन्द किशोर अग्रवाल ने श्री नरेन्द्र शर्मा को पगड़ी व शॉल ओढ़ाकर उन्हें बांकुड़ा शाखा के नए अध्यक्ष के रूप में शपथ दिलवाई।

सभागार में उपस्थित सभी व्यक्तियों को समाज कि होनहार बच्चियों - रेबा खण्डेलवाल एवं नन्वी गोएनका द्वारा पुष्प भेंट के साथ तिलक लगाकर मारवाड़ी परंपरा से सम्मानित किया गया। जाने माने समाज सेवी बाकुड़ा के श्रद्धेय श्री बिष्णु बाजोरिया जी, बांकुड़ा शाखा के गठन का स्वप्न देखने वाले और स्वप्न को साकार करने वाले वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष श्री नंदकिशोर जी अग्रवाल, अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त महासचिव श्री पवन जी जालान वर्तमान प्रदेश के सह उपाध्यक्ष तथा बांकुड़ा शाखा के पूर्व अध्यक्ष श्री दिनेश जी सराफ, बांकुड़ा शाखा के चुनाव को सुचारू रूप से संपन्न कराने वाले श्री शंभू नाथ जी सराफ एवं श्री संतोष जी गोयनका, प्रांतीय सह संगठन मंत्री श्री उमेश जी खण्डेलवाल, पुरुलिया शाखा के अध्यक्ष श्री रामलाल जी टांटीया एवं उनके साथ पधारे पुरुलिया के अन्य विशिष्ट जन, इस मोके पर बांकुड़ा के पुर्व अध्यक्ष तथा वर्तमान प्रांतीय सह अध्यक्ष श्री दिनेश जी सराफ ने अपने दो साल के कार्यकाल को सांझा किया और आने वाले दो सालों के लिए नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री नरेंद्र शर्मा जी को बधाई दी। आदरणीय श्री विष्णु बाजोरिया जी ने कहा संचार सहयोग और सलाह द्वारा ही किसी संस्था को अच्छी तरह चलाया जा सकता है और पूर्व अध्यक्ष श्री दिनेश सराफ जी को उनके गत दो साल के कार्यकाल की बधाई दी तथा नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री नरेंद्र शर्मा जी को आने वाले दो सालों के लिए आशीर्वाद दिया।

समग्र आयोजन का सुचारू रूप और बड़े ही निपुण ढंग से परिचालन बांकुड़ा शाखा की सांस्कृतिक प्रमुख श्रीमती वर्षा रावत जी ने किया। संस्था के सचिव के रूप में श्री मनोज बाजोरिया एवं कोषाध्यक्ष के रूप में श्री राकेश शर्मा ने कार्यभार संभाला। श्री पवन जी जालान ने कोलकाता शाखा किस रूप से शिक्षा और स्वास्थ्य पर काम कर रही है उसकी विस्तार पूर्वक जानकारी दी।

प्रदेश अध्यक्ष आदरणीय श्री नंदकिशोर जी ने अपनी मारवाड़ी भाषा तथा नीति और नैतिकता किस तरह से ठोस बनी रहे उस

विषय पर आलोकपात किया। बांकुड़ा शाखा के दो निर्वाचन आयुक्त श्री शंभु नाथ जी शराफ तथा श्री संतोष जी गोयनका की निर्वाचन कार्य को सुचारु रूप से संपन्न कराने के लिए उनका अभिवादन किया। निर्वाचित अध्यक्ष श्री नरेंद्र शर्मा ने मारवाड़ी में दिए गए वक्तव्य में समाज में कमजोर वर्ग के बच्चे बच्चियों के उच्च शिक्षा में सामाजिक संस्थाओं की सक्रिय भूमिका की संकल्प को प्रमुखता दी, सर्व समाज को साथ लेकर चलने की संकल्पता को प्रमुखता दी।

शिल्पांचल शाखा का शपथ ग्रहण समारोह

'दक्षिण बंग के प्रांतीय प्रभारी श्री दिनेश सराफ एवं उमेश खण्डेलवाल' के सक्रिय प्रयास से दिनांक: १२.०९.२०२४, (बृहस्पतिवार) 'पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रदेशाध्यक्ष द्वारा आसनसोल शिल्पांचल शाखा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन श्री श्याम मंदिर, राहा लेन आसनसोल के सभागार में किया गया।'

नयी कार्यकारिणी का गठन, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के 'प्रांतीय अध्यक्ष श्री नंदकिशोर अग्रवाल, प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री दिनेश सराफ, प्रांतीय संगठन मंत्री उमेश खंडेलवाल एवं प्रांतीय पदाधिकारी श्री पंकज भालोटिया के उपस्थिति में आसनसोल शिल्पांचल शाखा के पुनर्निर्वाचित अध्यक्ष श्री नरेश अग्रवाल जी को शपथ वाक्य पाठ के माध्यम से करवाया गया।'

शाखा के सदस्यों के मौजूदगी में 'श्री अनिल मोहनका एवं श्री आनंद पारेख जी ने सचिव एवं कोषाध्यक्ष का दायित्वभार ग्रहण किया।' साथ ही नरेश जी अग्रवाल के प्रस्ताव से शाखा की नयी कार्यकारिणी का गठन भी किया गया।

सभा में मौजूद प्रांतीय पदाधिकारी एवं शाखा के सभी सदस्यों ने अपने समाज के विभिन्न लोगों तक पहुंचकर उन्हें एकजुट करने के विचार पर सहमति प्रदान की। इसी शपथ ग्रहण समारोह में आसनसोल शाखा ने अपने प्रदेश अध्यक्ष एवं प्रदेश के अन्य कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा जिला के प्रतिभावान कृति छात्र-छात्राओं को शिक्षा में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए ट्रॉफी एवं प्रशंसा पत्र प्रदान करवाते हुए **'प्रतिभा सम्मान'** से सम्मानित किया गया।

बच्चों को वितरित किया पढ़ाई लिखाई का सामान

नाथू माल साघवानी स्थित सरस्वती शिशु मंदिर एवं दामोदर नगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज कानपुर में मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा संस्कारशाला के अंतर्गत बस्ती के ऐसे बच्चों को जो अत्यधिक जरूरतमंद और होनहार है उनको निशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है मुख्य अतिथि के तौर पर यहां भाजपा जिलाअध्यक्ष शिवराम सिंह उपस्थित रहे। और अपने हाथों से बच्चों को सामग्री वितरित की, अध्यक्ष ओमप्रकाश अग्रवाल ने बताया कई वर्षों से हम लोगो द्वारा संस्कारशाला में बच्चों को स्कूल बैग, यूनिफ़ार्म, लंच बॉक्स, पानी की बोतल एवं स्टेशनरी की सामग्री वितरित की जा रही है इस बार भी हम लोग संस्कारशाला के बच्चों को यह सामग्री वितरित कर रहे हैं।

महामंत्री प्रदीप केडिया वरिष्ठ उपाध्यक्ष बालकृष्ण देवड़ा कोषाध्यक्ष महेंद्र लड़िया ने बताया शिक्षा देना परम धर्म है अगर कोई भी छात्र पढ़कर अपने जीवन में कुछ बनकर देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाता है यह हम लोगों के लिए गर्व की बात होगी। प्रधानाचार्य रत्नेश अवस्थी की देखरेख में कार्यक्रम हुआ, ३०० बच्चों को स्टेशनरी का सामान दिया गया, फल का वितरण भी किया गया, महिला अध्यक्ष आशा केडिया, ऋतु लड़िया एवं यहां सभी सम्मानित लोगों में उपाध्यक्ष आदित्य पोद्दार, संरक्षक कैलाश चंद्र अग्रवाल, मारवाड़ी समाज के अध्यक्ष सुनील मुरारका, रतन चूड़ीवाला, विपिन, आनंद मोहन, अशोक ढणावत, राजेश महेश्वरी, अनिल जैन, विनोद सांगल, शिवानी सांगल, शशि मुरारका, स्नेहलता, संगीता अग्रवाल, प्रमोद गुप्ता ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया बच्चों को आशीर्वचन कहे।

उपलब्धियाँ

हमारे पूर्व राष्ट्रीय उपाध्य श्री विजय किशोर पुरिया को टाइम्स बिजनेस अवार्ड २०२४ से नवाजा गया है। हार्दिक बधाई!

समाज गौरव श्री अनुभव अग्रवाल उम्र ११ वर्ष, संबलपुर निवासी श्री रीना सर्वेश अग्रवाल के पुत्र ऑल इंडिया ओपन कराटे चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। हार्दिक बधाई!

गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा 'ज्ञान ज्योत सम्मान समारोह' सम्पन्न

प्रमुख रूप में IAS, IRS, IPS, IITS, MBA, डॉक्टर (MBBS, MD), CA, CS, LLB, PHD, कला, समाज सेवा के क्षेत्र से वर्ष २०२२-२०२४ में उपाधि प्राप्त करने वाले कुल २५७ बच्चों ने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया एवं अपने अभिभावको के साथ सम्मान स्थल पर उपस्थित हुए, जिनको अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों एवं सूरत नगर के गणमान्य लोगों द्वारा मेडल एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमारजी लोहिया, महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रंजीत कुमार जी जालान, श्री मधुसूदन जी सिकरिया, श्री राजकुमार जी केडिया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष जी सर्राफ, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री द्वय श्री पवन कुमार जालान, श्री संजय गोयनका, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, श्री केदारनाथ गुप्ता, श्रीमती सुषमा जी अग्रवाल एवं अन्य अखिल भारतीय समिति के पदाधिकारीगण एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की देश की विभिन्न शाखाओं से पधारे पदाधिकारी।

गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष श्री जयप्रकाश जी अग्रवाल (रचना ग्रुप), गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री गोकुल जी बजाज उपाध्यक्ष श्री विनोद जी अग्रवाल (लक्ष्मीहरि), श्री श्री राम जी बिदावका, श्री भवानी शंकर जी जालान, श्री गणपत जी भंसाली, प्रांतीय महामंत्री श्री राहुल अग्रवाल एवं श्री विजय अग्रवाल एवं गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन सूरत इकाई के अध्यक्ष श्री सुशील जी अग्रवाल महामंत्री श्री हेमंत गर्ग, श्री योगेश जी रामसिसरिया, श्री रमेश जी मोदी, श्री सुमीत जी बंसल, श्री राजा जी अग्रवाल, श्री अशोक अग्रवाल (राधे राधे), श्री मुकेश गोयल श्री गजेंद्र जी अग्रवाल, आदि लोगों ने बच्चो को सम्मानित किया एवं उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष श्री जय प्रकाश जी अग्रवाल (रचना ग्रुप) द्वारा की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं शिल्प मैत्री डांस एकैडमी के बच्चों द्वारा सूर्यांशी गर्ग के निर्देशन में श्री गणेश वंदना एवं 'राजस्थान का इतिहास एवं मारवाड़ियो की प्रगति' थीम पर सुंदर डांस प्रस्तुत किया गया।

समाज सेवा सम्मान श्री संजय जी सरावगी (लक्ष्मीपति ग्रुप) श्री गजानन जी कंसल को प्रदान किया गया।

इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में कई विशिष्ट वक्ताओं एवं सम्मेलन के पदाधिकारियों ने अपने विचार रखे एवं बच्चों को जीवन में आगे बढ़ाने के मंत्र दिए जिससे बच्चों का विशेष रूप से बहुत उत्साह वर्धन हुआ।

सभी अभिभावक एवं छात्र-छात्राएं सम्मानित होकर बहुत अनुग्रहित रहे एवं इस कार्यक्रम के लिए गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का धन्यवाद किया।

प्रतीक अग्रवाल के दोनों गुर्दों का दान

डॉ. अग्रवाल ने किया था अगंदान के प्रति प्रेरित

न्युटाउन निवासी ३३ वर्षीय प्रतीक अग्रवाल (धनावत) बीते दिनों अचानक हृदयाघात से पीड़ित हो गया। चिकित्सकों की तमाम कोशिशों के बावजूद जब ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका बच पाना मुश्किल है तो जितेंद्र मोहन एवेन्यू स्थित रिकवरी नर्सिंग होम के निदेशक डॉ. सुशील कुमार अग्रवाल ने प्रतीक के माता-पिता को यह समझाने का प्रयास किया कि उनके बेटे को नहीं बचाया जा सकता, लेकिन अगर आप लोगों की सहमति हो तो उसके सुरक्षित अंगों को जरुरतमंद मरीजों को दान कर प्रतीक को अमर अवश्य बनाया जा सकता। डॉ. अग्रवाल की बात प्रतीक के परिजनों के गले उतर गई और वे उसके सुरक्षित अंगों को दान करने के लिए सहर्ष राजी हो गए। इस तरह दम तोड़ने से पहले प्रतीक ने अपने गुर्दे के रूप में दो मरीजों में दम भर दिया, जो आज पूरी तरह स्वस्थ हैं।

इस बाबत मृतका की मां ललिता देवी ने कहा कि जवान बेटा खोने का गम ताउम्र रहेगा, लेकिन इस बात पर जरा संतोष है कि गुर्दे के रूप में मेरा बेटा दो लोगों में जीवित है। प्रतीक के पिता प्रह्लाद राय अग्रवाल ने कहा कि अंगदान के प्रति हमें सचेत होना चाहिए।

मायड़ भासा रै बिन्यां क्यारो राजस्थान

डॉ. दिनेश कुमार जांगिड 'सारेग'

हमारे पूर्वजों को, हमारे मनीषियों को और हमारे महान साहित्यकारों को याद रखना हमारा फर्ज भी है और धर्म भी। जो कृतज्ञ समाज अपने ऐसे पूर्वजों को याद रखता, वह अपनी ऐतिहासिक परंपरा और संस्कृति को अक्षुण बनाये रख सकता है। हमारे में से ही कुछ ऐसे बिरले इंसान भी होते हैं जो ऐसे महान लोगों की स्मृति को संजोकर रखने का कार्य करते हैं और उनके सद्कर्मों को औरों तक तथा आने वाली पीढ़ियों तक भी पहुँचाते हैं। ऐसे ही एक इंसान है सुजानगढ़ के साहित्यधर्मी एवं समाजसेवी व्यक्ति डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा।

न केवल राजस्थान के बल्कि देश के शीर्ष साहित्यकारों में नाम है पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया का। उनका साहित्य सृजन अनूठा है। उनके ऊपर 'भारतीय साहित्य के निर्माता' श्रृंखला के तहत डॉ. कच्छावा ने विनिबंध लिखा है जिसे साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है।

उनका एक गीत है 'धरती धोरां री'। उस गीत को सुनकर प्रसिद्ध विद्वान बालकवि बैरागी ने तो यहां तक कह दिया था कि अगर राजस्थान कोई देश होता तो यह उसका राज्य गीत होता।

मातृभाषा के प्रति भी सेठियाजी का प्रेम असीम था। मातृभाषा के वर्तमान दशा पर भी वे व्यथित थे-

खाली धड़ री कद हुवै, चैरे बिन्या पिछाण
मायड़ भासा रे बिना, क्यांरों राजस्थान।।

जैसे बिना सिर के खाली धड़ वाले व्यक्ति की पहचान नहीं है वैसे ही बिना राजस्थानी भाषा के राजस्थान की पहचान नहीं है। राजस्थानी की संवैधानिक मान्यता के लिये भी उन्होंने अथक प्रयास किये।

उनके लिखे गीत अमर है। उनका लिखा पीथल और पाथल गीत तो अमर है। महाराणा प्रताप की वीरता और राजस्थानी गौरव का ऐसा बखान अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। बीकानेर के शठौड़ पृथ्वीराज का खत पढ़ कर राणा जो जवाब देते है वह अनुपम है - उदात्त है - ऐतिहासिक है - राजस्थानी आन यान शान का प्रतीक है-

हूँ भूख मरूं हूँ प्यास मरूं
मेवाड़ धरा आजाद रवै
हूँ घोर उजाड़ां में भटकू
पण मन में मां री याद रवै,
हूँ रजपूतण रो जायो हूँ रजपूती करज चुकाऊंला,
ओ सीस पड़ै पण पाघ नही दिल्ली रो मान झुकाऊंला,
पीथळ के खिमता बादळ री
जो रोकै सूर उगाळी नै,
सिंघां री हाथळ सह लेवै
बा कुख मिली कद स्याळी नै?
धरती रो पाणी पिवै इसी
चातग री चूंच बणी कोनी,
कूकर री जूणां जिवै इसी
हाथी री बात सुणी कोनी,
आं हाथां में तलवार थकां
कुण रांड़ कवै है रजपूती?
म्यानां रै बदळै बैयां री
छात्याँ में रैवैली सूती,
मेवाड़ धधकतो अंगारो
आंध्यां में चमचम चमकै लो,
कड़खै री उठती तानां पर
पग पग पर खांडो खड़कैलो।

उनका एक गीत है 'धरी धोरां री'। उस गीत को सुनकर प्रसिद्ध विद्वान बालकवि बैरागी ने तो यहां तक कह दिया था कि अगर राजस्थान कोई देश होता तो यह उसका राज्य गीत होता।

सेठिया जी के साहित्य में आम आदमी के लिये पीड़ा है। उन्होंने न केवल इस पीड़ा को लिखा बल्कि शोषित वर्ग के लिये खुद हमेशा संघर्ष भी किया। उनकी कविता **'कुण जमीन रो धणी'** इस संघर्ष का एक प्रतिनिधि हस्ताक्षर है। उन्होंने आम आदमी को दूब का प्रतीक बनाकर भी लिखा है कि किस प्रकार शोषक वर्ग कभी भी आम आदमी को खुशहाल नहीं होते देखना चाहता है –

कवै तावड़ो रीसां बळतो आ तो घणी इतरगी,
दूबड़ी, कोसां कोस पसरगी।

उन्होंने राजस्थानी लोक-संस्कृति के हरेक पहलू पर लिखा है। हिंदी में भी और राजस्थानी में भी। अपने गीतों में सदैव उन्होंने जनमानस को प्रेरित किया है। वे कहते हैं कि सूरज वही है जो रात की छाती फाड़ के निकलेगा–

मन रा लाडू खार कदेई,
सुण्यो न कोई धाप्यो
उग्यो हथेळी रूंख कणाई,
देख्यो नहीं फळाप्यो,
सूरज बो ही जको रात री
छाती फाड़ निकळसी!
बटाऊ, चाल्यां मजलां मिलसी।

सेठिया ने दोहे भी लिखे, सोरठे भी लिखे और अर्थपूर्ण कवितायें भी लिखी। उनके गीत अमर है। उन्होंने खुद कहा था–

बुझती धुणी देह री, अब हुए परतीत
पण आभे में गूंजता, रैहसी म्हारा गीत।

उनके गीत आज भी आभे में गूंज रहे हैं। मेरा यह विशेष आग्रह है कि राजस्थानी प्रेमियों को तो यह पुस्तक अवश्य ही पढ़नी चाहिये। यह पुस्तक- भारतीय साहित्य रा निर्माता-कन्हैयालाल सेठिया, लेखक-संपादक- डॉ. घनश्याम नाथ कच्छाया, प्रकाशक- साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ- एक सौ चौबीस रूपये कीमत पचास रूपये संग्रहणीय है। यह सभी साहित्य प्रेमियों के पास होनी चाहिए। इस पुस्तक को पढ़कर सेठिया जी के बारे में बहुत कुछ समझा जा सकता है।

उनकी १०५ वीं जन्म जयंती पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। प्रणाम।

With best Compliments from:

SNJ SYNTHETICS LTD.

(MANUFACTURERS OF PET PREFORMS AND BOTTLES FOR WATER, FOOD, PHARMA, CARBONATED SOFT DRINKS, HOT FILL BEVERAGES, LIQUOR ETC.)

Works:
149A, Sri Venkateshwara Co-Operative Industrial Estate, IDA Bollaram,
Patancheru Taluk, Sanga Reddy District, Hyderabad,
Telangana, India - 502325
Contact: +91-8458-280010, +91-93966 22575
E-mail: office1@snjindia.in, Website: www.snjindia.in

SNS STARCH LTD.

(MANUFACTURERS OF CORN STARCH AND DERIVATES)

Works:
Survey Nos.379/AA, 391/A & 393/A Kondair Village,
Itikyal Mandal Jogulamba Gadwal Dist., Telangana,
India – 509 125
Contact: +91-8458-280010, +91-93966 22575
E-mail: office@snsstarcindia.com , Website: www.snsstarchindia.com

With best Compliments from:

VINAR

VINAR SYSTEMS PVT. LTD.

Registered Office & Head Office
9C, LORD SINHA ROAD
KOLKATA- 700 071
PHONE : 2282-3661 / 3662

E-mail :-

Unit Handling Division : vinar_uhd@vinar.in

Storage Solution Division : vinar_vsa@vinar.in

Bulk Material Handling Division : vinar_mhp@vinar.in

Web Site : www.vinar.co.in
Leading Manufacturers of Unit Handling, Bulk Material Handling Equipment and Storage Solutions

With best Compliments from:

BHANIRAM SUREKA
Chairman

ROADWINGS INTERNATIONAL

8, CAMAC STREET, 12TH FLOOR
KOLKATA – 700017
MOBILE – 9331113332
Email : roadwingsinternational@gmail.com

COLORS
BY RUPA
Follow Us: @LiveColors
#1001
#1002
SCAN & EXPLORE
pep collection
AVAILABLE COLOURS
pep up your inner self
NEWLY LAUNCHED
Newborn & Infant Wear
Peek a boo
AGE 0-12 Months
Toll-Free No.: 1800 1235 001
Shop @ rupaonlinestore.com | livecolors.in | amazon.in

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2024-2026
Date of Publication - 21st September, 2024
RNI Regd. No. 2866/1968

www.genus.in

Genus
energizing lives

Making society
smarter, more sustainable and liveable
with our End-to-End Smart Metering,
Power-Back & Solar Solutions

SPL-3, RIICO Industrial Area, Sitapura, Tonk Road, Jaipur-302022,
(Raj.), INDIA T. +91-141-7102400/500
metering_exports@genus.in, metering@genus.in

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com